अन्तराशब्दशक्ति

संयुक्तांक जून-जुलाई-2018

मासिक वेब पत्रिका

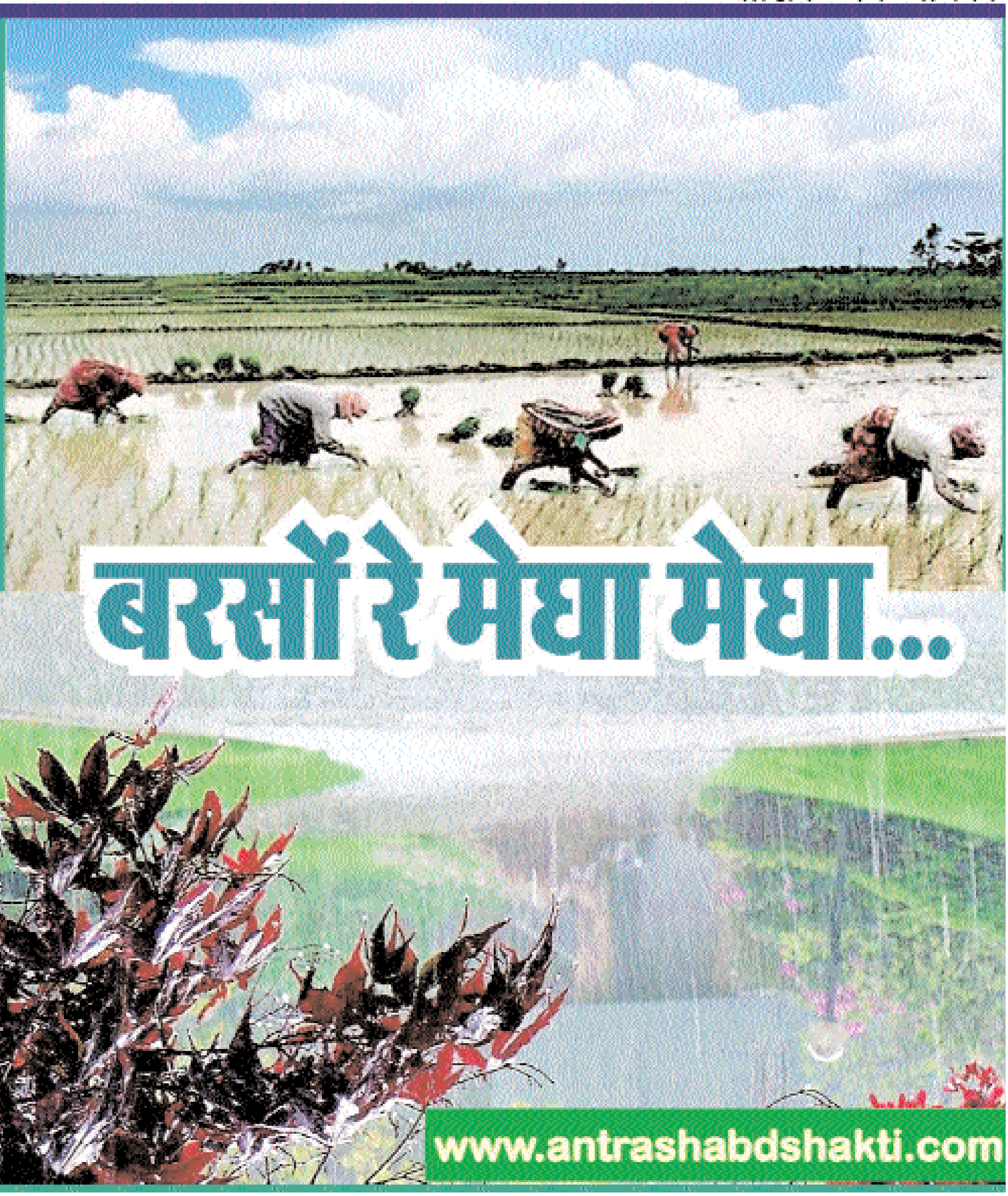

रचनाकारों के लिए सुनहरा अवसर

आदरणीय भाषासारथी,

सादर प्रणाम,

क्या आप मौलिक रुप से हिन्दी में कुछ लेखन करते हैं ? यदि करते हैं तो स्वागत है आपके शब्द शिल्प का।

आइए, हिन्दी भाषा के प्रचार हेतु कार्यरत बेहद क्रियाशील संस्था मातृभाषा उन्नयन संस्थान व हिन्दीग्राम का अंग लोकप्रिय अन्तरताना (वेब पोर्टल) मातृभाषा डॉट कॉम से शीघ्रता से जुड़िए 'मातृभाषा' साहित्य के संप्रेषण के लिए उपलब्ध अनूठा मंच है। साहित्य के इस ऑनलाइन मंच में सभी नवोदित व स्थापित लेखकों का स्वागत है। यदि आप कहानी, लेख, लघुकथा, उपन्यास, नाटक, संस्मरण, निबन्ध, व्यंग्य, डायरी, कविता, आत्मकथा, आलोचना, गजल, समालोचना, मुक्तक, नज्म, गीत या अन्य किसी भी विधा का सिर्फ हिन्दी भाषा में मौलिक लेखन करते हैं तो पोर्टल पर प्रकाशन हेतु हमें उपलब्ध करा सकते हैं। हमारा प्रयास एक मंच पर हिन्दी भाषा के श्रेष्ठ लेखन को जनमानस के लिए उपलब्ध कराना है। हिन्दी साहित्य का प्रचार-प्रसार और एक स्थान पर सभी महत्वपूर्ण विषयों पर सामग्री संकलन हमारा मूल उद्देश्य है, आपकी सहमति मिलने पर इस वैचारिक महाकुंभ में आपके मौलिक लेखन को प्रकाशित कर हम गौरवान्वित महसूस करेंगे 'मातृभाषा' में संकलन के लिए आपकी मौलिक हिन्दी रचनाएँ आमंत्रित हैं।

आपका नवीन लेखन इस अणुडाक (ईमेल) matrubhashaa@gmail.com पर भेजने का कष्ट करें।

साथ ही प्रत्येक सप्ताह के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार (आलेख व कविता दोनों विधा में) को प्रति सप्ताह नगद राशि या भेंट से सम्मानित भी किया जाएगा। सप्ताह के श्रेष्ठ रचनाकार का चयन, समिति द्वारा रचना की गुणवत्ता, वर्तनी दोष रहित, ज्यादा से ज्यादा लोगों द्वारा देखी गई होने पर, पटल पर दृश्य संख्या अधिक होने के तथा रचना मातृभाषा.कॉम के अतिरिक्त कहीं और न छपी होगी इन मापदण्डों के आधार पर प्रति सप्ताह किया जाएगा।

जानकारी केवल निम्न बिन्दुओं में ही प्रेषित करें

साहित्यकार के परिचय का प्रारुप

नाम-	प्रकाशन-
साहित्यिक उपनाम-	सम्मान-
जन्मतिथि	ब्लॉग-
वर्तमान पता (शहर, जिला, राज्य)	अन्य उपलब्धियाँ-
शिक्षा-	लेखन का उद्देश्य-
कार्यक्षेत्र-	एक मौलिक रचना
विधा -	ईमेल-
मोबाइल/व्हाट्स ऐप -	छाया चित्र-

प्रथम बार परिचय आवश्यक है, अन्य बार बिना परिचय के केवल रचना मय शीर्षक अणुडाक (मेल) पर प्रेषित करें।

मातृभाषा.कॉम से जुड़े प्रत्येक रचनाकार को मिलेगा भाषा सारथी सम्मान, क्योंकि यदि आप हिन्दीभाषा में सृजन कर रहे है, तो आप निश्चित तौर पर भाषा के गौरव की अभिवृद्धि कर रहे है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र

९६६९८९६६९३ ९४२४७६५२५९ ७०६७४५५४५५

www.matrubhashaa.com

मातृभाषा.कॉम

मातृभाषा उन्नयन संस्थान — www.matrubhasha.org

हिन्दीग्राम — www.hindigram.com

अन्तरा शब्दशक्ति — www.antrashabdshakti.com

साहित्यकार कोश — www.sahityakarkosh.com

प्रधान संपादक
डॉ.प्रीति सुराना *

तकनीकी सम्पादक
डॉ.अर्पण जैन 'अविचल'

सम्पादकीय सलाहकार
श्री समकित सुराना
श्री बृजेश शर्मा 'विफल'
श्री कैलाश बिहारी सिंघल
श्री देवेन्द्र सोनी
श्री संजय कोचर
सुश्री कीर्ति वर्मा
सुश्री पिंकी परुथी 'अनामिका'
सुश्री अदिति रूसिया

ग्राफिक्स
मृदुल जोशी
सुश्री मीना कौशल

राजकीय प्रतिनिधी
रिंकल शर्मा- दिल्ली
सुश्री वसुंधरा रॉय- महाराष्ट्र
सुश्री नसरीन अली 'निधी'- जम्मू एवं कश्मीर
मंगल प्रसाद पासवान- उत्तरप्रदेश
प्रकाश कायस्थ- आसाम
तपन कुमार गैन- पश्चिम बंगाल
अनिल कुमार शर्मा 'चिंतित'- हरियाणा
रिखभचंद रांका- राजस्थान
तेजनारायण जी-बिहार
सुश्री पूजा टांक- तमिलनाडु
सुश्री अर्चना शर्मा-गोआ

*-पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी हैं।

अन्तराशब्दशक्ति

मासिक वेब पत्रिका

वर्ष-2 अंक-12-01 मूल्य-25 रुपए
संयुक्तांक जून-जुलाई : 2018

क्र.	विषय	पृष्ठ क्रमांक
1.	संपादकीय	4
2.	सुलगी हुई घाटी की नई आफत	5
3.	समाज में व्याप्त बुराइयां,कुरीतियां व निदान	6
4.	हमारी संस्कृति, हमारे संस्कार	7
5.	बिखराव की राजनीति करती है कांग्रेस	8
6.	नेपाल में मार्क्स, लेनिन, माओ एक हो गए	9
7	खोजना होगा अमृतकलश	10
8.	कुप्रबंधन की थाली में पोषाहार	13
9.	शेरनी के पंजे में लोकतंत्र	15
10.	माँ तो माँ है	16
11.	आधुनिक समाज में महिलाएं	19
12.	हिन्दी के शत्रु.....	20
13.	हाउस वाइस	22
14.	प्रश्नावली	26
15.	एक अल्हड़ दीवाना कवि-राजकुमार कुम्भज	31
16.	संघर्षों का सुकुमार डॉ वासिफ काजी	32
17.	हिन्दी के लिए समर्थन मांगेंगे डॉ जैन	33
18.	हिन्दी भाषा रोजगार की भाषा बने	35
19.	हिन्दी भाषा का सिनेमा पर प्रभाव	36
20.	जनता बेहाल सरकार मालामाल	37
21.	शायद हमें एक संत न खोना पड़ता	38
22	अतिक्रमण	39
23.	श्मशान घाट	40
24.	पुलिस की सेवा से हिन्दी का योद्धा बनें कमलेश कमल	41
25.	श्रेष्ठ मजदूर, तेजी से काम करता है आयुर्वेद	47

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. प्रीति सुराना द्वारा एस-207, नवीन परिसर, इंदौर प्रेस क्लब, एम. जी. रोड इंदौर से प्रकाशित एवं ग्लोबल ग्राफिक्स ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित। मो.-9009465259

किसी भी कानूनी विवाद का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा। **शुल्क- 25 रु.**

www.antrashabdshakti.com

बेमिसाल एक साल-सृजन फुलवारी से अंतरा शब्द शक्ति तक

संपादकीय

डॉ. प्रीति सुराना
प्रधान संपादक

सूरज की गर्मी से पार होकर फिर पावस ऋतु आ गई, जो साहित्य के समर को अपने काव्य गौरव से शीतल करने के साथ-साथ नव-बीजांकुर के भाव को भी प्रवृत्त करती है।

साल बीत गया, ठीक एक साल पहले अंतरा शब्द शक्ति मासिक पत्रिका के साथ अंतराशब्दशक्ति.कॉम अंतरताने की शुरुआत हुई थी। सैंकड़ों रचनाकार, हजारों पाठक और लाखों शुभेच्छाएं, शुभकामनाओं की अमूल्य निधि के साथ इस सफर में महज फेसबुक व वाट्सअप ग्रुप से प्रकाशन तक की यात्रा निर्बाध रूप से बनी। गौरवान्वित हूं, प्रसन्नचित्त हूं, आह्लादित हूं मुझे आपका साथ मिला, समर्पण मिला और सबलता के साथ हिन्दी सेवा का अवसर मिला। कटु सत्य यह भी है कि इस यात्रा में कई उतार-चढ़ाव आए, कुछ अपने पराए हो गए, तो कुछ परायों ने अपनों से ज्यादा मान-सम्मान और अपनेपन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना भी स्वीकारा। उन्हीं में से एक नाम डॉ. अर्पण जैन 'अविचल' भी रहा, जिन्होंने न केवल वेबसाइट बनाई, बल्कि एक दोस्त और मार्गदर्शक की भांति कंधा से कंधा मिलाकर चलना भी स्वीकारा।

इस अनवरत यात्रा में हिन्दी साहित्य का मान बढ़ाना, हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्थापित करवाना और रचनाकारों को सशक्त संबल मंच भी प्रदान करना शामिल रहा। अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन भी इसी का एक हिस्सा है, जो साहित्य के तम को साथ-साथ इस तम के नाम पर छलावा करने वाले और रचनाकारों को बेवजह पुस्तक छपाई के नाम पर लूटने वालों से बचाना भी शामिल है। प्रकाशन का उद्देश्य केवल हिन्दी के रचनाकारों को उनकी रचनाओं की सुरक्षा हेतु प्रकाश्य सामग्री उपलब्ध करवाना है। हमने यह कार्य विगत 1 वर्ष की यात्रा में बखूबी किया। साथ ही लगभग अब तक 100 पुस्तकों का प्रकाशन सफलतापूर्वक करके तीन आयोजन भी किए और रचनाकारों की पुस्तकों को विमोचित करवाकर उन्हें प्रसन्न होने का यह अवसर भी प्रदान किया। यकीनन यह यात्रा हिन्दी के विकास और विस्तार हेतु मील का पत्थर साबित होगी। 'न भूतो न भविष्यति' हिन्दी के महासंग्राम में इस तरह की अनूठी यात्रा बन पाई होगी, जिसमें हिन्दी के स्वाभिमान में वृद्धि के साथ-साथ उसके गौरव की पुनर्स्थापना का कार्य भी सक्षमता के साथ किया।

जून का महीना पावस ऋतु की बहार और साथ ही भारतीय भाषा हिन्दी के गौरव पं. बालकृष्ण भट्ट, विष्णुप्रभाकर, बाबू देवकीनंदन खत्री, वैद्यनाथ मिश्र नागार्जुन आदि की जन्म जयंती और कुबेरनाथ रॉय, कीर्ति चौधरी, अरुण प्रकाश, राजकमल चौधरी, शिवकुमार मिश्र का पुण्य स्मरण भी इस माह को खास बनाता है।

इस बार मासिक अंतरा शब्द शक्ति की वर्षगांठ होने से जून का माह और दिनांक 16 एक खास महत्व की हो जाती है। इसीलिए माह जून की बरसाती बूंदे तन के साथ-साथ मन को भी अपनी स्नेह वृष्टि से भिगाकर आल्हादित कर देती हैं। मैं हृदय से आभारी हूं अपने पाठक परिवार, संचालक मंडल, मेरे मार्गदर्शक, मेरे परिवारजन और मातृभाषा उन्नयन संस्थान की।

दिशा दीप्त हो उठी प्रासकर
पुण्य--प्रकाश तुम्हारा,
लिखा जा चुका अनल-अक्षरों
में इतिहास तुम्हारा।
जिस मिट्टी ने लहू पिया,
वह फूल खिलायेगी ही,
अम्बर पर घन बन छायेगा
ही उच्छ्वास तुम्हारा।
और अधिक ले जाँच देवता इतना क्रूर नहीं है।
थककर बैठ गये क्या भाई! मंजिल दूर नहीं है।

सादर अभिनंदन सहित...।

सुलगी हुई घाटी की नई आफत

डॉ.अर्पण जैन
'अविचल'
हिन्दीग्राम, इंदौर

दिन ढलने को था, आसमान से श्वेत कबूतर अपने आशियानों की तरफ लौटने ही वाले थे, कहवा ठण्डा होने जा रहा था, पत्थरबाजों के हौसले परवान पर थे, अलगाववाद और चरमपंथ अपनी उधेड़बुन में भ्रमरो गुनगुना रहा था, चश्म-ए-शाही का मीठा पानी भी कुछ कम होकर एक शान्त स्वर झलका रहा था, इसी बीच दिल्ली के भाजपा कार्यालय में कश्मीरी भाजपा के विधायकों और मंत्रियों का एक खास बैठक से उपजा फैसला जिसने तीन साल के संबंध को दरकिनार कर महबूबा मुफ्ती का साथ तोड़ना स्वीकारा और राम माधव ने घोषणा कर ही दी कि पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी को भारतीय जनता पार्टी अब समर्थन नहीं देगी। सरकार गिर गई, महबूबा मुफ्ती ने इस्तीफा भी भेज दिया।

पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की नेता और जम्मू कश्मीर की पहली महिला मुख्यमंत्री रहीं महबूबा मुफ़्ती ने गठबंधन तोड़ने के लिए बीजेपी की ये कहते हुए आलोचना की है कि राज्य में सख्ती की नीति नहीं चल सकती। और जम्मू कश्मीर के लिए बीजेपी के प्रभारी राममाधव ने दिल्ली में एक संवाददाता सम्मेलन में गठबंधन से अलग होने की वजह बताते हुए कहा, ''हमने तीन साल पहले जो सरकार बनाई थी, जिन उद्देश्यों को लेकर बनाई थी, उनकी पूर्ति की दिशा में हम कितने सफल हो पा रहे हैं, उस पर विस्तृत चर्चा हुई।''

उन्होंने कहा कि, ''पिछले दिनों जम्मू कश्मीर में जो घटनाएं हुई हैं, उन पर संज्ञान लेने के बाद प्रधानमंत्री मोदी और पार्टी अध्यक्ष अमित शाह से परामर्श लेने के बाद आज हमने निर्णय लिया है कि गठबंधन सरकार में चलना संभव नहीं होगा।''

राममाधव का कहना था, ''पिछले तीन साल से ज्यादा समय में बीजेपी अपनी तरफ़ से सरकार अच्छे से चलाने की कोशिश कर रही थी, राज्य के तीनों प्रमुख हिस्सों में विकास को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रही थी। आज जो हालात राज्य में बने हैं, जिसमें एक भारी मात्रा में आतंकवाद और हिंसा बढ़ गई, उग्रवाद बढ़ रहा है, नागरिकों के मौलिक अधिकार और बोलने की आज़ादी खतरे में पड़ गए हैं।''

खैर, जितने मुहँ-उतनी बातें, परन्तु इन सबके बीच सवाल वहीं खड़े है कि आखिर तीन वर्षों तक क्यों, कैसे, किन तथाकथित कारणों के कारण या केवल राष्ट्रपति चुनाव के कारण यह गठबंधन बना रहा? या फिर राष्ट्रपति शासन के बहाने मार्शल लॉ की सख्ती और सेना को दिए जाने वाले अधिकारों के रास्ते 2019 के लोकसभा चुनाव की राह तैयार की जा रही है। वैसे भी घाटी के हालात बेकाबू तो हो ही गए थे, पत्थरबाजों पर नकेल न कस पाने से राज्य की राजनैतिक तासीर संदेह के घेरे में थी, साथ ही देश की जनता के दिल में भी कश्मीर और भाजपा के प्रति नफरत का बीजारोपण हो रहा था, क्योंकि आप सत्ता में थे,और उम्मीद सत्तापक्ष से ही होती है।

कश्मीर में गठबंधन टूटने के कारणों में शुमार है संघर्षविराम

केंद्र सरकार ने गठबंधन टूटने के दो दिन पहले ही जम्मू कश्मीर में घोषित एकतरफा संघर्षविराम को और आगे नहीं बढ़ाने का फ़ैसला किया था, यह संघर्षविराम रमज़ान के महीने के दौरान राज्य में 16 मई को घोषित किया गया था। गृह मंत्रालय ने कहा कि चरमपंथियों के ख़िलाफ़ फिर से अभियान शुरू किया जाएगा। यह घोषणा ईद के एक दिन बाद की गई थी। संघर्षविराम चाहने वाली पीडीपी और भाजपा में इस बात को लेकर भी ठनी हुई थी कि क्या सेना उन पत्थरबाजों से बढ़कर है? यही बात पीडीपी को हजम नहीं हुई और तकरार हो ही गई।

कारण तो धारा 370 भी हो सकती है

पीडीपी नेत्री महबूबा ने श्रीनगर में कहा कि, ''हमने ये सोचकर बीजेपी के साथ गठबंधन किया था कि बीजेपी एक बड़ी पार्टी है, केंद्र में सरकार है। हम इसके ज़रिए जम्मू कश्मीर के लोगों के साथ संवाद और पाकिस्तान के साथ अच्छे संबंध चाहते थे, उस समय अनुच्छेद 370 को लेकर घाटी के लोगों के मन में संदेह थे लेकिन फिर भी हमने गठबंधन किया था ताकि संवाद और मेलजोल जारी रहे।'' अघोषित रूप से तो भाजपा का धारा 370 को लेकर कुछ तो रुख रहा ही होगा, जिसके कारण ये जिक्र भी आया कि धारा 370 को हटाने का दबाव भी है।

घाटी का रक्तरंजित होकर बेकाबू होना भी जिम्मेदार

विगत कई महीनों से कश्मीर में पत्थरबाजों की सक्रियता और एक ही तरह की नारेबाजी, 'कश्मीर मांगे-आज़ादी', 'हमें सेना से मुक्ति दो' और 'कश्मीर बनेगा अलग देश' इन सबके कारण भी हालात बेकाबू होते ही जा रहें थे, और पिस रहे थे निर्दोष लोग।

बहरहाल, चिन्ता इस बात की है कि अब क्या होगा? क्या कांग्रेस, नेशनल कांफ्रेंस व निर्दलीय विधायकों के साथ मिलकर सरकार बनाएगी, या राष्ट्रपति शासन की आड़ में सेना को मिलेंगे खुले अधिकार जो घाटी के लिए भयावह भी हो सकते है, क्योंकि पत्थरबाजों पर नकेल कसना तो आवश्यक है ही, पर भोली जनता न बीच में उलझ जाए, इस बात का ख्याल रहें।

वैसे कर चुकी है नेशनल कांफ्रेंस अपना रुख साफ

नेशनल कांफ्रेंस ने जम्मू कश्मीर की सियासी हलचल पर सधी हुई प्रतिक्रिया देते हुए राज्यपाल शासन को फ़िलहाल एकमात्र विकल्प बताया है। पार्टी नेता और पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने श्रीनगर में कहा कि, ''नेशनल कांफ्रेंस को 2014 में सरकार बनाने का जनादेश नहीं मिला था, आज 2018 में भी सरकार बनाने का जनादेश नहीं है। हम किसी और तंजीम के साथ सरकार बनाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं।''

उन्होंने कहा, ''न हमने किसी से संपर्क किया है न किसी ने हमसे

संपर्क किया है। राज्यपाल के पास राज्यपाल शासन लगाने के सिवा कोई चारा नहीं है। हालात आहिस्ता आहिस्ता दुरुस्त करना होगा। इसके लिए हम राज्यपाल का पूरा समर्थन करेंगे, लेकिन राज्यपाल शासन ज्यादा देर नहीं रहना चाहिए। हम चाहेंगे राज्य में नए सिरे से जल्द से जल्द चुनाव हो। उन्होंने ये कहा कि 'बेहतर होता कि गठबंधन तोड़ने का फ़ैसला महबूबा मुफ़्ती लेतीं।'

डॉ शुजात बुखारी की हत्या भी वजह

राममाधव ने पीडीपी से गठबंधन तोड़ने की तमाम वजहें गिनाते हुए वरिष्ठ पत्रकार शुजात बुख़ारी की गोली मारकर हत्या किए जाने का भी जिक्र किया। चूंकी शुजात बुखारी की हत्या इसलिए बड़ी मानी जा सकती है, क्योंकि बुखारी एक अन्तर्राष्ट्रीय दर्जे के बेहद सुलझे हुए पत्रकार होने से साथ-साथ कई सरकारों के अघोषित सलाहकार भी थे। इन सब तमाम वजहों के बाद भी गठबंधन का टूटना घाटी के लिए एक नई आफत तो जरूर ले आया है, जिसमें राष्ट्रपति शासन के बाद पत्थरबाजों को बख्शा नहीं जाएगा, यह साफ तौर पर दिख रहा है, क्योंकि कश्मीर के रास्ते हिन्दुस्तान में देशप्रेम और मानवीय संवेदनाएं तो जरूर बटोरी जा सकती है।

सेना भी कस सकेगी पत्थरबाजों पर नकेल

घाटी के हालात बद से बदतर होते जा रहे है, पत्थरबाजों से निर्दोष परेशान है, सेना पर हमले तो जगजाहिर हैं ही, इन सबके बीच साल 2014 का थाईलैंड याद आता है, जिसमें थाई सेना ने कई महीनों की राजनीतिक अस्थिरता के बाद मार्शल लॉ लगा दिया था। राजधानी में सैनिक तैनात थे, जिन्हें बहुत सी शक्तियां दे दी गई थी, मगर सेना ने ज़ोर देकर कहा था कि यह तख़्ता पलट नहीं है।

थाई सेना के कमांडर जनरल प्रयुथ चान ओचा ने कहा था कि 'हथियारों का इस्तेमाल करके नागरिकों को ख़तरे में डाल रहे दुर्भावनापूर्ण संगठनों' की मौजूदगी की वजह से मार्शल लॉ लागू किया गया है।

मगर देश में राजनीतिक उठापटक कई महीनों से जारी थी, सरकार विरोधी आंदोलनकारी बहुत समय से कैबिनेट को हटाने की धमकी दे रहे थे। थाईलैंड की सेना ने पिछले कुछ दशकों में कई बार तख़्तापलट किए हैं। 1932 में पूर्ण राजशाही के ख़ात्मे के बाद से अब तक 11 बार ऐसा हो चुका है। ताज़ा तख़्तापलट 2006 में हुआ था, जब प्रधानमंत्री थाकसिन चिनावाट को भ्रष्टाचार के आरोपों के बाद सेना ने पद से हटा दिया था।

इन सबके अतिरिक्त भारत का कानून कुछ अलग ही कहता है। भारत में फौजी कानून संबंधी उल्लेख केवल 34वीं धारा में है, जो किसी विशेष क्षेत्र में फौजी कानून उठा लिए जाने के बाद क्षतिपूर्ति अधिनियम (एक्ट आव इंडेम्निटी) की व्यवस्था करती है। किंतु फौजी कानून से मिलता जुलता ही धारा 359 (1) के अंतर्गत राष्ट्रपति का वह अधिकार होता है जिससे वह धारा 21 और 22 के अंतर्गत अधिकारों का न्यायिक निष्पादन स्थगित कर दे सकता है। यह समझा जाता है कि यह मूलतः फौजी कानून का ही रूप है, किंतु प्रतीत होता है कि सर्वोच्च न्यायालय ने इसे विवाद के लिए छोड़ दिया है (ए आइ आर 1964) जो हो, इस संबंध में कोई भी मत अपनाया जाए, संविधान की धारा 352 के अंतर्गत संकटकाल की घोषणा का मौलिक अधिकारों पर प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में फौजी कानून जैसा ही है।

इस प्रकार धारा 358 के अंतर्गत जब तक संकटकालीन स्थिति कायम रहती है, कार्यपालिका को धारा 19 की व्यवस्थाओं के उल्लंघन का अधिकार रहता है। राष्ट्रपति द्वारा धारा 359 (1) के अंतर्गत संकटकालीन अवधि तक या आदेश में उल्लिखित अवधि तक के लिए दूसरे मौलिक अधिकार भी स्थगित किए जा सकते हैं।

राष्ट्रपति के अधिकार पर केवल इतना ही नियंत्रण होता है कि संकटकाल की घोषणा स्वीकृति के लिए संसद के समक्ष प्रस्तुत की जानी चाहिए। इस घोषणा को संसद के समक्ष प्रस्तुत करने की कोई निश्चित अवधि नहीं होती और न प्रस्तुत किए जाने पर किसी प्रकार का दंड का प्राविधान ही है, किंतु घोषणा के प्रसारित होने के दो मास पश्चात् वह स्वतः समाप्त हो जाती है। एक घोषणा के समाप्त होने पर फिर दूसरी घोषणा जारी करने में राष्ट्रपति पर कोई प्रतिबंध नहीं है। धारा 359 (1) के अंतर्गत जारी किया गया राष्ट्रपति का आदेश संसद के समक्ष यथाशीघ्र प्रस्तुत होना चाहिए। इस प्रस्तुतीकरण के समय का निर्णय करना कार्यपालिका पर छोड़ दिया गया है, क्योंकि यदि राष्ट्रपति का आदेश संसद के समक्ष प्रस्तुत नहीं किया जाता तो भी इसका प्रभाव कम नहीं होता और न ही प्रस्तुत करने के अभाव में कोई वैधानिक कार्रवाई की व्यवस्था है।

इस कानून व्यवस्था का हवाला देकर कश्मीर में सेना को स्वतंत्रता दी जा सकती है, जिसके आलोक में सेना कश्मीर में हालात काबू कर सकने में कामयाब रहे।

जिस तरह से पूर्व प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गांधी ने भीन्डेरवाला और खालिस्तान आन्दोलन पर काबू किया था, वही रुख प्रधानमंत्री मोदी अपना कर कश्मीर पर काबू पा ले, या ये भी हो सकता है कि सेना से हवाले से हालातों पर नियंत्रण किया जाए। बात जो भी हो पर दोनों ही स्थिति में कश्मीर को तैयार रहना होगा, भुगतान के लिए। क्योंकि बेलगाम पत्थरबाजों पर नकेल कसना अब अत्यंत आवश्यक है वर्ना देश की सुरक्षा व्यवस्था ख़तरे में है।

साथ ही घाटी में आतंकवाद चरम पर पहुँच जाए तो घाटी भी बारूद के ढेर पर ही बैठी है। इन हालातों पर काबू पाना भी जरूरी है, पर स्थानीय निर्दोष नागरिकों के बचाव के साथ। वर्ना बेवजह ही घाटी रक्तरंजित हो उठेगी। एक गठबंधन का टूटना, कई तरह की शंकाओं को आमंत्रित कर चुका हैं, जिनमें सेना का उग्र होना और पत्थरबाजों के मुखर स्वर के साथ-साथ कश्मीर में सैन्य शासन जैसे हालात भी पैदा करना शामिल है।

अगले ही वर्ष लोकसभा चुनाव भी है तो यह भी हो सकता है कि 6 माह का राष्ट्रपति शासन हो जाए और लोकसभा से साथ ही विधानसभा चुनाव भी करवाएं जाए, या फिर नए योद्धाओं के साथ बीजेपी या पीडीपी नई सरकार बना ले। परिणाम जो भी हो पर भुगतान अंततः घाटी को ही करना है,कई तरह की मुसीबतों की आमंत्रण पत्रिका के तौर पर इस गठबंधन टूटने को जरूर माना जाएगा।

आलेख

समाज में व्याप्त बुराईयों और कुरीतियाँ कारण और निदान

शुरुआत हर वाद की विवाद से ही क्यों करें रीतियों पर कुरीतियों का कुनाम क्यों मढ़ें
क्यों शुरू हुआ या बिगड़ा मामला कोई भी हो आओ सुधार की संभावनाओं पर नया विन्यास गढ़ें।

डॉ. प्रीति सुराना

समाज क्या है?

समाज उन मानवों का वो समूह है जो किसी विचारधारा, परंपरा या सम्प्रदाय का अनुकरण करने के लिए नियत नियमावली का अनुकरण करता है।

मानव की प्रवृति है कि वह अकेला नहीं रह सकता इसलिए सामाजिक प्राणी कहलाता है। मानव इसी गुण के कारण परिवार बढ़ाता है, परिवारों में परस्पर विवाह, लेनदेन, व्यवहारिकता और अतिथि सत्कार की परंपराओं और रीति रिवाजों से समाज बनता है।

समाज में परंपरा और रीति रिवाज कभी भी किसी कुरीति के रूप में स्थापित कभी नहीं होती बल्कि इन रीतियों का बनना, कालधर्म, परिवेश और परिस्थितिजन्य होता है।

अधिकतर कुरीतियाँ स्थायी तब हो जाती है जब समाज के ठेकेदारों का निजी राजनैतिक, शारीरिक, मानसिक या आर्थिक लाभ उसमें निहित होता है।

आधुनिक भारत में आज भी विद्यमान कुछ मुख्य बुराइयाँ एवं कुरीतियाँ

स्त्री शोषण- मुगलकाल से आज तक स्त्री भोग्या की भूमिका में रही। जब रणभूमि में आई, जब रंगमंच पर उतरी, जब राजनीति में आई, जब विज्ञान को जीता तब-तब पुरुष प्रधान समाज ने स्त्री की प्राकृतिक संरचना जो सृष्टि की नियंता है उसी को उसकी कमजोरी मानकर शोषण किया। स्त्री को शिक्षा से दूर किया, सती प्रथा, विधवा विवाह का विरोध जैसी कुरीतियों का जन्म इसीलिए हुआ।

कन्या भ्रूण हत्या- गुलाम मानसिकता ने आपराधिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया, कन्या के बाल्यकाल में ही बलात्कार जैसी घृणित घटनाओं ने सबसे अधिक भ्रूणहत्या जैसे कुकृत्य को पोषित किया है।

भ्रष्टाचार- बिना लिए दिए कोई काम न करने की आदत बाल्यकाल में बच्चे को चॉकलेट के लालच से ही सिखा दिया जाता है और आज उसी को भ्रष्टाचार का नाम दिया जाता है। न्याय और प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार भी उसी का परिणाम है।

बाल श्रम- गरीबी, भुखमरी और आर्थिक विषमताओं से युक्त भारत ने आर्थिक विषमता को दूर करने की बजाय आसानी से उपलब्ध बाल श्रम को भी एक कुरीति बना लिया।

बाल विवाह और बहु विवाह- कन्या भ्रूणण हत्या के कारण समाज के नर मादा के अनुपात में असंतुलन स्पष्ट दिखाई देने लगा। गुलाम भारत में अपने राज्य को बचाने के लिए बेटियों का आदान प्रदान होता था जो धीरे-धीरे बाल विवाह और बहु विवाह नामक कुरीतियों में परिवर्तित हो गया।

दहेज प्रथा- बेटियों के सुरक्षित और समृद्ध भविष्य के लिए मातापिता द्वारा देय उपहार दहेज का एक विकराल दानव बन गया। जिसका मूल लोभ है।

पर्दा प्रथा- इतिहास गवाह है कि औरतों की सुरक्षा के लिए शुरू की गई थी पर्दा प्रथा जिसे कुछ तबके के लोगों ने परंपरा और रीति बनाकर विकृत रूप में प्रतिपादित कर उसके लिए भी स्त्री पर दबाव व अत्याचार करना शुरु कर दिया।

प्रथाओं परंपराओं या रीतियों के बुराईयों या कुरीतियों में बदलने के कारण

स्त्री शिक्षा का अभाव- पारिवारिक सामंजस्य हेतु पुरुष का दायित्व धनोपार्जन और स्त्री का दायित्व परिवार का पालनपोषण निर्धारित किया गया। समय के साथ साथ इस व्यवस्था को परंपरा का नाम देकर स्त्री की शिक्षा को अनुपयोगी माना जाने लगा। चूल्हा फूंकने के लिए अक्षर ज्ञान की क्या आवश्यकता जैसे कारण पुरुष प्रधान समाज के साथ साथ कुत्सित विचारधारा से भरे समाज मे स्त्री का देहरी से बाहर असुरक्षित होना भी था।

व्यवहारिक शिक्षा की कमी- वर्तमान शिक्षा पद्धति में किताबी बातें रटाई और पढ़ाई जा रही है जबकि व्यवहार में जिन जरूरी बातों और शिष्टाचार, देशप्रेम, स्वामिभक्ति, कर्तव्यनिर्वाह और अधिकारों के सही प्रयोग की शिक्षा नाममात्र को नैतिक शिक्षा की किताबों में ही शेष रह गई है।

नैतिक मूल्यों की अवहेलना- बड़ों को प्रणाम, स्त्री का सम्मान, कमजोर की रक्षा, अन्याय का विरोध, अत्याचार न करना न सहना, सच का साथ देना ये सारे नैतिक कार्य अब टके के भाव मे बिकते हैं, साहित्य, शिक्षा, कला और धर्म सब कुछ बिकाऊ समझा जाने लगा है।

जागरूकता और उन्मूलन के कार्यों में धनलोलुपता- जितनी सामाजिक और धार्मिक संस्थाएं बनाई जाती है इन कुरीतियों को मिटाने के लिए वो आगे जाकर लालच की बलि चढ़ जाती है। समाज का हित चाहने वाली अपवादी संस्थाओं को बिकाऊ लोगों के कारण कार्य करने का समुचित अवसर नहीं मिल पाता और उल्टा अच्छी संस्थाएं भी संदेह के घेरे में समुचित कार्य नहीं कर पाती।

राजनैतिक घटक- राजनैतिक प्रदूषण हर घर हर गली हर समाज गाँव शहर जिला संभाग राज्य से होता हुआ पूरे देश में दम घोंटू जहर की तरह व्याप्त है जो न किसी को पनपने देता न सुधरने। एक सुधार के शुरुआत हो तो हजार कुकर्मों के रास्ते गढ़ते लोग हर चौराहे पर मिल जाएंगे।

सामाजिक ढांचा- समाज अलग अलग सरगनों या सरदारों की सेना के रूप में तैयार हो रहे हैं जो अमन और शांति की बातें करते हुए भी

भीतर ही भीतर अलगाव की चिनगारी सुलगाने का कार्य बखूबी करते हैं। समाज के ठेकेदारों के नाम धर्म स्थालियों , स्कूलों, शिक्षालयों के शीर्ष स्थल पर अंकित नजर आते हैं पर सड़कों पर हो रही विनाशकारी गतिविधियों में कहीं भी सुरक्षात्मक भूमिका में नजर कोई नहीं आता। उनकी भूमिका हिन्दी सिनेमा की पुलिस की तरह होती है जो अकसर बाद में आती है या मंचों पर आसीन होती है।

साम्प्रदायिकता का बोलबाला– धर्म के नाम पर हो रहे घोटाले, दंगे, कुरीतियों को बढ़ावा देने का मुख्य कारण है क्योंकि यही कुरीतियाँ साम्प्रदायिक सरगनों की प्रभुत्व का आधार है।

लचर न्यायव्यवस्था– सालों तक छोटी छोटी वारदातों के निर्णय के लिए न्यायालयों के चक्कर लगाने आए बचने के लिये अन्याय के खिलाफ आवाज न उठाना भी एक बहुत बड़ी कुरीति का रूप ले चुकी है।

सामाजिक कुरीतियों का निदान

नैतिकता के हनन को रोकने के लिए कठोर कदम ः– परिवार, समाज, देश में नैतिकता की सुर सरिता का पुनरप्रवाह शिक्षा और दीक्षा के माध्यम से किया जाना चाहिए।

भ्रष्टाचार उन्मूलन में जुड़े कार्यकर्ताओं का खुद ईमानदार होना– समाज का सुधार करने का दायित्व उठाने वाले कंधों का मजबूती से स्वयं को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। हर व्यक्ति अगर कगुड उदाहरण बन जाए तो स्वच्छता अभियान की आवश्यका ही न हो।

राजनैतिक कारकों को सामाजिक रीतिरिवाजों को दूषित करने से रोकना– घर घर मे राजनीति के प्रवेश को रोकने के लिए सही मतदान हेतु जन जन को स्वविवेक से निर्णय लेने की शिक्षा देनी चाहिए न कि वोट के बदले भिक्षा।

किताबी ज्ञान से अधिक व्यवहारिक शिक्षा को महत्त्व देना– किताब में लिखी बातों को रटकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने या आरक्षण का सहारा लेकर अयोग्यता को भी सम्मानित दर्जे में खड़ा करने की बजाय स्वस्थ मानसिकता के साथ पठनपाठन, योग्यता के अनुसार कार्यक्षेत्रों का चयन करने के लिए बाल्यकाल से ही प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

भाषाओं के नाम पर हो रहे विखंडन को रोकना– अलग धर्म, अलग राज्य, अलग बोली लोगों को टुकड़ों में बांटने के अलावा कोई भी सद्कार्य नहीं करेगी। आज सबसे विचारणीय विषय है की हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा घोषित कर वो मजबूत डोरी बनाई जाए जिसमें हर बोली मोतियों के रूप में गुंथी जाए। और एक ऐसी माला बनाई जाए जो हर धर्म, हर बोली और हर राज्य को एकता के सूत्र में बांध सके। एक दूसरे की भय से समन्वय न बिठा पाने के कारण भी अच्छे संस्कारों का आदान-प्रदान नहीं हो पाता और बिचौलियों की भूमिका निभा रहे लोग विखंडन का कारण धर्म और बोली को साबित कर देते हैं।

आधुनिकता के नाम पर हो रहे संस्कारों के विनाश को रोकना– पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण ने भी भारतीय संस्कृति को विदेशियों के सामने नग्न किया है। जानबूझ कर सोशल मीडिया जे माध्यम से भारत की ऐसी तस्वीर वायरल की जाती है जो असली भारत के किसी कोने में छुपे विकार की होती है। हमारा नैतिक दायित्व है कि ऐसे संदेशों के प्रचार प्रसार और अपने ही धर्मो, त्योहारों और महापुरुषों, महिलाओं पर बन रहे घटिया चुटकुलों को प्रसारित करना बंद करें।

विविधता में एकता को पुनर्स्थापित करना– पुराना भारत विविधताओं में एकता का प्रतीक माना जाता था। विविधताएं तो आज भी विद्यमान है तभी तो विदेशी लोग भारत की संस्कृति का प्रचार अपने देशों में कर रहे हैं और हम उन्हीं विशेषताओं को लेकर अपने ही भारत को खंड-खंड कर रहे हैं। आज एक एक व्यक्ति से देश की संस्कृति को कुरीतियों के कलंक से बचाने की व्यक्तिगत प्रार्थना करते हुए

अंत में रामधारी सिंह दिनकर की कविता की पंक्तियों से जन-जन का आवाहन करती हूं.....

उठो, उठो कुरीतियों की राह तुम भी रोक दो,
बढ़ो, बढ़ो, कि आग में गुलामियों को झोंक दो,
परम्परा की होलिका जला रहीं जवानियाँ।

साहित्य अनुरागी-बालकवि बैरागी

देशप्रेम एवं बाल साहित्य के उत्तम कवि ,मालवमाटी के गौरव बालकवि बैरागी जी 'दादा' को सादर श्रद्धांजलि

मालव भूषण को कैसे
कहें हम अंतिम प्रणाम ।
जी गए जीवन के क्षण
लेकर भगवान का नाम ।।
हम दो - हमारे दो का
जन-जन को दिया नारा ।
छोटा परिवार-सुख सार
प्रगति करे देश हमारा ।।
जीवन तो है एक उत्सव
और मृत्यु है महोत्सव ।
देह त्यागी है आत्मा नही
फिर आऊंगा बन शैशव ।।
वह थे दीवट के दीप
सारा देश हमारा के सीप ।
अपनी गंध नहीं बेचूंगा
नौजवानों आओं रे समीप ।।
आह्वान कविता मन भाई
पढ रही जिसे हर तरुणाई ।
करों न बेवजह नुकसान
आपस हम सब भाई-भाई ।।
साहित्य के अनुरागी
सबमें सक्रिय सहभागी ।
असंख्य दिलों में बसे है
अमर है बालकवि बैरागी ।।

-गोपाल कौशल

बिखराव की राजनीती करती है कांग्रेस

अमित शाह
(राष्ट्रीय अध्यक्ष-भाजपा)

संसद लोकतंत्र के मंदिर के समान है जहांसे देश के विकास की योजनायें और नीतियाँ मूर्त रूप लेती हैं। देश कीसामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक संपन्नता के लिए जनप्रतिनिधि कानून बनाने काकाम करते हैं। मुद्दों पर बहस की जाती है, जनकल्याणकारी योजनाएं तैयारहोती हैं। ताकि सबको समानता मिल सके। इसके लिए सरकार ही नहीं बल्कि विपक्षको एकजुट होकर बहस करने की जरूरत होती है। लेकिन जिस तरह से संसद के बजटसत्र के दूसरे चरण में कांग्रेस ने माहौल खराब किया और पूरे सत्र में बाधापहुंचाई उसके लिए लोकतंत्र की जनता कभी माफ नहीं करेगी। विपक्ष का यह गैरजिम्मेदाराना रवैय्या प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा गरीब कल्याण औरदेश के सर्वांगीण विकास के प्रयास में अवरोध पैदा करने वाला है।

संसद का हर सत्र देश के विकास को समर्पितनीतियों एवं योजनाओं पर होने वाली बहस के लिए चलाया जाता है। जिसमेंयोजनाओं की प्रगति, योजनाओं की कमी और योजनाओं में सुधार को लेकर सभीजनप्रतिनिधियों की प्रतिबद्धता झलकती है। लेकिन कांग्रेस ने सदन जनता केप्रति प्रतिबद्धता की चिंता छोड़ बाधा पहुंचाने में महारत हासिल कर ली है।इसलिए बहस करने की बजाय हंगामा करके कामकाज में बाधा पहुंचाने का बीड़ा उठालिया। पिछले दिनों जो हुआ उसे देखकर यही लगता है कि सदन में सार्थक बहसकरने की बजाय सदन के बाहर हंगामा करने में उनकी दिलचस्पी ज्यादा दिखी। इसबात को हर देशवासी भी भली-भांति समझ रहा है। बैंक घोटाला, आंध्र प्रदेश कोविशेष राज्य का दर्जा, कावेरी विवाद से लेकर अविश्वास प्रस्ताव तक मेंसरकार की ओर से संसदीय कार्यमंत्री, वित्त मंत्री, गृह मंत्री नेआश्वस्त किया था कि सदन को चलने दिया जाए और इन मुद्दों पर बहस कराई जाए।लेकिन कांग्रेस ने मुद्दों को छोड़ एक ही राग अलापना शुरू किया कि सरकारबहस नहीं चाहती। पूरा देश कांग्रेस के इस राग को सुन रहा है। सदन शुरू नहींहुआ कि हंगामा होने लगा। पहले सदन के बाहर हंगामा, फिर सदन के अंदरहंगामा। आशय साफ है कि हंगामा करने के मकसद से ही वे सदन में आते थे औरशुरू होते ही हंगामा करने लगते। कांग्रेस का जनकल्याण से कोई लेना देनानहीं बल्कि उनका उद्देश्य संसद के बाहर हंगामा करके बिखराव एवं अस्थिरता कीराजनीति करना है।

ऐसा हंगामा जो कि पूरा देश देख रहा है।दोनों सदनों के सभापति और अध्यक्ष शांत होने की अपील कर रहे हैं। लेकिनशांत होना तो दूर, उनका वेल तक पहुंच जाना रोज की बात हो चुकी थी। यह किसीभी सदन के सदस्य के लिए शोभा नहीं देता। करोड़ों देशवासियों की एक उम्मीदहोती है कि इस बार सदन में उनके लिए किन कल्याणकारी योजनाओं को लेकर बहसहोगी। क्या कानून बनेगा,विकास की राह को आगे बढ़ाने के हमारे जनप्रतिनिधि क्या कर रहे हैं। लेकिन कांग्रेस ने इसकी चिंता छोड़, झूठ का राग अलापनाशुरू कर दिया है। हम कहना चाहते हैं कि दिखावा मत करिए बल्कि मुद्दों परआकर बहस करिए। सरकार हर मुद्दे पर बहस के लिए तैयार है। कांग्रेस के सुरमें सुर कुछ विपक्षी दल भी मिलाने लगे। इसी का नतीजा हुआ कि बजट सत्र केदूसरा हिस्से में भी 22 कार्य दिवस पूरी तरह से बर्बाद हो गए। राज्यसभामें हंगामे के कारण बजट सत्र के दूसरे चरण में 121 घंटे और लोकसभा में लगभग 128 घंटे बर्बाद हो गए। संसद सत्र को चलाने के लिए बड़ा बजट भी खर्च होताहैं। लोकसभा और राज्यसभा चलाने का प्रति घंटे का खर्चा क्रमशः 1.57 और 1.10 करोड़ आता है। अतः कांग्रेस और विपक्ष के गैर जिम्मेदाराना रुख के कारणबजट सत्र के सिर्फ दूसरे चरण में राज्यसभा में ही विपक्ष के हंगामे के कारणजनता के लगभग 133 करोड़ और लोकसभा में लगभग 200 करोड़ रूपये व्यर्थ हो गए। इसलिए अंतराआत्मा की आवाज पर हमने बजट सत्र के दूसरे चरण का वेतन भत्ता नहीं लेने का निर्णय लिया।

हमारी प्रतिबद्धता जनता के लिए है। इसलिएप्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संसद में पहली बार प्रवेश के समय सर झुकाकरनमन किया था। अपने पहले भाषण में प्रधानमंत्री ने भावुक होकर कहा कि यहसरकार गरीबों, पिछड़ों, महिलाओं और युवाओं के लिए समर्पित है। सरकार ने देशके आर्थिक विकास को रफ्तार देने के लिए बजट सत्र का समय बदलकर एक फरवरीकिया। ताकि समय से इसे पारित कराया जा सके और योजनाओं को गति मिल सके।लेकिन विपक्ष, खासकर कांग्रेस, नहीं चाहती कि सरकार योजनाओं को रफ्तार दी जा सके। इसलिए विकास की राह में रोड़ा बनकर खड़ी हो जाती है और सदन को भीनहीं चलने देती है।

आज पूरा देश देख रहा है कि कांग्रेस किसतरह का ढोंग रच रही है। हम कांग्रेस के ढोंग को जनता के बीच रख रहे हैंताकि देशवासी जान सकें कि हम जिन्हें अपना जनप्रतिनिधि बनाकर भेंज रहे हैंवह उनके हितों काम करने की बजाय सरकार द्वारा किये जा रहे कार्यों में भीबाधा पहुंचाने में विश्वास करते हैं।

नेपाल में मार्क्स, लेनिन, माओ एक हो गए

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

नेपाल में राजशाही के बावजूद कम्युनिस्ट पार्टियां लंबे समय से सक्रिय हैं लेकिन उनमें कभी एकता नहीं रही। इस बार नेपाल की दो बड़ी कम्युनिस्ट पार्टियां न सिर्फ एक हो गई है बल्कि दोनों मिलकर नेपाल में राज भी कर रही है। ये पार्टियां हैं- एकीकृत मार्क्सवादी लेनिनवादी पार्टी (एमाले) और माओवादी कम्युनिस्ट पार्टी। याने अब मार्क्स, लेनिन और माओड्ड तीनों नेपाल में एक हो रहे हैं। इन दोनों पार्टियों की नेपाली संसद में जबर्दस्त ताकत है। कुल 275 सदस्यों में से 174 सदस्य इन पार्टियों के हैं। सरकार भी इन्हीं की है। मिली-जुली है। और जैसे कि प्रधानमंत्री के.पी. ओली ने आशा व्यक्त की है, यदि उपेंद्र यादव का समाजवादी फोरम भी इनमें शामिल हो जाता है तो वामपंथियों का बहुमत 2/3 हो जाएगा। नेपाल में पिछले 10 साल में 10 सरकारें बन गईं और बिगड़ गईं। ओली और माओवादी नेता पुष्पकमल दहल प्रचंड भी इस बीच प्रधानमंत्री रह चुके हैं। यदि दोनों कम्युनिस्ट पार्टियों का यह विलय सफल हो गया तो निश्चय ही नेपाल में स्थिरता और समृद्धि बढ़ेगी। 2015 के भूकंप ने हजारों लोगों के प्राण ले लिये थे और नेपाल की अर्थव्यवस्था को चौपट कर दिया था। नेपाल की घेराबंदी से भी काफी नुकसान हुआ था। अब दोनों पार्टियों ने अपनी-अपनी संपत्ति का भी विलय कर लिया है। हंसिया-हथौड़े को अपना निशान बनाया है और पार्टी-चुनाव होने तक ओली और प्रचंड, दोनों संयुक्त पार्टी अध्यक्ष बने रहेंगे। ओली ने कहा है कि अब दोनों पार्टियां जहाज की तरह चलेंगी, जिसमें दो पायलट एक साथ बैठेंगे। इसकी केंद्रीय समिति में 441 सदस्य होंगे। 200 माओवादी और 241 एमाले वाले। दोनों पार्टियों ने दिसंबर का चुनाव समान घोषणा-पत्र पर लड़ा था और पिछले साल अक्तूबर में ही उन्होंने घोषणा कर दी थी कि उनका विलय होगा। इस नई पार्टी का नाम 'नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी' होगा। इस विलय का मैं स्वागत करता हूं हालांकि इन दोनों पार्टियों का मैंने किसी जमाने में डटकर विरोध किया था, शेर बहादुर देउबा, ओली और प्रचंड से हुई मेरी भेंटों में जब उन्होंने मुझसे पूछा कि आप हमारा इतना विरोध क्यों करते हैं तो मेरा सीधा-साधा जवाब यह था कि इसलिए कि आप अकारण ही भारत का विरोध करते हैं। उस बार भी ओली ने अपना चुनाव भारत-विरोध के आधार पर ही जीता है लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की काठमांडो-यात्रा से कुछ अच्छे संदेश उभरे हैं। भारत की कूटनीति को अभी काफी सावधानी, चतुराई और उदारता की जरुरत है ताकि नेपाल चीन की गोद में बैठ जाने की गलती न करे।

रिखब चन्द राँका राष्ट्रीय स्तर पर होंगे सम्मानित

जयपुर। विशुद्ध स्वर्णिम संयम दीक्षा महोत्सव राष्ट्रीय कार्यकारिणी के प्रचार प्रमुख व मातृभाषा उन्नयन संस्थान राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष श्री रिखब चन्द राँका 'कल्पेश' जयपुर को साहित्यिक क्षेत्र में उत्कृष्ट सृजन व समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान हेतु हरियाणा की साहित्यिक संस्था विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति (रजि 02314) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर के सम्मान समारोह में विलक्षणा समाज सारथी सम्मान 2018 से सम्मानित किया जाएगा। रिखब जी को डॉ सुलक्षणा जी एवं विकास शर्मा जी ने चयन की सूचना 'प्रेषित की।

भारतवर्ष की ख्यातिनाम विभूतियों को इस सम्मान के लिए विशेषतौर पर चुना गया है। यह सम्मान समारोह रोहतक हरियाणा प्रदेश में 10 जून 2018 को होगा । कार्यक्रम के होंगे मुख्यातिथि हरियाणा सरकार के परिवहन मंत्री श्री कृष्ण लाल पंवार व अध्यक्षता नरेन्द्र मोदी विचार मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष रवि चाणक्य करेंगे। समारोह में बॉलीवुड एक्टर हरियाणा की आन बान शान अर्जुन पंडित,गंगाजल, लगान,ट्यूबलाइटजैसी फिल्मों में अपने अभिनय का लोहा मनवा चुके यशपाल शर्मा विशेष अतिथि होंगे। समारोह में दादा जगन्नाथ रणबीर सिंह बडवासनी यशपाल शर्मा अभिनेता,राकेश जी बनपुर , विकास कुमार, विकास पाह सोरजी विशेष आमंत्रित हस्तियाँ होंगी।

आधार

गर जीवन में आज छाई है बहार,
तो पिता ही है इस मूल का आधार.
उंगली पकड़ चलना है सिखाया,
पर कभी न छोड़ा हमें बीच मझधार.
माँ सुनाए लोरी रात लाख मगर,
तर्ज पर पिता का भी है अधिकार.
ज्ञान अक्षरों का हमें कराया,
कभी न जताया इसका आभार.
खुद के सपनो को जिसने भूलाया
हम आगे बड़े बनाए नया संसार
माँ की महिमा है जग में ऊँचा स्थान
पर शायद पिता के त्याग को दिया है बिसार
आओ सब मिल बैठ करे विचार,
'हर्ष' कैसे उतारे पिता का उपकार.

प्रमोद कुमार 'हर्ष'

खोजना होगा अमृत कलश

गुलाबचन्द पटेल

परिचय–गांधी नगर निवासी गुलाबचन्द पटेल की पहचान कवि,लेखक और अनुवादक के साथ ही गुजरात में नशा मुक्ति अभियान के प्रणेता की भी है। आपकी कहानियाँ अनुवादित होने के साथ ही प्रकाशन की प्रक्रिया में है।

राजकुमार जैन 'राजन' का प्रस्तुत काव्य संग्रह खोजना होगा अमृत कलश= प्राप्त करने का सौभाग्य मिलने से हमें बहुत खुशी हुई है।

देव-दानव अगृत कलश के लिए एक दुसरे से लड़ाई कर रहे थे। इसे प्राप्त करने की स्पर्धा चलती थी। हमें कोई संघर्ष नहीं करना पड़ा है और देवो की तरह अमृत कलश मेरे हाथों में पहुँच गया है।

यह कविता संग्रह से एक बार जरुर अमृत पीना होगा। इस में अंधकार से प्रकाश की ओर ले जानेवाली ये रचनाए हमें प्रेरित करती है। हमरा आत्म विश्वास बढ़ाती है। सामाजिक, आर्थिक, प्राकृतिक, सामाजिक परम्पराओ में पनप रही विषमताओं के प्रति आक्रोश है। हताश और हरे हुए व्यक्ति को प्रेरित करती ये कवितायें आज के संघर्षमय जिन्दगी खोते हुए रिश्तों के मूल में ठुकराघात करती है। अंधकार से प्रकाश की ओर आगे बढ़कर जीवन में एक नया सूरज उगाकर सहायता प्राप्त करने प्रेरित करती ये कवितायें बहुत उत्कृष्ट है। भारतीय लोकहित की ओर कविता के माध्यम से इशारा भी किया है।

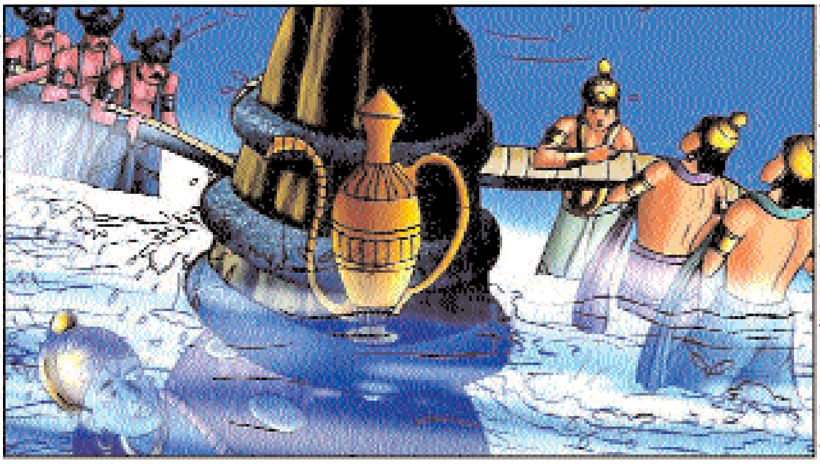

इनकी कवितायें आशा और विश्वास जगाती है। कवि के कला रेखांकन भी बहुत सुंदर है। राजन में संवेदना बहुत भरी पड़ी हुई है तभी तो इतनी संवेदनशील रचना का जन्म हुआ है। इसके कारण सामाजिक मूल्यों, सांस्कृतीक, राजनितिक, आर्थिक और पुराने समय से लेकर वर्तमान समय तक अपने दिव्य द्रष्टि इसे एक नया मार्ग दिखाती ये कवितायें बहुत प्रेरक है। में इन्हें अपने दिल से पवित्र मन से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

कविताओं का विवरण देनेका और किसी किताब के बारे में अपना मत व्यक्त करने का मेरा यह प्रथम प्रयत्न आप सभी को पसंद आएगा ऐसी आशा करता हूँ। अगर इसमें कोई गलती हो तो क्षमा याचता हूँ।

अमृत कलश में लाखों संकल्प कविता में कवि ने आज के युग की चिंताओं का जिक्र किया है। द्रोणाचार्य, अभिमन्यु और अर्जुन महाभारत के पात्रों का उदहारण देकर आज के हस्तिनापुर की बातें की है और आजके युग में दुर्योधनों के कमी नहीं है ये बात कविता के माध्यम से की गई है।

आज मानवता और विश्वास खो गये हैं। आज-कल खुनी खेल जो खेले जा रहें हैं वो इतिहास बन जायेगा। ऐसी संभावना कवि ने देखी है, ये बन जायेगा इतिहास कविता से ये संभावना निकल आई है।

इन्सान को तुटते हुए दर्पण को देखना है, सर्वथा जेसे सार्थकता नहीं खोता। इस तरह आज दर्पण बनोगे तो सार्थकता प्राप्त होगी ये बात सार्थकता कविता में लिखी गई है।

यह धरती पर अमृत के जगह विष बीज किसने बोया? इसकी चिंता कवि ने प्रकट की है।

कहीं बम धड़ाके, विधवाओं के चीत्कार, पशुओं का विलाप, लूंट हत्या, बलात्कार की घटनाएँ देखकर कवि ने अपील की है कि आओ हम सब मिलकर जिन्दगीका गीत लिखे ये बात जिन्दगी का गीत में राजन जी ने की है।

साँझ के अंधेरों में चांदनी की शीतलता, धर्मशालाओं में गुरुओं की वाणी को ढूँढने में इन्सान असमर्थ है। आज सूर्य किरणों की चमक ने इन्सान को पक्षिओं का कलरव, फूलों का रंग, मिट्टी की गंध, गीतों की हृदय को छू लेने वाली वाणी आज अंत हिन यात्रा का अनुभव कराता है ये अंत हीन अनुसंधान कविता में दिखाया गया है।

अंधकार के बीज कविता में अंधकार के सामने लड़ने के लिए इन्सान को अपना अंतर्मन की मशाल जलाने को आह्वान किया गया है।

फूलों की मुस्कराहट, हवा की खुशबु, चांदनी के पांव के घुंघरू और संस्कृति को ले जाने वाले 'तुम कौन हो'?. आजकल मरनेवालों से मरवाने वाले बड़े होते हैं।

पतझड़ से डरने का मतलब, जिन्दगी की दौड़ में मिलती कठिनाईयां से नहीं डर कर एक हाथ में बसंत लेकर उसका सामना करने चलते रहने की बात कवि ने हाथ में बसंत कविता में की है।

आसमानी हवाओं की खुशबु, धीरे धीरे बहती नदी के कल कल, चिड़िया के चिहु चिहु के साथ मुस्कराहट और सूखे गुलाब के फुल की तरह तुटता हुआ विशवास, श्रद्धा को देखकर कवि व्यथित होता है। इसे नियति का क्रम मान के स्वीकार किया है।

मंजील की तलाश में कंटीला सफर में चलते हुए भी इन्सान कभी हारा नहीं है। वो रुक रुक कर संघर्ष के साथ चलता आगे बढ़ रहा है। हारा भी नहीं हूँ मैं कविता में देखने को मिलती है।

दादर पुल का उदहारण देकर कवि राजन ने हँसिये पर वह कविता में

लिखा है की पुल के नीचे एक निराश मन के साथ रोशनी का टुकड़ा ढुंढता, फटी पेंटवाला, स्वप्नों के घरोंदे से बुनता हुआ, अपमानित होता हुआ, जुल्म सेहता हुआ, खामोशियों के साथ रोशनी की तमन्ना के साथ चलते इन्सान का सुंदर वर्णन किया है।

स्वप्नों के साथ नई आशा लेकर, आती हुई सुबह शाम होते ही इच्छाएं मौन हो जाती है। इस लिए कवि राजन कहतें कि, समय के हाथ में रोशनी को लेकर धरती में इसे उगाओ, शब्द बीज खाद डालकर धैर्य रूपी पानी से सिंचन करने से तुम्हे सफलता जरुर प्राप्त होगी। ऐसा बोध 'अस्तित्व बोध' कविता में दिया गया है।

आत्मीय के स्थान पर मुखौटा के रुप में मिलते सफेद पोषाक के सेवक द्वारा चिर-हरण, इच्छा, लालसा, लोभ, प्रमाद, आस्था खो चुके इन्सान बन गया है, लेकिन प्रतीक्षा है की सूर्य के किरणों जैसी, गम जैसी आंधियां दूर करने के लिए आशा की लौ जलती रहेगी कविता में ऐसी कल्पना कवि ने की है।

स्वप्नों की पगदंडी पर चलते चलते आज इन्सान के पांव थम गये हैं। भौतिकता के मीठे विष में विश्वास गलत साबित होने लगा है। फिर भी वो चल रहा है, बढ़ रहा है सूर्य की तलाश में। कवि को आशा है कि जीवन में एक नई स्वप्नों की पगडंडी जरुर खुलेगी और सफलता प्राप्त होगी।

आज लोगों के जीवन में अजीब सी खामोशी, मौन और सन्नाटा है। अनाम, अन गिनत पीड़ा और प्रश्नों का डंक से समय कहीं खो गया है। कवि कहेते हैं कि सफलता के लिए आशा का पूरा सूरज अपनी हथेली में उगाओ जरुर सफलता प्राप्त होगी।

भाषणों के माध्यम से एक शतरंगी चाल वाला अभियान चलाया जा रहा है। घडियाली आंसू बहाया जा रहा है। गाँव के चौपाला से लेकर मंदिर, मस्जिद, धर्मशाला और संसद के गलियारों के तक बड़ी सावधानी से इन्सान इन्सान के बीच अलगतावाद पैदा कर के विष बांटा जा रहा है। इसलिये कवि 'राजन' के मन में सवाल उठकर बार बार कहता है कि ये दुनिया ऐसी क्यूं है? एक सवाल कविता में कवि ने कहा है की वही पुराना सवाल पूछता रहूँगा कि ये दुनिया ऐसी क्यूँ है।

आज इन्सान के कानों ने सुनना छोड़ दिया है। हृदय पत्थर सा हो गया है। झूठ कपट के वेश में रिश्तों को छलनी कर दिया है। इन्सानियत का रंग खो गया है। क्या यही है अच्छे दिन का बोध क्या यही है अर्थ युग का चमत्कार? कवि के मन में प्रश्न उठता है।

सूखे फूलों ने अपनी गंध को पकड़ रखी है। स्नेह का अभाव है। आज आशाओं के दीप बुझते जा रहे है। कोई सूखे गुलाब के फुलों से महसूस करें। क्यों अहंकार के सामने जंग नहीं छेड़ते हम? सूखे फूलों की गंध कविता में ये सुंदर बात कवि ने की है।

कवि ने बेरोजगार की पीड़ा बहु खुबी से व्यक्त की है। बेरोजगार को हमारी दुनिया का महत्व का अंग माना है। ऐसी बात कवि ने बेरोजगार कविता के माध्यम से की है।

नहीं देखा मैंने समुद्र फिर भी मेरे मन को कोई छूता है तो मेरे मन के पेहरुओं को लहरे उठाकर फेंक देती है। तूफान बाद समुद्र खामोश हो जाता है। नहीं देखा समुद्र फिर भी उसकी गर्जना को महसूस करता हूँ।

अंतहीन आकाश में विश्वास की बाँहों में अजीब सी खामोशी और सन्नाटा को चिरते हुए मन में उठतें है, इन सांसों से गुजरते है। भविष्य को एक मजबूत समाज की तलाश पुरी करने के लिए आँखों में अंकुरित स्वप्नों को खींचने के लिए तुम्ही ने तो कहा था कि बसंत जरुर आएगी एक दिन। कवि कहते है कि प्यार और जीवन की परिभाषा करते कभी गाढ रिश्ते भी अपना अर्थ खो चुके हैं। तुटते हुए मूल्यों की आंधी से आज संबंधों का वृक्ष हिल रहा है।

कवि राजन कहते हैं कि सूरज ढलने के बाद अँधेरा हो जाता हैं। फिर सुबह में रोशनी आती है। इस लिए अँधेरे से डरो मत। फसलें शांति की उगायेंगे तो प्यार की जिन्दगी शुरु होगी। इस लिए भागे न कोई हार के।

तुटी हुई खटिया पर खाँसती लेटी हुई माँ, सयानी हो रही मुनिया, किताब और पेन के लिए जिद करता मुन्ना को देख कर अनाज मंडी में कंधे पर बोरियां ढोता, बीडी के कश में धुंआ उठाता, पसीने से तर-बतर वह आदमी निराश नहीं है।

संस्कृति के पोषक इस देश में द्रौपदी के चीरहरण आज भी हो रहे है। आदमी नपुंसक हो गया है। आदमी तुम कायर हो। कवि कहते है कि संस्कृति रो रही है। समय शरमिंदा है। आज नर बीज खो गया है।

प्रकृति के तांडव के कारण उतराखंड, कभी नेपाल, कभी कश्मीर में मौत की बरसात हो रही है। आज भरे पेटों के जूठन भूख से बिलखने लगा है जीवन। आतंक के छाया को दूर करने के लिए रोशनी के पेहरूओं को जलती मशाले लेकर नया प्रकाश फेलाने की सीख कवि राजन रोशनी के पेहरुओं कविता में दे रहे है।

सृष्टि में सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख आता है। ये निरंतर प्रक्रिया चलती है। नन्ही कोपलें फूटती है और सन्देश देती है कि एक नया संघर्ष उत्कर्ष लाती है।

अंधकार में होती हल-चल को मिटाने के लिए उजाला फेलाने को सूरज की इजाजत लेकर एक किरण हमारी जिजीविषा को पुनर्जीवन देगी।

इस देश की बदहाल प्रजा को बड़े बड़े स्ट्रीट लाईट की रोशनी जेसे जगमगाते आश्वासन मिलते हैं। एक मुठ्ठी होंसले में रोशनी सजाते अंधकार को पराजित करने के लिए एक सूरज फिर उगाना होगा कविता में सुझाव दिया गया है। एक सूरज फिर उगाना होगा।

रोशनी में रहकर भी अंधकार में जी रहे इन्सान आज मरने से पहेले मरना चाहता है। समय के सूरज को अपने हाथों हिलाकर बोध कराता सूरज से एक नई सुबह जरुर होगी।

'बचपन की बरसात' कविता में कवि कहते है। मुशलाधार बारिश में चूं रही पानी की टप टप को कवि ने अमृत कलश में ढोया है।

खोजना होगा अमृत कलश कविता में राजन जी बताते है कि रंग बदलती दुनिया में दर्द का रंग नहीं बदल पाता है। इन्सान इतना बौना हो गया है कि अपना कहा ही भूल गया है। विश्वास भटक गया है। मुस्कूराहट भीड़ में खो गई है। संबंधों पर पहरा है। इंसानियत बहरी है।

जीवन मूल्य अंधकार में खो गया है। सब तरफ मायाजाल में जज्बात और भावनाओं की कोई किंमत नहीं है इस दुनिया में।

कवि कहते हैं कि, सपनों की दुनिया से बाहर निकल कर यातना

शिविर से फैले जाल को अब तोड़ना होगा ऐसा आह्वान करते है। धरा पर जो प्यार की खुशबु मानवता के घर आंगन को रोशन करे, सद्भाव के दिए जलाए, ऐसा अमृत कलश खोजना होगा। उदय होता सूरज सत्यम शिवम् सुन्दरम का प्रकाश फिर से फैला देगा।

राजकुमार राजन बाल साहित्य के क्षेत्र में विस्तार से काम कर रहे हैं। 30 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित है। सौ से अधिक पुरस्कार प्राप्त किये है। साहित्य और समाज के प्रति ऐसी उमदा भावना बहुत कम लोगों में दिखाई देती है। राजन जी युवा कवि है। साहित्य से समभावना, रचनात्मक, सामाजिक सद्भावना और समाज के प्रति संवेदना प्रकट करते कवि है।

मैंने विस्तार से संग्रह की प्रत्येक कविताओं का विवेचन पाठकों के लिए संक्षिप्त में देने का प्रयास किया है। जिस कविता का विवेचन हम से छूट गया है वो कवितायें पाठकों के लिए विवेचन करने हेतु मैंने छोड़ दिया है।

अंत में यही कहूँगा कि राजकुमार जैन 'राजन' बहुत इमानदार, मानवतावादी, समाज उत्प्रेरक और एक सैनिक की भूमिका निभाते है। वर्तमान के अंधेरों में भी ये कवि जाग रहा है और काम के लिए प्रश्न खोज रहा है। आप उनकी कविताएँ पढ़ेंगे तो आपको भी ये कवितायें सार्थक लगेगी ऐसा हमें विश्वास है।

मेरी दिल से हार्दिक बधाई एवं शुभ कामनाएं श्री राजकुमार जैन राजन जी को अर्पित है।

अब तो सहन नहीं होगा

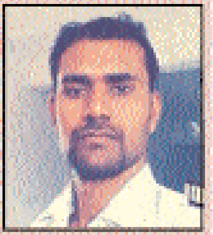

अब तो सहन नहीं होगा
किए वार पर वार पाक ने
हम सहकर मानवता करते
पर अब रहम नहीं होगा अब तो सहन नहीं होगा।
मेरा बन्धु शहीद पड़ा है
देख दुखित भारत माता है
लहू से रंजित धरा हो रही
प्रतिशोध ही मेरा धरम होगा ।
अब तो सहन नहीं होगा
अब बारी है प्रतिशोध की
अपनी औकात प्रबोध की
दूर दंभ भरम होगा अब तो सहन नहीं होगा।
कायराना है हरकत तेरी
लड सके कहा हिम्मत तेरी
बिनाश तेरा निश्चय होगा अबतो सहन नहीं होगा।

-विन्ध्य प्रकाश मिश्र विप्र

हिन्दी जो अनिवार्य विषय ले वही लोकसेवा की परीक्षा दे सके - बोधसिंह भगत

पुस्तक विमोचन के साथ सुदामा कुटीर का उदघाटन सम्पन्न

बालाघाट । नगर में मातृभाषा उन्नयन संस्थान के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष संजय जैन कोचर की पुस्तक इतिहास में हिन्दी आन्दोलन का विमोचन निहारीका में स्थानीय सांसद बोधसिंह भगत के मुख्य आतिथ्य में हुआ जिसमें सांसद बोधसिंह भगत ने हिन्दी को स्थापित करने के लिए उसे अनिवार्य विषय में सम्मिलित करने का कहा।

बालाघाट सिवनी के सांसद बोधसिंह भगत के मुख्य आतिथ्य तथा अध्यक्षता मातृभाषा उन्नयन संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अर्पण जैन %अविचल% के साथ नगर परिषद के अध्यक्ष अनिल धुवारे, गायत्री शक्तिपीठ के जिला संयोजक महेश खजांची, राष्ट्रीय मानव अधिकार परिषद महासंघ से राष्ट्रीय महासचिव डॉ. प्रीति सुराना, वरिष्ठ साहित्यकार ज्ञानचंद जी बाफना, जैन श्वेतांबर संघ के कपूरचंद जी कोठारी के विशेष आतिथ्य में संजय जैन कोचर की पुस्तक %इतिहास में हिन्दी आन्दोलन% का विमोचन हुआ एवं कोचर के कार्यालय सुदामा कुटीर का उदघाटन अतिथियों द्वारा फीता काट कर किया गया।

सांसद भगत जी ने हिन्दी आन्दोलनो के समर्थन में कहा कि हिन्दी को देश में स्थापित करने के लिए शासकीय सेवाओं में जिन लोगों का अनिवार्य विषय हिन्दी हो वही भाग ले सके, यदि ऐसा व्यवस्था बन गई तो निश्चित तौर लोगों की आदत होगी कि हिन्दी भाषा को अनिवार्य विषय में शामिल करेंगे। वहीं संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. जैन ने सांसद भगत जी से संसद में हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की मांग रखने का अनुरोध किया। गौरतलब है कि सांसद बोधसिंह भगत राजभाषा प्रचार समिति के सदस्य भी है।

इसी दौरान किरण दिनेश चौरड़िया व अनामिका संजय नाहटा ने हिन्दी में हस्ताक्षर करने का प्रण लिया इसलिए संस्थान द्वारा भाषा सारथी सम्मान दिया गया। आयोजन में सैकड़ो लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन अलका चौधरी ने किया व आभार डॉ. प्रीति सुराना ने व्यक्त किया।

-राखी रघुवंशी

कुप्रबंधन की थाली में पोषाहार!

प्रदेश में कुपोषण की स्थिति में सुधार हो गया हो, ऐसा केवल सरकारी रिपोर्ट के आंकड़ों में दिखाई देता है, असलियत में नहीं। भोपाल में पिछले दिनों अपने जमीनी कार्य के दौरान इस कारगुजारी का जीता-जागता उदाहरण देखने को मिला है। पलायित होकर आये परिवार में मात्र 06 माह की बच्ची खुशी, जिसका वजन मुश्किल से 03 किलो, बहुत अधिक बीमार है। खतरनाक स्तर के कुपोषण की शिकार है। वजन सिर्फ 03 किलोग्राम रह गया जबकि वजन होना चाहिए करीब 6 किलोग्राम से ज्यादा।

परिवार में तीसरी बच्ची वो भी कुपोषण की शिकार और माँ बाप निर्माण श्रमिक. जिनके सामने पूरे परिवार के पेट को भरने के अलावा अन्य कोई चिंता बेमानी हो जाती है. उनके अनुसार बच्ची बस जन्म से ही कमजोर है. उन्हें यह भी जानकारी नहीं है की बच्ची को गंभीर कुपोषण है और शहर एवं गांवो में ऐसे बच्चों के मुफ्त इलाज की सारी व्यवस्थाएं सरकर ने करवा रखी हैं. खैर ! शहर में उषा कार्यकर्ता भी मौजूद है, लेकिन उनके अनुसार परिवार उनकी बात को समझ ही नहीं रहा है. परिवार को तो बस अपने काम से मतलब है. इसमें साफ तौर पर दिख रहा था की कार्यकर्ता ने अपनी तरफ से एक खानापूर्ति प्रक्रिया की है. बच्ची की मां से जब हम मिले तो वह भी अपनी उम्र के अनुसार बेहद कमजोर दिखाई.

ये बात पक्की है कि जो आंकड़े महिला एवं बाल विकास विभाग तैयार करता है, उनमें खुशी का नाम शायद ही दर्ज हो। हम सभी ने मिलकर परिवार की समझाईश की और उन्हे सरकारी अस्पताल पोषण पुनर्वास केंद्र जाने के लिए राजी किया. आश्चर्य की बात ये है कि जन्म से लेकर अब तक खुशी को केवल 02 ही टीके लगे हैं. संभव है, गर्भ के समय मां को भी टीके नहीं लगे हों। अस्पताल जाने के बाद पता चला की माँ को भी टीबी की बीमारी है. डॉक्टर के अनुसार पहले माँ का 06 माह इलाज होगा फिर बच्ची का. जिस बच्ची के शरीर में से हड्डियां बाहर झांक रही हो, जो अपनी माँ का दूध भी कमजोरी के कारण पी नहीं पा रही हो, उसके उपचार के दिन माँ के कारण बढ़ा दिए गए। यह स्थिति देखकर सरकारी मशीनरी और स्वास्थ्य विभाग के लोगों में कितनी संवेदना बची है, यह समझ में आता है। खुशी के पिता भी देखने में वैसे भी कमजोर लगते हैं. उन्ही के अनुसार खुशी का जन्म अस्पताल में हुआ। इसके बाद कुछ 02 या 03 माह की खुशी को लेकर काम की तलाश में मप्र के सतना जिले से यह परिवार भोपाल आ गया. माँ लंच के समय आकर खुशी को स्तनपान कराती है, बाकी समय खुशी सोती ही रहती है. अभी तक सभी के इलाज में कई हजार पैसा निजी अस्पतालों में खर्च हो गया है.

ये खबर निश्चित ही चिंता बढ़ाने वाली है कि पिछले साल की तुलना में वैश्विक भुखमरी सूचकांक (ग्लोबल हंगर इंडेक्स- जीएचआई) में भारत तीन पायदान नीचे उतर गया है। वर्ष 2016 में इस सूचकांक में भारत 119 देशों में 97वें स्थान पर था। अब 100वें नंबर पर है। क्या यह तथ्य हमारे लिए गहरी चिंता का कारण नहीं होना चाहिए कि इस सूचकांक में उत्तर कोरिया, बांग्लादेश और इराक जैसे देश भी भारत से ऊपर रहे हैं? जीएचआई चार संकेतकों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया जाता है। ये हैं- आबादी में कुपोषणग्रस्त लोगों की संख्या, बाल मृत्युदर, अविकसित बच्चों की संख्या और अपनी उम्र की तुलना में छोटे कद और कम वजन वाले बच्चों की तादाद। वॉशिंगटन स्थित इंटरनेशनल फूड पॉलिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट (आईएफपीआरआई) द्वारा तैयार भुखमरी सूचकांक में भारत पहले से काफी नीचे आता रहा है। इसकी प्रमुख वजह यहां कुपोषणग्रस्त बच्चों की बड़ी संख्या है।

मध्य प्रदेश में कुपोषण के कारण बच्चों की मृत्युदर को लेकर जो स्थिति है, वह काफी गंभीर और चिंताजनक है। विधानसभा में स्वयं सरकार द्वारा प्रेषित की गई रिपोर्ट बताती है कि करीब 1 लाख 30 हजार बच्चे ऐसे हैं जो कुपोषित हैं और स्वास्थ्य के सामान्य पैमाने से काफी नीचे हैं। मध्यप्रदेश भौगोलिक रूप से एक ऐसा राज्य है जिसमें गेहूं, सोयाबीन और धान जैसे पौष्टिक अनाज का प्रचुर उत्पादन होता है। ऐसे में सवाल ये उपजता है कि आखिर इसी माटी में जन्मे बच्चे कैसे कुपोषित रह जाते हैं? दरअसल, खेतों से उपजे अन्न और भूख से बिलखते बच्चों की बीच बिचौलियों, दलालों और प्रशासन का तंत्र खड़ा है। यह स्थिति अनाज के मामले में संपन्न एक प्रदेश के लिए अच्छी नहीं कही जा सकती और उस प्रदेश के लिए बिलकुल भी नहीं जो बीते चार साल से लगातार राष्ट्रीय स्तर का कृषि कर्मण अवार्ड जीतता आ रहा हो। निःसंदेह ये अवार्ड खेती में उन्नत प्रयोगों, बेहतर उत्पादन और अच्छे नतीजों के लिए दिया गया है, लेकिन यदि यह राज्य अपने ही बच्चों का कुपोषण नहीं मिटा पाता है तो फिर ऐसे अवार्ड पा लेने का औचित्य संदेह के घेरे में आ जाता है। ऐसा नहीं कि मध्य प्रदेश सरकार ने इस स्थिति से निपटने के लिए कोई उपाय नहीं किए। फिर भी प्रशासनिक तंत्र में वो कसावट, वो बेचैनी और वो तत्परता दिखाई नहीं देती जो प्रदेश में कुपोषण के आंकड़े को तेजी से कम करके

शून्य की ओर ले जाए।

हालांकि केंद्र व राज्य सरकारें बच्चों की भूख और कुपोषण पर सतत प्रयासरत हैं। तमाम जिला अस्पतालों में कुपोषण से निपटने के हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा संचालित आंगनवाड़ी केंद्र भी बदस्तूर काम कर रहे हैं। लेकिन लक्ष्य फिर भी दूर है। एक गैर सरकारी संगठन की रिपोर्ट के मुताबिक प्रदेश में महज 23 प्रतिशत बच्चे ही आंगनवाड़ियों में दर्ज हैं और इन्हीं के जरिये बच्चों के लिए पोषाहार की व्यवस्था भी की जाती है।

नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे के चौथे चरण (एनएफएचएस-4) के आंकड़े भी बच्चों के स्वास्थ्य से जुड़े कुछ तथ्यों को उजागर करते हैं। इस सर्वे में पाया गया कि मप्र में अब भी 30 प्रतिशत महिलाओं का विवाह 18 वर्ष से कम आयु में हो जाता है। ग्रामीण इलाकों में ये मामले 35 फीसदी से भी अधिक हैं। महज 14 फीसदी ग्रामीण महिलाएं ही मैट्रिक स्तर तक शिक्षित हैं। पांच वर्ष तक के आयुवर्ग में बाल-मृत्युदर प्रति 1000 बच्चों पर 65 है जो कि ग्रामीण इलाकों में बढ़कर 69 हो जाती है। प्रदेश भर में 6 माह से लेकर 5 साल तक के 68 प्रतिशत बच्चे एनिमिया के शिकार हैं। पूरे प्रदेश की 54 फीसदी गर्भवती महिलाएं रक्ताल्पता के हालात में होती हैं। नवजात बच्चों के स्वास्थ्य पर मां के अस्वस्थ या कमजोर होने का सीधा असर पड़ता है। यदि मां शिक्षित और जागरुक नहीं है तो बच्चों में कुपोषण या किसी अन्य गंभीर बीमारी के प्रति लड़ना थोड़ा और मुश्किल हो सकता है।

दरअसल, हमें यह भी समझना होगा कि कुपोषण एक जटिल समस्या है और इसका सीधा संबंध कुपोषित बच्चों के परिवारों की आजीविका से भी है। वास्तव में जब तक गरीब परिवारों के पास आजीविका का कोई साधन नहीं है, तो कुपोषण मिटाना नामुमकिन है। सरकार और समाज को और दृढ़-इच्छाशक्ति दिखानी होगी।

नई राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों का दायरा बढ़ाने पर जोर दिया गया है। अभी इन केंद्रों में रोग प्रतिरक्षण, प्रसव पूर्व निगरानी और कुछ ही अन्य रोगों की जांच होती है। लेकिन नई नीति के तहत इनमें गैर-संक्रामक रोगों की जांच भी होगी। साथ ही नई नीति में जिला अस्पतालों के पुनरुद्धार पर विशेष जोर है। स्वास्थ्य नीति के उद्देश्यों को पाना तभी संभव होगा, जब केंद्र और राज्य सरकारें अपना स्वास्थ्य बजट बढ़ाएं। स्वास्थ्य राज्य-सूची का विषय है। ऐसे में नई नीति का सफल होना राज्य सरकारों के उत्साह और उनकी गंभीरता पर निर्भर है। बेहतर स्वास्थ्य ढांचे के निर्माण के लिहाज से भारत की स्थिति गई-बीती है। हमारे यहां स्वास्थ्य केंद्र एवं राज्य, दोनों का विषय है। केंद्र सरकार नीतियां बनाने का काम करने के साथ चंद अस्पतालों का निर्माण करने तक सीमित है। स्वास्थ्य ढांचे में सुधार के मामले में ज्यादा जिम्मेदारी राज्यों की है। वे अपने दायित्वों के निर्वहन के प्रति सजग नहीं हैं.

भारत में स्वतंत्रता के बाद से सरकारी नीतियों में स्वास्थ्य एवं शिक्षा को अपेक्षित महत्व नहीं मिला। नतीजतन, इन दोनों मोर्चों पर देश पिछड़ी अवस्था में है। सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल व्यवस्था इतनी लचर है कि इलाज के लिए निजी अस्पतालों पर निर्भरता बढ़ती चली गई है। इसकी वजह से एक तो स्वास्थ्य सेवाएं गरीबों से दूर हुई हैं, दूसरी तरफ उपचार संबंधी कई विकृतियां भी उभरी हैं। मसलन, निजी अस्पतालों में मरीजों की गैरजरूरी जांच तथा अनावश्यक दवाएं देने की शिकायतें बढ़ी हैं। ऐसे में सरकारी अस्पतालों का तंत्र फिर से खड़ा हो, तो उससे बेहतर बात कोई नहीं होगी। साथ ही स्वास्थ्य सर्व सुलभ बन सके, इसके लिए राज्य सरकार को सूक्ष्म स्तर पर एक्शन प्लान तैयार कर उसके क्रियान्वयन को सुनिश्चित करना होगा.

लघु कथा

वो लड़की

आज आफिस के लिए घर से निकलने में कुछ देर हो गई तो लगा कहीं आठ बजे वाली बस निकल न गई हो । खैर, तेज कदमों से चलता बस स्टैंड पहुंचा तो बस चलने ही वाली थी । पहली सीट पर रोज की तरह तिवारी जी विराजमान थे । हम दोनों रोज एक साथ ही जाते थे । मैं भी उनके बगल में बैठ गया । बस सरकने लगी थी कि तभी वो लड़की कान पर मोबाईल फोन लगाए भागती सी बस में चढ़ी । वो लड़की मैंने इसलिए कहा क्यों कि वो भी रोज इसी बस से जाती थी और ऐसे ही फोन लगाए चलती बस में चढ़ती थी । हमारे तकरीबन 45 मिनट के सफर में फोन उसके कान पर लगा ही रहता । यूं तो तिवारी जी को उसके फोन से रोज ही चिढ़ होती थी लेकिन आज न जाने क्यों, बोले बिना नहीं रह सके,श् लीजिए, आ गई । आज फिर फोन । इस मोबाईल फोन ने तो आज की पीढ़ी का बिल्कुल सत्यानाष कर दिया है । जिसे देखो हर वक्त इसी को चिपका हुआ है । ब्वाय फ्रैंड से बात करने से फुरसत मिले तो टाईम पर बस पकड़े न ! रोज का यही सीन है इसका ! हुंह ।

लड़की ने शायद उनकी बात सुन ली थी । आज की पीढ़ी की थी न। सो फोन बीच में काट कर उनकी ओर मुखातिब होते हुए बोली,श् अंकल, आप मेरे पापा की उम्र के हैं लेकिन फिर भी कहना चाहूंगी कि अगर आप किसी के बारे में नहीं जानते तो यूं ही कुछ नहीं बोलना चाहिए । मैं यहां अपनी किसी रिश्तेदार के पास रहती हूं और नौकरी के लिए, जैसा कि आप देखते ही हैं, रोज जाती हूं । प्राईवेट नौकरी है, सो काम का बोझ कुछ ज्यादा ही रहता है । फिर लौट कर घर का कामकाज भी देखती हूं । सुबह भी घरेलू काम के कारण निकलने में देर हो ही जाती है । मेरे मां-पापा दूसरे शहर में हैं, सो उनसे बात करने के लिए यही एक वक्त मिलता है । इसलिए आप मुझे रोज फोन कान पर लगाए देखते हैं । जरुरी नहीं कि फोन पर हर लड़की अपने ब्वाय फ्रैंड से या हर लड़का अपनी गर्ल फ्रैंड से ही बात करे । और भी कई कारण होते हैं । थोड़ा नजरिया बदलिए अंकल। श् तिवारी जी फिर कुछ नहीं बोले ।

प्रमाणित किया जाता है कि संलग्न रचना पूर्णतया मौलिक है और ये कहानी या इसका कोई भी अंष कहीं से भी नहीं चुराया गया है।

-विजय कुमार

पश्चिमी बंगाल

शेरनी के पंजे में लोकतंत्र

राकेश सैन

जुझारु राजनीति, संघर्षशील व सादे जीवन के चलते पश्चिमी बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बेनर्जी को 'बंगाल की शेरनी' के नाम से भी जाना जाता है। बौद्धिक व सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध बंगाल में लगभग 34 साल तक चले वामपंथी राज का जिस तरह ममता ने तख्तापलट किया और तानाशाही से लोहा लिया उससे उन्होंने अपनी इस संज्ञा की गरिमा को नए आयाम भी दिए परंतु अब कहीं न कहीं लगने लगा है कि इस शेरनी के पंजे लोकतंत्र का गला घोंटते जा रहे हैं। बंगाल के पंचायत चुनावों में जिस तरह से हिंसा हुई और लोकतंत्र की मर्यादाओं को तार-तार किया गया उससे बंगाली समाज की छवि दागदार हुई। विश्वगुरु रविंद्रनाथ टैगोर, बंकिमचंद्र चैटर्जी जैसे विद्वानों, स्वामी विवेकानंद जी जैसे महापुरुषों व सुभाषचंद्र बोस, खुदीराम बोस जैसे क्रांतिकारियों की भूमि आजकल हिंसा, रक्तपात, सांप्रदायिक उन्माद व लोकतंत्र की हत्या के लिए चर्चा में है।

चुनाव आयोग के आंकड़ों के अनुसार, राज्य के 621 जिला परिषद् और 31803 ग्राम पंचायत की 48650 सीटों पर हुए पंचायत चुनावों में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस ने अपार सफलता मिली है। तीन स्तरों पर हुए चुनावों में इन सीटों में 34 प्रतिशत सीटों पर तो निर्विरोध चुनाव हुए जो स्वभाविक तौर पर सत्ताधारियों के पक्ष में गए। चुनावों में तृणमूल कांग्रेस ने भारी भरकम सफलता हासिल की जबकि भारतीय जनता पार्टी दूसरे, वामपंथी तीसरे स्थान पर रहे और कांग्रेस गधे के सींगों की तरह गायब सी हो गई। अगर चुनाव निर्विवादित होते तो आज ममता को चारों ओर से बधाई मिल रही होती परंतु उनकी तो आलोचना शुरु हो गई है। पूरी चुनावी प्रक्रिया में हिंसा, सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग, मतपेटियों की लूटपाट, मतपत्रों को तालाब में फेंकने, आगजनी, मतदाताओं को पीटने, डराने धमकाने की इतनी घटनाएं हुईं कि पिछली विगत 80-90 के दशक में बिहार में होने वाली चुनावी गड़बड़ियां स्मृति पटल पर उभर आईं। पूरे प्रदेश के 56 मतदान केंद्रों में हिंसा की शिकायतें दर्ज हुईं और 131 हिंसा, आगजनी, तोड़फोड़ के केस सामने आए। इस हिंसा में लगभग 13 लोगों की कीमती जानें गईं और कई दर्जन घायल हुए। देश में एक ओर जहां चुनावी प्रक्रिया काफी सीमा तक स्वच्छ हो चुकी है वहीं बंगाल जैसे जागरुक जनमत वाले राज्य में हिंसा की खबरों ने इस चिंता में डाल दिया कि कहीं बंगाल की शेरनी के हाथों लोकतंत्र दम न तोड़ दे।

वैसे बंगाल में हिंसा नई घटना नहीं, विभाजन पूर्व मुस्लिम लीग की प्रत्यक्ष कार्रवाई में हुई हजारों हिंदुओं की हत्याएं को छोड़ भी दें तो भी साल 1977 से लेकर 2010 तक 28000 लोग राजनीतिक हिंसा का शिकार हुए बताए गए हैं। ममता से पूर्ववर्ती वाम सरकारों को राज्य में हिंसा का सूत्रपात करने का बहुत बड़ा श्रेय दिया जाता है। ठीक है कि राज्य में पंचायत चुनावों व भू-सुधारों की वामदलों ने केवल शुरुआत ही नहीं की बल्कि इन्हें इतने अच्छे तरीके से चलाया कि स्थानीय स्तर पर सफल लोकतंत्र के रूप में दुनिया भर में इसकी उदाहरण दी जाने लगी। पर जैसे-जैसे सीपीआई में विभाजन सहित अनेक कारणों से वामपंथियों के खिलाफ जनाक्रोश बढ़ता गया तो सत्ताधारी अपना दबदबा बनाए रखने को हिंसा का सहारा लेने लगे। परेशानी तब पैदा हुई जब विपक्ष के रूप में कांग्रेस भी लुप्त होने लगी और केंद्र में सत्ता के लिए वामदलों पर निर्भर होने लगी। इससे यहां के लोग पूरी तरह कामरेडों की दया पर निर्भर हो गए। इस बीच कांग्रेस से अलग हो कर जुझारु नेता के रूप में ममता बैनर्जी ने बंगाली मिट्टी, मानुष के नाम पर तृणमूल कांग्रेस का गठन किया। एक समय वे राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठजोड़ का हिस्सा भी रहीं और अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में रेल मंत्री का पद संभाला लेकिन देश में छिड़ी धर्मनिरपेक्षता की बहस के बीच वे राजग से भी अलग हो गईं। उन्होंने बंगाल की तंगहाली, वाम सरकार की उद्योग विरोधी नीतियों, हिंसा की राजनीति के खिलाफ मोर्चा खोला और 34 साल पुराने लाल दुर्ग को ताश के पत्तों की भांति छिन्न-भिन्न कर दिया। लेकिन सत्ता में आने के बाद ममता भी वामपंथियों की उन्हीं नीतियों पर चलने लगीं जिनके खिलाफ उन्हें जनादेश मिला।

प्रदेश में राजनीतिक हिंसा व दमन की नीति जारी रही है, अंतर केवल इतना आया कि गुंडे पाला बदल कर तृणमूल कांग्रेस में आ गए। यह राजनीतिक हिंसा की ही बानगी है कि साल 2015 में इस तरह के 139 और अगले साल 91 मामले सामने आए। ममता सरकार किसी उद्योग को राज्य में आकर्षित नहीं कर पाईं तो राजनीतिक गुंडागर्दी बहुत बड़ा उद्योग बन कर सामने आया। सरकारी संरक्षण में यह दबंग सार्वजनिक व निजी संपत्तियों पर कब्जे सहित अनेक अपराधिक वारदातें करने लगे। बदले में सत्ताधारी दल के लिए उसी तरह वोट जुटाने लगे जिस तरीके से इन पंचायत चुनावों में मतपत्र लूटे गए हैं। दंगाईयों के सामने पुलिस प्रशासन की बेबसी बताती है कि पंचायत चुनावों में हुई हिंसा इन्हीं समर्थकों ने ही की। इस बीच राज्य में भारतीय जनता पार्टी राज्य में एक शक्ति के रूप में उभर कर सामने आरही है, जिसके साक्षी पंचायत चुनाव खुद भी हैं। अपनी सत्ता बचाने के लिए तृणमूल, पुरानी प्रतिष्ठा पाने के लिए वामपंथी दिनबदिन हिंसक हो रहे हैं।

चिंता की बात यह है कि देश में हुआ लोकतंत्र का यह चीरहरण बौद्धिक विमर्श से गायब है। हर छोटी-बड़ी घटनाओं पर पूरी ताकत से दांत कटकटाने वाले बुद्धिजीवी बंगाल की हिंसा पर दंतरोगी की भांति मौन हैं। ममता स्वयं को धर्मनिरपेक्ष होने का दावा करती है और हमारे बौद्धिक योद्धा मान कर चलते हैं कि जैसे लालबत्ती वाली गाड़ी को यातायात कानून तोड़ने के तमाम अधिकार हैं उसी तरह धर्मनिरपेक्ष नेता के अपराधों पर मौन धारण करना उनका परम दायित्व है। ममता दीदी की मनमानियों को नहीं रोका गया तो पहले से ही कटुता झेल रहा देश का लोकतंत्र कोई नए खतरे में पड़ सकता है जिसके लिए आने वाली पीढ़ी हमें माफ नहीं करेगी। हमें राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर की चेतावनी नहीं भूलनी चाहिए कि-

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध,
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी अपराध।

संजय जैन

माँ तो माँ है

हमें इस संसार में लाने वाली माँ क्या अपने बच्चों का कभी भी बुरा सोच सकती है क्या / परन्तु हम सब के जीवन में कभी कभी इस तरह के हालात पैदा हो जाते है की हमें उस समय निर्णय करना बहुत ही भरी पड़ जाता है / और हम वो निर्णय लेते है जो एक दम से सही होता है / इसी तरह की एक छोटी सी कहानी के द्वारा मां तो आखिर कार मां होती है / घटना कुछ इस तरह की है की स्वंय की पत्नी की सोने की अंगूठी खो गई और वो बार बार मां पर इल्जाम लगाए जा रही थी, की मेरी अंगूठी इन्होने उठाई है और पति बार बार उसको अपनी हद में रहने की कह रहा था और बोल रहा था, की मां ये काम कर ही नहीं सकती / लेकिन पत्नी चुप होने का नाम ही नही ले रही थी ,और जोर जोर से चीख चीखकर कह रही थी, कि --उसने अंगूठी टेबल पर ही रखी थी,और तुम्हारे और मेरे अलावा इस कमरें मे कोई नही आया अंगूठी हो ना हो मां जी ने ही उठाई है, पति के बार बार समझने के बाद भी पत्नी मानने को तैयार नहीं / बात जब पति की बर्दाश्त के बाहर हो गई तो उसने पत्नी के गाल पर एक जोरदार तमाचा दे

मारा / अभी तीन महीने पहले ही तो शादी हुई थी । पत्नी से तमाचा सहन नही हुआ वह घर छोड़कर जाने लगी और जाते जाते पति से एक सवाल पूछा कि तुमको अपनी मां पर इतना विश्वास क्यूं है..?

तब पति ने जो जवाब दिया उस जवाब को सुनकर दरवाजे के पीछे खड़ी मां ने सुना तो उसका मन भर आया पति ने पत्नी को बताया कि --जब वह छोटा था तब उसके पिताजी गुजर गए तब मां मोहल्ले के घरों मे झाड़ू पोछा लगाकर जो कमा पाती थी / उससे एक वक्त का खाना आता था, मां एक थाली में मुझे परोसा देती थी और खाली डिब्बे को ढककर रख देती थी और कहती थी मेरी रोटियां इस डिब्बे में है बेटा तू खा ले मैं भी हमेशा आधी रोटी खाकर कह देता था , कि मां मेरा पेट भर गया है/ मुझे और नही खाना है / मां ने मुझे मेरी झूठी आधी रोटी खाकर मुझे पाला पोसा और बड़ा किया है/ आज मैं दो रोटी कमाने लायक हो गया हूं / लेकिन यह कैसे भूल सकता हूं कि मां ने उम्र के उस पड़ाव पर अपनी इच्छाओं को मारा है/ वह मां आज उम्र के इस पड़ाव पर किसी अंगूठी की भूखी होगी -- यह मैं सोच भी नही सकता , तुम तो तीन महीने से मेरे साथ हो, मैंने तो मां की तपस्या को पिछले पच्चीस वर्षों से देखा है-/ यह सुनकर मां की आंखों से छलक उठे वह समझ नही पा रही थी / कि बेटा उसकी आधी

रोटी का कर्ज चुका रहा है या वह बेटे की आधी रोटी का कर्ज कैसे चूका पाएगी ये सोच रही है / दोस्तों मां जिस बच्चे को जन्म देती है , वो कितनी भी बुरी क्यों न हो परन्तु अपने बच्चों के प्रति सदा ही समर्पित भाव रखती है / इस दुनिया में सब कुछ मिल जायेगा / परन्तु मां को यदि एक बार खो दिया तो फिर पूरे जीवन नहीं पा सकते हो /

माता दिवस पर यहाँ मेरा लेख सभी लोगो के साथ अपनी मां को समर्पित है /

<u>परिचय</u>- संजय जैन वर्तमान में मुम्बई में कार्यरत है पर रहने वाले बीना (मध्यप्रदेश) के ही हैं। करीब 24 वर्ष से बम्बई मे पब्लिक लिमिटेड कंपनी में मैनेजर के पद पर कार्यरत श्री जैन शौक से लेखन में सक्रिय हैं और इनकी रचनाएं बहुत सारे अखबारों-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहती हैं।ये अपनी लेखनी का जौहर कई मंचों पर भी दिखा चुके हैं। इसी प्रतिभा से कई सामाजिक संस्थाओं द्वारा इन्हें सम्मानित किया जा चुका है।

शतरंज खेलो और प्रेम करो

एक मिनिट में आता हूं
कहते हुए जाऊंगा और फिर कभी नहीं आऊंगा
जमाना देखता रहेगा हरे पत्तों का हिलना
हरे पत्ते हिलेंगे, हिलते रहेंगे, हम फिर-फिर मिलेंगे कहते हुए
?सा ही कुछ कहते हुए जाऊंगा मैं भी और फिर कभी नहीं मिलूंगा
पुकारेगा पीछे से कोई प्रियतम की तरह
और मैं अनसुनी करते हुए चला जाऊंगा
देख लेना एक दिन यही करूंगा मैं
कि एक मिनिट में आता हूं
कहते हुए जाऊंगा और फिर कभी नहीं आऊंगा
फिर-फिर कहूंगा तो कहूंगा यही-यही सबके लिए
कि शतरंज खेलो और प्रेम करो।

राजकुमार कुंभज

बाल–साहित्य

परिचय–नसरीन अली लेखन में साहित्यिक उपनाम-निधि लिखती हैं। जन्मतिथि 10 नवम्बर 1969 और जन्म स्थान-कलकत्ता है। आपका वर्तमान निवास श्रीनगर (जम्मू और कश्मीर)स्थित हब्बा कदल है। निधि की शिक्षा बी.ए. ,डिप्लोमा रचनात्मक कला(पाक कला एवं कला कौशल) है।

नसरीन अली 'निधि'

बच्चों की आवश्यकताएँ सर्वव्यापी है , जहाँ उन्हें ज्ञान देने की आवश्यकता है , वहीं उन्हें सम्मान देने की भी आवश्यकता है। उन्हें संस्कारी बनाना है तो उसे सुविचारी भी बनाना है , उन्हें परम्परा और परिपाटी से परिचित कराना है तो स्वयं करने और सीखने के मौके को भी दिये जाना हैं। उनको विवेकशील बनाना तो है ही, पर वैज्ञानिक और तर्कशील भी बनाना है। जहाँ उन्हें अपने सवालों का जवाब पाने में सहायता देनी हैं ,वहीं उन्हें अपनी प्रेरणा और विश्लेषण की शक्ति को बराबर अपने जवाबों को स्वयं ढूँढने की चेतना भी देनी है। अत्यंत दुष्कर कार्य है उस बच्चे को उचित दिशा देना ,ताकि वह आज के युग मे दुनिया की समस्त समस्याओं के बीच अपनी भारतीयता को विद्यमान रखते हुए भी कोहिनूर की भाँति चमक सके। चेतना तो हमें हैं और सोचना भी है कि उस गीली मिट्टी को हम कौन सा रूप देना चाहते है? इस क्रम की सबसे बड़ी महत्वपूर्ण व बेजोड़ कड़ी है।

बाल–साहित्य

बालक का मन सूरज की पहली किरण सा दिव्य , चाँद की चाँदनी सा मनोहरी, वर्षा की बूँद सा अविकारी, झरने की तरह चंचल-चपल , जल की तरह तरल और सरल, बिजली की कौन्ध सा प्रखर, सागर के गर्जन-नर्तन सा मुखर, पक्षी की तरह उन्मुक्त, सौंधी हवा सा गंध युक्त, संगीत सा सुरयुक्त, हर बंधन से आजाद और मुक्त है।

बाल मन कभी कल्पना के पंखों पर सवार होकर विशाल गगन में इतराता-उड़ता है तो कभी मिट्टी मे लोट- पोट हो उसी कल्पना के बीज को अंकुरित कर नई नई रचना की पौधशाला भी निर्मित कर डालता है।

किसी भी देश का बाल-साहित्य उसकी सांस्कृतिक प्रगति का एक अंग है अतः बाल-सहित्य ऐसा हो , जिसके माध्यम से हमारी संस्कृति की परम्पराएँ सुरक्षित रखी जा सकें।

'कभी हरलोक' की चाइल्ड साइकलॉजी पुस्तक इस विषय की विश्व-विख्यात कृति मानी जाती है। बाल मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि स्वस्थ बाल सहित्य पढ़ने से बच्चों का विकास अधिक तीव्रता से होता हैं।

बाल साहित्य बड़ो के साहित्य से भिन्न एक सृजन रूप है। यह बालकों को लक्ष्य करके लिखा जाता है। बच्चों की प्रकृति ऐसी होती है कि उनकी दुनिया में असम्भव भी सम्भव और कल्पना भी सत्य हो सकती है। बालक बाल- साहित्य को अकेले बैठ कर पढ़ सकता है और उसे समझने के लिए अध्यापक या माता- पिता की सहायता की जरूरत नही प?ती। बाल-साहित्य बच्चों में ज्ञान, रूचि और कल्पना को जगाता और निखारता है।

अन्य समाजों की तरह भारत में भी साहित्य श्रुति परम्परा से आया है। वही लोक साहित्य उस दौर के लोगों के मनोरंजन का साधन बना। लोकगीतों में जो सरस और सहज थे उन्हें लोरियों के रूप में बाल-मनोरंजन के लिए अपना लिया गया। बाल-साहित्य का इंद्रधनुषी-रंग और बाल सुलभ क्रीड़ाओं वाली बच्चों की दुनिया निराली ही होती है। बच्चे आनन्द की दुनिया को बुद्धि से नही तौलते। बाल- साहित्य शिक्षा भी दे , साथ ही बालमन के रहस्यों से भी परिचित होकर मनोरंजन से भी जुड़ा रहे जैसे- कागज की नाव, बरसात के पानी की छप- छप, इंद्रधनुष के रंग, छुक- छुक गाड़ी के खेल, परियों के जादुई संसार, हैरी पॉटर की कहानियाँ, विरासत में मिली सामग्री पंचतंत्र,सिंहासन बत्तीसी, बेताल पचीसी, जातक कथाएँ, कथासरितसर ,रामायण,महाभारत जिनकी कथाओं ने आज के युग तक बच्चों को प्रभावित कर रखा है, जहाँ न तनाव है न घुटन ,न कुंठा और न नैराश्य, अगर है तो केवल स्वच्छंद भावजगत, निश्छल भावलोक, उन्मुक्त खिलखिलाहट, मनोहारी मुस्कान, नटखट चितवन किलकारी की गूँज, चपल हँसी, भोले भोले तर्क, टुकुर -टुकुर निहारती जिज्ञासा जो बच्चों में अतीत गौरव जागृत करती है ,साथ ही उनके चरित्र विकास में सहायक होती है।

तुम उन्हें अपना प्यार दे सकते हो , लेकिन विचार नहींक्योंकि उनके पास अपने विचार होते हैं। तुम उनका शरीर बंद कर सकते हो , लेकिन उनकी आत्मा नहीं, क्योंकि उनकी आत्मा आने वाले कल में निवास करती है। उसे तुम नहीं देख सकते हो, सपनों में भी नहीं देख सकते हो, तुम उनकी तरह बनने का प्रयास कर सकते हो लेकिन उन्हें अपनी तरह , अपने जैसा बनाने की इच्छा मत रखना क्योंकि जीवन पीछे की ओर नही जाता और न ही बीते हुए कल के साथ रूकता है।-

''खलील जिब्रान''

शैशव अवस्था को पार करते ही बच्चे की मानसिक अवस्था में स्वतः ही परिवर्तन आने लगता है। वह अपने परिवेश के प्रति जागरूक होने लगता है। अपनी सिमित सोच- समझ व अनुभव के आधार पर वह अनेक प्रकार की कल्पनाएँ करने लगता है। कल्पना की यह उड़ान अनेक प्रकार की जिज्ञासाओं को जन्म देती है और उसकी यह जिज्ञासा और ज्ञान पिपासा को शांत करता है, वह साहित्य जो विशेषकर बच्चों के लिए, बच्चों की रुचि के अनुकूल और बच्चों की भाषा में ही लिखा गया हो क्योंकि बाल-साहित्य का लक्ष्य बच्चों का बौद्धिक और आत्मिक विकास है। यह विकास वैज्ञानिक ढंग से भी होना चाहिए ताकि वे अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं को पहचानने के साथ ही आज के युग में अपनी समस्याओं का समाधान भी कर सकें। आज के युग में उनकी अपनी आशाएँ आकांक्षाएँ है, अपने सपने-कल्पनाएँ हैं, जिनमे रंग भरने का अवसर बाल-साहित्य देता हैं। जिस जाति अथवा राष्ट्र के

पास समृद्ध बाल-साहित्य नहीं हैं,वह सुख और समृद्धि संपन्न नही हो सकता, क्योंकि हदयों में उमंगों, उल्लास , आशा और विश्वास जगाकर स्वस्थ, सबल, नागरिक बनाने में बाल-साहित्य की भूमिका बेजोड है। आज के युग में ज्ञान-विज्ञान की उपलब्धियों ने चका चौंध उत्पन कर दी है। बालक अपने जन्म के बाद अपने चारों ओर कंप्यूटर, मोबाइल, लैपटॉप और टेलीविजन की दुनिया को देखता है। समय के साथ परिवार सन्युक्त से एकल होते जा रहे है, ऐसे में बच्चे को दादा-दादी और नाना-नानी से कहानी- किस्से सुनने का सुख कम ही नसीब होता है, ऐसी स्थिति में अकेलेपन के तनाव और मशीनी जिंदगी से अलग होकर अपने मनोरंजन के लिए पुस्तकों और पत्रिकओं से जुड़ना बहुत जरुरी हो गया हैं। बाल-साहित्य पत्र- पत्रिकाएँ बालकों के चहुँमुखी विकास में उनके जीवन को अलोकित करने वली मशाल है इसीलिए बाल-साहित्य वही श्रेष्ठ है जो बच्चों मे आत्म विश्वास भर सके, उनका आत्म विकास करे, बाल- साहित्य ऐसा हो जो उन्हें उज्जवल भविष्य हेतु तैयार करे ,उनमें स्वाभिमान का संचार करे तथा जीवन की परिस्थितियों से संघर्ष करना सीखा सके क्योंकि बच्चे ही हमारे देश के सर्वांगीण विकास की सुदृढ़ आधारशिला और सम्पूर्ण सम्भावना शक्ति हैं। साहित्य का संवाहक भाषा है। समर्थ भाषा ही अभिव्यक्ति को समर्थ बनाती हैं। बाल-साहित्य का प्रमुख उद्देश्य बालकों का मनोरंजन है। बाल-लेखन अर्थात बच्चों की भाषा में लिखा गया, बच्चों के बारे में लिखा गया और बच्चों के लिए लिखा गया साहित्य। आयु की विभिन्नता के कारण बाल-साहित्य भी वर्गीकृत हो जाता ह। शिशु-साहित्य, बाल-साहित्य एवँ किशोर-साहित्य।

एक वर्ष से पाँच वर्ष तक का आयु वर्ग जिसे शिशु अवस्था कहा जाएगा , दूसरा आठ वर्ष तक , जिसे आप बचपन कह सकते है और इसके बाद चैदह-पंद्रहवर्ष की आयु किशोरावस्था मानी जाती है।

यहाँ प्रश्न ये उठता है कि बच्चों के लेखन की भाषा कैसी होनी चाहिए ? इस सम्बंध में वरिष्ठ बाल- साहित्यकार डॉ. रत्नलाल शर्मा ने कहा है- ' इसके शब्द हल्के-फुल्के, आसान, बच्चों की बोलचाल के सटीक, सुकोमल और बाल-जीवन के परिचित संसार से लिए गए हो , जो बालकों को लुभाएँ गुदगुदाएँ और महकाएँ। जहाँ तक इसके शब्द भंडार का प्रश्न है तो हिंदी भाषा का शब्द भंडार विस्तृत है। प्रकाश मनुजी का कहना है हिंदी भाषा का अपना मिजाज है। अगर हम तकनीकी शब्दों को जरा सा स्पष्ट करते हुए उनका बढ़िया ढंग से इस्तेमाल करें तो वह बच्चों की समझ में न आये ,ऐसा हो ही नही सकता, क्योंकि विज्ञान और तकनीकी की प्रगति के कारण विज्ञान और तकनीकी के शब्दों का प्रयोग भी बाल-साहित्य में प्रचुर मात्रा मे दिखाई देता है। भाषा को इस प्रकार अकस्मात करे कि वह बालकों की आयु के अनुसर सरल से सरलतम होती जाए। आज के बाल-साहित्य में हम आसानी से भाषा के कई रुप देख सकते है। लोकभाषाओं के शब्द , ऊर्दू के शब्द , अंग्रेजी के शब्द , आज के बाल सहित्य में दुर्लभ नहीं हैं तो क्यों न विचार करे उन बिंदुओं व पहलुओं पर , जो बाल-साहित्य को सार्थक ,ग्राह्य और पठनीय बना सकते है।

प्रकृति से बच्चों का स्वाभाविक लगाव होता है। नीला आसमन, उमडते-घुमडते बादल, सूरज की लालिमा, वर्षा की बूँदे, चारों ओर फैली हरियाली,पेड-पौधे ,नदियाँ-झरने,पहाड, सुंदर वादियाँ, खेत - खलियान , जीव-जंतु, पक्षियों का संसार, वन्य प्राणी सभी बालक का मन उत्सुकता से भर देते हैं। पत्ते पर बिखरती ओस की बूँदे, आकाश में लहराता इंद्रधनुष, उडती तितलियाँ कौतुक और आकर्षण पैदा करने वाली रोचक कहाँनिया, रात्री में टिमटिमाते तारे , चाँद की चैदह कलाएँ और ग्रह-नक्षत्रों का झिलमिलाता संसार,शीतलपवन मिट्टि के हर क्षण बदलते रूप, सागर का गर्जन- नर्तन , ज्वार- भाटा सभी कुछ बाक-मन को समोहित कर उसे आत्मविभोर कर देता है।

आज प्रचुर मात्रा में बाल-साहित्य लिखा जा रहा हैं और प्रकाशित भी हो रहा है पर हिंदी बाल- सहित्य का इतिहास 100 वर्षों से भी ज्यादा पुराना है। हिंदी बाल-साहित्य के प्रारंभिक काल में अमीर खुसरों, अयोध्यासिंह उपाद्धाय 'हरिऔध', श्रीधर पाठक, बाल्मुकुंद गुप्त, लोचन प्रसाद पाण्डेय , लक्ष्मीप्रसाद पाण्डेय, मैथलिशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, देवीदत्त शुक्ल, सुभद्रा कुमारी चौहान, सोहनलाल द्विवेदी, मुंशी प्रेमचंद, रविंद्रनाथ टैगोर, रामवृक्ष बेनीपुरी , सुमित्रानंदन पंत, विष्णु प्रभाकर, जयप्रकाश भारती ,निरंकार देव सेवक, महादेवी वर्मा, डॉ राष्ट्रबंधु, डॉ हरिकृष्ण देवसरे, राधेश्याम'प्रगल्भ' आदि ने बाल ड्ढसाहित्य पर अपनी लेखनी चलाई हैं। प्रेमचंद की काबुलीवाला और ईदगाह, गुल्लीडंडा, बडे भाईसाहब, जैसी कहानियाँ इस का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

बच्चों के लिए लिखना आमतौर परकाया प्रवेश जैसा चुनौतीपूर्ण होता है। उसमें न केवल बाल-मनोविज्ञान को समझने जैसी चुनौती होती है बल्कि अपने से अधिक जिज्ञासु और उर्जावान मस्तिस्क की अपेक्षाओं पर खरा उतरना होता है। बाल- साहित्य का लेखक वही हो सकता है ,जो बच्चों की भावनाओं ,संवेदनाओं, उनकी रुचियोंड्ढअरुचियों को समझता हो, जिसमें नया सोचने और उसे रोचक ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता हो,साथ ही बाल- मनोविज्ञान की समझ रखता हो।

आज के संदर्भ में जहाँ बच्चों के विकास में घर परिवेश, विद्धालय, समाज देश, अभिभावक की दृष्टि के साथ साथ उन्हें आधुनिक तकनीकों, बाहर की दुनिया में हो रहे प्रयोगों, शोधों तथा प्रगति से जानकार होना अति आवश्यक है वही सच तो ये है कि बाल मन ने पाठ्शालाओं की सिमित पुस्तकों, तकनीकी जानकारी, और गूगलतक ही अपने आप को सीमित कर दिया है इसलिए सोचना हमें ही है कि इस गीली मिट्टि को हम कैसा रूप देना चाहते है?

जो जैसा दिखाई पड रहा है, जो अनुभव हो रहा है, हमें उससे ऊपर उठकर बच्चों को एक नई दृष्टि प्रदान करनी होगी जिसमे बाल- साहित्य की सार्थकता के साथ- साथ मौलिक सोच, तार्किक पृष्ठभूमि और यथार्थ का धरातल भी हो।

आधुनिक समाज में महिलाएं

आधुनिक समाज में पुरुष आज भी सर्वोपरि है परन्तु हम यह नहीं भूल सकते कि एक महिला का जीवन मनुष्य के जीवन से कहीं अधिक जटिल है। एक महिला को अपनी व्यक्तिगत जिंदगी का ख्याल रखना पड़ता है और यदि वह एक मां है तो उसे अपने बच्चों के पालन पोषण का ख्याल भी रखना पड़ता है। विवाहित स्त्रियाँ अगर नौकरीपेशा हों तो उसके जीवन में अतिरिक्त तनाव हो सकता है, फिर भी वे अपने पुरुष समकक्षों की तुलना में किसी भी मामले में कमतर नहीं हैं।

वस्तुतः आज भी ऐसे विवाद होते हैं कि महिलाएं पुरुषों के जितनी मजबूत नहीं हैं और इसलिए हर कार्य उनसे नहीं कराया जा सकता पर क्या हमने कभी सोचा है कि ऐसे बहुत सारे कार्य हैं जो सिर्फ महिलाएं ही कर सकती हैं, पुरुष नहीं। यह सत्य है कि प्रकृति ने स्त्री और पुरुष को अलग-अलग बनाया है, उनकी शारीरिक क्षमतायें भी भिन्न है लेकिन इस आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता। स्त्री और पुरुष की भूमिकाएं समाज द्वारा बनाये गए मानदंडों या मानकों पर आधारित होती हैं परन्तु ये स्थाई नहीं हो सकती हैं। परिस्थितियों के हिसाब से इनमे समय-समय पर बदलाव होना आवश्यक है। आप ही सोचिये 'लकीर के फ़कीर' बने रहने में क्या कोई लाभ है।

शहरी क्षेत्रो में धीरे-धीरे नई विचारधारा के प्रति लोगो में जागरूकता आ रही है लेकिन विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में महिलाओं के हालात खराब हैं जिसके कारण गरीबी, अनियोजित परिवार, स्वास्थ्य एवं पिछड़ेपन आदि समस्याऐं जस की तस हैं। हमारे ग्रामीण समाज में महिलाओं को बाल श्रमिकों के रूप में अधिक देखा जाता है तथा शिक्षा, बाल विकास, समानता इत्यादि मौलिक अधिकारों से उन्हें वंचित रखा जाता है। किसी भी देश के स्थायी विकास के लिए महिलाओं और पुरुषों के बीच समानता महत्वपूर्ण है। मेरा मानना है कि अवसर किसी के लिंग के आधार पर नहीं वरन उसकी योग्यता के आधार पर मिलने चाहिए। आप महसूस कर सकते हैं कि हमारी पुरातन मान्यतायें भी प्राकृतिक लिंग मतभेदों पर आधारित नहीं हैं बल्कि रूढ़िवादिता के जहर ने समाज में भेद उत्पन्न कर दिया है। आज जब हम पश्चिमी देशों की जीवन शैली के प्रति आकर्षित हो रहे हैं तो हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि पश्चिमी देशों ने जीवन के सभी क्षेत्रों में किस तरह विकास किया है। उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य प्रणाली, सूचना प्रौद्योगिकी आदि श्रेष्ठम हैं। पश्चिमी देशों में पुरुष और महिलाएं कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रहे हैं और अपने देश के बुनयादी विकास से आधुनिक प्रगति के बीच समान रूप से योगदान दे रहे हैं। पश्चिमी समाज में स्त्री पुरुष भेद के बिना सभी को शिक्षा एवं अवसर सामान रूप से दिए जाते हैं।

नित्य बदलती दुनियाँ, राजनीतिक संक्रमण और संकटो के वैश्विक प्रभाव में आज हमें बेहतर प्रतिनिधित्व की आवश्यकता है इसलिए आज समाज के सभी पहलुओं में महिलाओं के विचार और उनकी भागीदारी पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। महिलाओं की संवैधानिक और राजनीतिक स्थिति में सुधार, सार्वजनिक जीवन में स्थान, भेदभाव को खत्म करने और महिलाओं के सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए सकारात्मक उपायों को अपनाने जरुरत है। आर्थिक संकट का असर विशेष रूप से महिलाओं के लिए कठोर होता है, इसलिए सामाजिक सुरक्षा, अनिश्चित रोजगार एवं अन्य परेशानियों से बचने के लिए उनको शिक्षित करने की आवश्यकता है। समय आ गया है जब हमें उन भेदभावपूर्ण प्रथाओं को खत्म करना चाहिए जिनके कारण न सिर्फ महिलाओं पर बल्कि पूरे समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

-डॉ. रूपेश जैन 'राहत'

हिन्दी के शत्रु-सत्ता, सम्पत्ति एवं सँस्थाएं-प्रभाकर माचवे

हिन्दी विरोध वस्तुतः भाषा और साहित्य के कारण से नहीं, परन्तु आर्थिक-सामाजिक-राजनैतिक कारणों से होता है। पूर्वांचल में, असम में और बंगाल मारवाड़ी व्यापारियों का विरोध हिन्दी-विरोध का रूप लेता है। उड़ीसा में संबलपुरी (हिन्दी-मिश्रित उपभाषा) अपना स्वतंत्र अस्तित्व चाहती है। दक्षिण में उत्तर भारत, संस्कृत, आर्य, ब्राह्मण और हिन्दी का विरोध एक साथ किया जा सकता है। केरल में विरोध उतना तीव्र नहीं, परन्तु विन्ध्यांचल के नीचे सभी भाषिक अल्पसंख्यकों को भय है कि हिन्दी अनिवार्य-प्रशासनिक भाषा होते ही नौकरियों में अधिकतम और अधिकार प्राप्त कर लेंगे। सब दक्षिणी लोग 'द्वितीय श्रेणी के नागरिक बन जाएँगे। आ.ए.एस. आदि पदों में, विज्ञान तकनीकी में अहिन्दी-भाषी ही अधिक है। अंग्रेज़ी के पीछे इंग्लैण्ड, अमेरिका और अन्तरराष्ट्रीय संस्थाओं से बड़ी राशियाँ आती है। 'इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंग्लिश' और ईसाई धर्मसंस्थाओं द्वारा संचालित शिक्षालय, चिकित्सालय, समाजसेवी संस्थाएँ बड़े पैमाने पर भारत के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को विदेश-यात्राएँ दिलवाती हैं। हिन्दी उस बड़ी आर्थिक स्पर्धा में कहीं भी नहीं ठहरती। उर्दू-भाषियों खाड़ी के देशों से विशेष धार्मिक शिक्षा के नाम पर बड़ी इमदाद आती है।

ये सब बातें हमारी साहित्य-संस्थाओं के विचार क्षेत्र से परे या बाहर हैं। हिन्दी केवल भावना के बल पर जीती है। अन्य भाषाएं अधिक व्यावहारिक हैं। कहीं हिन्दी का विरोध धर्म सा जाति के नाम पर, कहीं सांस्कृतिक श्रेष्ठता के नाम पर, कहीं आर्थिक लालच के नाम पर, कहीं 'आधुनिकता' और वैज्ञानिकता के नाम पर, कहीं अल्पसंख्यकों के आत्म-निर्णय के अधिकार के नाम पर होता है। हम ज्यों-ज्यों राजनीति में अलगाववादी और विघटनकारी शक्तियों की वृद्धि देखते हैं, हिन्दी पिछड़ती, सिमटती जाती है। पहले जम्मू हिन्दी का केन्द्र था। अब वह कश्मीरी के विरोध में डोगरी का केन्द्र है। हिमाचल प्रदेश में पहाड़ी भाषा की अस्मिता का आन्दोलन है। मैंने हिंदी पुस्तकों के हरियाणवी में और कुरयाली (झारखण्ड की भाषा) में अनुवाद देखे हैं और उनके लिए पुरस्कारों की माँग सुनी है। मेरे पास नागपुर से प्रकाशित एक गोंडी पत्रिका आती थी। नेपाली से अलग गोरखाली को, गोवा में कोंकण को, गुजरात में कच्छी को, तुलू और संथालीको स्वतंत्र दर्जा दिलाने की माँगे, आन्दोलन और संस्थाएं देखी हैं। अब भारत में एक संस्था रोमन लिपि में सब भाषाओं के लिखे जाने का आग्रह करना चाहती है। राजस्थान में मिथिला में, मालवा और छतीसगढ़ में, भोजपुर और बुन्देलखण्ड में अपनी-अपनी भाषा-विशेषता को लेकर मातृभाषाओं और जनपद राष्ट्र की संचेतना बढ़ रही है। यह सारा विवाद प्रदेश पुनर्निर्माण की पीस वर्ष पुरानी बात से शुरु हुआ।

हमने राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर वैज्ञानिक ढंग से न विचार किया है, न समस्याओं के हल का व्यावहारिक चिंतन किया है। आज डेढ़ सौ से अधिक विश्वविद्यालय हैं। विज्ञान के विषय के अध्ययन में स्नातकोत्तर स्तर पर हिन्दी कहीं नहीं है, न इंजीनियरिंग या चिकित्सा की शिक्षा में हिन्दी का पूर्ण प्रवेश हो पाया है। केवल मानविकी के विषयों में राष्ट्र-भाषा से काम लिया जा रहा है और वह भी मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार और उत्तरप्रदेश के कुछ विद्यालयों में। पाठ्यपुस्तकों का निर्माण भी अनुवाद के द्वारा ही अधिक हुआ है। अंग्रेज़ीदां अपना उच्चासन छोड़कर जनसाधारण तक आना नहीं चाहते। उनका बस चले तो वे किंडरगार्टनसे अंग्रेज़ी चलाकर अपने वर्ग का न्यस्तस्वार्थ चलाए रखें, अनंतकाल तक। प्रशासनिक सेवाओं में हिन्दी और मातृभाषाओं में परीक्षाएँ देने का प्रावधान दो दशकों से है, परन्तु अधिक परीक्षाएँ अंग्रेज़ी माध्यम से ही आई. ए. एस., आई. एफ. एस. होते हैं। इसके मूल में हमारी राष्ट्र केबारे में पश्चिमीकरण की ओढ़ी हुई मानसिकता है। उसी को हमने आधुनिकता मान लिया है। भारत है तो भारती है। परन्तु भागवत-पुराण में जिसे अजनाभवर्ष कहा गया और वायुपुराण में हैमवतवर्ष, वह हमारा नवखण्ड कार्मुख संस्थान, आज सिमटकर मध्यदेश तक आ गया है। वहाँ के ग्रामांचल में भी हमारी आकाशवाणी और दुरदर्शन की मानक-हिन्दी बहुत कम ज्ञेय है। हिन्दी केवल फ़िल्मों, कवि-सम्मेलन व मंचों और नेता के भाषणों की श्रुति ही नहीं। पर हिन्दी भाषा-भाषी जनसंख्या के अनुपात में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की संख्या और खपत अन्य भाषाओं की तुलना में नगण्य है। बांग्ला, मलयालम, मराठी और तेलुगु में छपनेवाले समाचार पत्र कही अधिक पढ़े जाते हैं।

यों राष्ट्रभाषा हिन्दी के बोले हुए और लिखे हुए रूपों में पांच- स्तर भेद है। वे सभी विकसित आधुनिक भाषाओं में होते हैं, परन्तु साक्षरता के प्रमाण-भेद से अपेक्षा अधिक जान पड़ते हैं- (1) बोली जाने वाली हिन्दी (2) पढ़ी या सिखाई जानेवाली व्यावहारिक हिन्दी (3) साहित्यिक हिन्दी (इसमें भी एकरूपता नहीं है) (4) सरकारी, पारिभाषिक शब्दावलीयुक्त हिन्दी और (4) सुनी जानेवाली हिन्दी- फिल्म, आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि से प्रसारित हिन्दी से प्रसारित हिन्दी। जब हम अंग्रेज़ी के स्टैंडर्डाइज़ेशन' की तरह हिन्दी से अपेक्षा करते हैं (देखिए पुण्यश्लोक राय का ग्रंथ ' लैंग्वेज स्टैंडर्डाइज़ेशन' और उसमें डॉ. रघुवीर के आँग्ल-हिन्दी कोश पर टिप्पणी) वहाँ हम भूलते हैं कि हर संस्कृति का अपना स्वरुप, विकास की गति और परम्परा तथा प्रयोग का परस्पर द्वन्द्वात्मक संबंध होता है। भारत व अमेरिका है, न यूरोप न चीन। भारत, नेपाल या श्रीलंका या बांग्लादेश या अफ़ग़ानिस्तान भी नहीं है। भारत इज़राइल नहीं है, न अफ्रीका का कोई देश। 'भारत' शब्द केवल भौगोलिक इकाई नहीं है, न केवल एक नस्ल या वंश के नागरिकों का नाम है, न एक धार्मिक अनुबंध का दूसरा नाम है। आज का भारत केवल एक धर्म, एक प्रजाति,एक भूखण्ड मात्र का नाम नहीं है। वह नई परिभाषाएँ बनाने से बदल नहीं जाता। हमारे संविधान निर्माताओं को उसका भान था। इस 'अनेकता-में-एकता' को उन्होंने अस्पष्ट रुप से व्याख्यायित किया। उस समयतक हमारी राष्ट्रीयता में सब भाषाओं के बोलनेवालों का योगदान था। हिन्दी और हिन्दीतर भाषी साथ-साथ जेल गए, साथ-साथ उन्होंने

लाठियाँ खाई और साथ-साथ सपने देखे।

1948 के बाद जब पद और अधिकार 'बहुसंख्यक' और 'अल्पसंख्यक' शब्द हमारे मानस पर अचेतन से उठकर मँडराने लगे तब प्रश्न पूछे जाने लगे कि एक सौ वर्ष के कांग्रेस के इतिहास में क्या कोई सिख या असमवासी या या हरिजन स्वराज्य से पहले कांग्रेस का अध्यक्ष बना ? नहीं बना तो क्यों नहीं बना ? मैं 1954 में केरल गया तो एक लड़की ने प्रश्न पूछा - 'हिन्दी में कितने हरिजन लेखक हैं ?' 1956 में असम राष्ट्रभाषा परिषद में मैं हिन्दी में बोला परन्तु अभी चार वर्ष पूर्व उसकी स्वर्णजयन्ति में अंग्रेज़ी में बोलना पड़ा। मोरिशस में एक लड़कियों के स्कूल में गत वर्ष एक श्रोता ने पूछा - ' भारत में कितने वैज्ञानिक हिन्दी प्रदेशों से हैं ?' स्त्री वैज्ञानिक कौन-कौन? 'बांलादेश में ढाका में मुझसे एक प्रोफ़ेसर ने पूछा- 'बांग्ला से हिन्दी में इतने अनुवाद होते हैं, हिन्दी से बांग्ला में क्यों नहीं होते?' श्रीलंका में एक बौद्धभिक्षु ने पूछा - 'हिन्दी में कितने बौद्ध लेखक हैं ?' नेपाल गया था तब वहाँ के 'प्रज्ञा प्रतिष्ठान के एक विद्वान ने पूछा - 'भारत में अजेय या महादेवी को पद्मविभूषण आदि अलंकरण आदि अलंकरण आदि नहीं ले, ऐसा क्यों है?' आप अपने मन से इनके उत्तर पूछे। सब बातों का एक ही निदान- 'डेढ़ सौ वर्षों की ब्रिटिश राज की गुलामी' देने से अब काम नहीं चलेगा। स्वराज्य के भी 41 वर्ष बीत गए।

हमारे सरकारी प्रतिष्ठनों ने हिन्दी परिभाषा निर्माण में कोशकार डॉ. रघुवीर, रामचन्द्र वर्मा, राहु सांस्कृत्यायन, डॉ. कामिल बुल्के, किशोरीदास वाजपेयी आदि भाषा-वैज्ञानिकों से कोई सहायता क्यों नहीं ली ? इन अनुभवी भाषाविदों को छोड़ नौसिखुए और भाषा-विज्ञान का कोई भी ज्ञान न रखनेवाले रंगरूटों और केवल सृजनात्मक लेखकों या पदेन विभागाध्यक्षों से क्यों काम लिया? नौकर- शाही हिन्दी को जल्दी लाना नहीं चाहती थी। सबको खुश करना चाहती थी। अत- वह 'अशुभस्य कालहरणस' करती रही। मैं छः केन्द्रीय मंत्रालयों की हिन्दी सलाहकारी समितियों में रहा हूं, और वहाँ की पद्धति देख चुका हूं, ज्ञानी जेलसिंघ गृहमंत्री थे, तब उस सलाहकार समिति में गंगाप्रसाद सिंह जी ने कोई तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। ज्ञानी जी सहज भाव से बोल गए- 'ये सेक्रेटरी लोग आपको 'टुंगा' रहे हैं। हिन्दी लाने की किसी को जल्दी नहीं है।' हमारे नौकरशाह अपने मन में अंग्रेज़ी को देवी और हिन्दी को दासी मानकर चलते हैं। जहाँ ज़रूरी नहीं, वहाँ भी अंग्रेज़ी का प्रयोग करते हैं। अभी लखनऊ में भारतीय विद्याभवन की स्वर्णजयन्ती पर संगोष्ठी में मैं गया था। तीन सज्जन जिनकी मातृभाषा हिन्दी है, सब हिन्दी श्रोताओं के आगे न सिर्फ़ गलत-सलत अंग्रेज़ी में बोले, पर सारे उद्धरण विदेशी विद्वानों के दिए एक महानुभाव ने। इस मानसिक दासता को क्या कीजिएगा? तो पहली समस्या सत्ता है। दूसरे शत्रु हमारे व्यावसायिक लोग हैं। मैं कलकत्ता में सात वर्ष तक एक भारतीय भाषा विषयक संस्थान से जुड़ा था। मैंने देखा कि हमारे राजस्थानी भाई घर में मारवाड़ी, मेवाड़ी, हाड़ौती, जैसलमेरी हैं, अपने औद्योगिक व्यापारी संस्थानों में फ़र्स्टक्लास अंग्रेज़ी पत्र-व्यवहार करनेवाले टंकक-आशुलिपिक रखते हैं। हिन्दी में काम करने में कतराते हैं। मुण्डन-नामकरण, विवाह आदि सँस्कारों के निमंत्रण-पत्र, नववर्ष के कार्ड, अंग्रेज़ी में भेजते हैं।

नई पीढ़ी तो अंतरराष्ट्रीयता के नाम पर जेट-सेट, पाँचसितारा होटल संस्कृति की दास तथा मातृभाषा-राष्ट्रभाषा से दूर होती जा रही है। अब वहाँ हिन्दी माध्यम की माध्यमिक शालाओं में अंग्रेज़ी 'नर्सरी-राइम' पढ़ाई जा रही है। हिन्दी के पाक्षिक-साप्ताहिक पत्र अंग्रेज़ी सह पत्रिकाओं के अनुवाद होते जा रहे हैं। प्रकाशकों का भी प्रथम ध्येय अर्थोपार्जन है, भाषा-प्रेम नहीं। सम्पादकगण अंग्रेज़ी अनुवाद पर अपने 'स्तंभ' रंगते हैं। हिन्दी में नई कविता, नई आलोचना, नई कहानी आदि आंदोलनों के लिए लंदन, न्यूयार्क आदि अंग्रेज़ी हज-स्थान हैं। उन्हीं के उद्धरणों की भरमार होती है। सारे विज्ञापनों का माध्यम अंग्रेज़ी या अंग्रेज़ी के कृत्रिम अनुभव हैं। उपभोक्ता सँस्कृति के प्रचारक वही चाहते हैं। 'हर मौसम में रंग कोकाकोला के संग'। तो हमारी दूसरी समस्या है सम्पत्ति। राष्ट्रभाषा के विकास में तीसरी बाधा संस्थाएँ हैं। सरकारी और गैरसरकारी दोनों की नीति थी कि किसी समस्या का समाधान न मिले तो आयोग या समिति बना दो। हम भी यही करते आ रहे हैं। बहुत से नेक इरादों से शुरु किए हुए कई प्रतिष्ठान धीरे-धीरे 'सँस्थावाद' के जाल और घेरे में फँस जाते हैं। कहीं संस्थाओं पर बैठे हुए बुज़ुर्ग अपने-आपको या निकट सम्बन्धियों या अपनी ही उपजातिवालों को पुरस्कृत कर लेते हैं। अंधा बाँटे रेवड़ी। कहीं ये नव सामंत किसी 'वाद' का नाम लेकर चेलों-चेलियों की जमात लेकर चलते हैं। पूरा कुंभ मेले- वाला दृश्य है। हर साधु का अपना अखाड़ा है, हिन्दू धर्म का हुआ, किस्म-किस्म के गुरु, महर्षि, स्वामी, बाबा, भगवान, पनपे और पूरा 'निरानंद मार्ग' हो गया, वही दृश्य राष्ट्रभाषा के क्षेत्र में है, जिन्होंने एक भी पुस्तक बरसों नहीं लिखी या जो केवल मौखिक रूप से हिन्दी हितैषी हैं। मेरे पास कोई पंचवार्षिक योजना या सब समस्याओं की रामबाण दवा नहीं है। नीतशे ने कहा था-ऐसे लोगों से सावधान रहो जो कहते हैं कि उनके पास रेडिमेड सत्य-समाधान हैं। मैं ऐसे सरलीकृत मसीहा से आपको आगाह करना चाहता हूँ।

हिन्दी में मुझे हिन्दीतर भाषाओं से उत्तम अनुवादकों के नाम-पतों की डाइरेक्टरी चाहिए, अनुदित ग्रंथों की सूचियाँ चाहिए, दुभाषियों की सेना चाहिए, विद्वानों को खोजकर उनके 'अवकस्थित' कार्य का उचित सम्मान करने वाले कद्रदां चाहिए, पैसे या पद के पीछे दुम न हिलानेवाले, चारण न बननेवाले स्वाभिमानी सेवक चाहिए, मृत्यु के बाद पद्मविभूषण या स्मृति खोने पर पद्मभूषण देना बन्द होना चाहिए, कई भारतीय भाषाओं-उपभाषाओं के हिन्दी में कोश चाहिए, दूरदर्शन पर हिन्दी पढ़ाने के लिए भाषापाठ चाहिए, हिन्दी के महान लेखकों पर आलेख-पट (डाक्युमेंटरी) चाहिए, लेखकों के सहकारी प्रकाशन चाहिए, नई पीढ़ी को भाषा रुचि पैदा करनेवाली प्रकाशित सामग्री चाहिए। ऐसी मेरी 'सहस्राक्ष-सहस्रबाहु' माँगें हैं। उनकी ओर पहले ध्यान दें। गुड़गाँव में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के 43 वें अधिवेशन में डॉ. माचवे ने राष्ट्रभाषा परिषद सभापति के नाते जो भाषण 24 अप्रैल को दिया था, यह उसकी संक्षेप है।

-निर्मलकुमार पाटोदी

हाउस वाइस

परिचय- डॉ.नीना जोशी मुलतः इंदौर, मध्यप्रदेश निवासी है।आपने होम्योपैथी चिकित्सा में एम.एस की डिग्री हासिल की है।

आप वरिष्ठ कांग्रेस नेता अरविंद जोशी की धर्मपत्नी है। चिकित्सकिय कर्म के उपरांत आपकी हिन्दी साहित्य में गहरी रूचि है। आप मातृभाषा उन्नयन संस्थान की प्रदेश सचिव भी हैं।

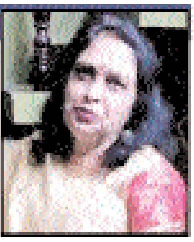

डॉ.नीना जोशी

प्रज्ञा को रिसेप्शन हॉल में बिठाकर नितिन न जाने किधर गुम हो गए. प्रज्ञा उस डेकोरेटेड हॉल और उसमें विचरती रूपसियों को देखकर चमत्कृत-सी हो रही थी. कहां तो आज अरसे बाद वह थोड़े ढंग से तैयार हुई थी. नीली शिफॉन साड़ी के साथ मैचिंग एक्सेसरीज में खुद को दर्पण में देख शरमा-सी गई थी प्रज्ञा. शादी के बीस बरस बाद भी उसमें इतनी कशिश है. वैसे तो उसकी सादगी ही उसकी कमनीयता को बढ़ा देती है. चालीस की उम्र में तीस की नजर आना वाकई कमाल की बात है.

घर से निकलते समय टीनएजर बेटी ने प्यारा-सा कॉम्प्लीमेंट उछाल दिया था, हाय मम्मी ! आज तो पार्टी में आप छा जाएंगी.

लेकिन यहां तो समीकरण ही उलट गया था. उन आधुनिकाओं से अपनी सादगी की तुलना कर उस एयरकंडीशन्ड हॉल में भी उसके माथे पर पसीने की बूंदें चुहचुहा उठीं. पर्स से रुमाल निकाल कर अभी वह पसीना सुखा ही रही थी कि मेकअप में लिपी-पुती-सी एक मैडम मुस्कुराती हुई उसके सामने प्रकट हुई,

एक्सक्यूज मी, आप मिसेज नितिन खरे हैं ना?- प्रज्ञा कुछ बोल सकने की स्थिति में नहीं थी. किसी तरह उसने स्वीकारोक्ति में गर्दन हिला दी.

मैं रमोला भारती, केमिस्ट्री डिपार्टमेंट से हूं. सर ने कहा है कि आपको सबसे मिला दूं.

प्रज्ञा उसके साथ यंत्रवत् चलने लगी. इनसे मिलिए, ये हैं मिसेज नितिन खरे ! रमोला ने इस अदा से प्रज्ञा को सभी के सामने मिलाया कि कई जोड़ी निगाहें उसका एक्स-रे करने लगीं।

वैसे आप करती क्या हैं? खनकदार आवाज में उछाले गए प्रश्न के जवाब में प्रज्ञा जबरन मुस्कुराई, मैं हाउसवाइज हूं.

हाउसवाइज ! ओह तभी तो इतनी सिंपल हैं.

न चाहते हुए भी प्रज्ञा की नजरें आवाज की दिशा में उठ गईं. एक भारी-भरकम शरीर की महिला, जिसने अपने शरीर को वेस्टर्न ड्रेस में जकड़ रखा था और मेकअप की परतों के बीच अपनी उम्र को छिपाने की नाकाम-सी कोशिश की हुई थी, कुछ अजीब अंदाज में मुस्कुरा रही थी.

पता नहीं प्रज्ञा की नजरों में क्या था कि रमोला सकपका गई, आप हैं मिसेज साक्षी सान्याल, इन्फोसिस में चीफ एक्जीक्यूटिव हैं. मिस्टर सान्याल यहां फिजिक्स के हेड ऑफ दि डिपार्टमेंट हैं.

फिर बारी-बारी से रमोला ने सबका परिचय कराया. उनमें से आधी से ज्यादा तो यूनिवर्सिटी की लेक्चरार थीं और बाकी प्रोफेसर्स की पत्नियां, जो कहीं न कहीं जॉब करती थीं. तभी तो प्रज्ञा का हाउसवाइज होना उन्हें हैरत में डाले हुए था.

प्रज्ञा का जी चाह रहा था कि वह चुपचाप उठकर वापस घर चली जाए, लेकिन यह भला कैसे संभव था? पार्टी तो उसी के पति मिस्टर नितिन खरे के सम्मान में हो रही थी. वेटर कोल्ड ड्रिंक लेकर आया तो उसने बेमन से ले लिया.

नितिन के लिखे 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' को आज कुलपति के हाथों 'अकादमी पुरस्कार' मिलने वाला था और उन्हें 'रीडर' की उपाधि से भी नवाजा जा रहा था. नितिन के लेक्चरार से रीडर बनने तक के सफर में प्रज्ञा ने हर पल उनका साथ दिया था. अब वह इन तितलियों को अपने जॉब न करने की क्या सफाई दे?

एक तो नितिन का स्वभाव ऐसा है कि वे जब तक घर में रहें, प्रज्ञा उनके आसपास होनी चाहिए. दूसरी बात, जो खुद प्रज्ञा को गंवारा नहीं थी, वह यह कि उसके बच्चे आया के भरोसे पलें. उन्हें स्कूल से आकर मां के बदले बंद ताले को देखना पड़े. खैर जो भी हो, लेकिन आज प्रज्ञा कुंठित हो गई थी. हाउसवाइज होना वाकई हीनता का परिचायक है. हाउसवाइज का अपना कोई वजूद नहीं होता. वैसे कभी-कभार प्रज्ञा के मन में अपने हाउसवाइज होने को लेकर हीन ग्रंथि पलने लगती थी, लेकिन उसने आज जैसा अपमान कभी महसूस नहीं किया था. अभी प्रज्ञा न जाने और कितनी देर तक खुद से सवाल करती, अगर रमोला ने टोका न होता, अरे मैम, आप खाली बोतल लेकर बैठी हैं, दूसरी लाकर दूं?

वाकई उसकी कोल्ड ड्रिंक तो कब की समाप्त हो गई थी. वो जबरन मुस्कुराते हुए 'नो थैंक्स' कह, उठकर खाली बोतल डस्टबिन के हवाले कर आई. प्रज्ञा की कुंठा उस पर हावी होती जा रही थी. वह सचमुच उठकर जाने की सोच ही रही थी कि स्टेज पर माइक थामे नितिन को देखकर अपनी कुर्सी से चिपक कर रह गई. तालियों की गड़गड़ाहट के बीच नितिन की गंभीर आवाज गूंज उठी,

वैसे तो यह एक घिसा-पिटा डायलॉग है कि हर सफल पुरुष के पीछे एक औरत का योगदान होता है, लेकिन मेरे मामले में यह सौ फीसदी सच है. आज मैं अपनी पत्नी प्रज्ञा की बदौलत ही इस मुकाम पर पहुंच सका हूं. मेरी जिंदगी में सबसे अहम् बात मेरी पत्नी प्रज्ञा का हाउसवाइज होना है. डबल एम. ए. और गोल्ड मेडलिस्ट होते हुए भी मेरी इच्छा की खातिर प्रज्ञा हाउसवाइज बन कर हर कदम पर मेरे साथ चलती रही.

प्रज्ञा जैसे नींद से जागी. उसकी कुंठा परत दर परत पिघलने लगी और नितिन का भाषण जारी रहा, तन-मन से पूरी तरह समर्पित प्रज्ञा ने मुझे घर-बाहर की तमाम जिम्मेदारियों से मुक्त नहीं रखा होता, तो मैं

इतना बड़ा ग्रंथ नहीं लिख पाता. आज के दौर में औरतों का जॉब करना उनका स्टेटस सिंबल बनता जा रहा है. लेकिन मुझे लगता है कि अगर प्रज्ञा भी कहीं जॉब करके खुद की पहचान तलाश कर रही होती तो शायद मैं आज भी एक साधारण-सा लेक्चरार बना रहता.

तालियों की गड़गड़ाहट के साथ ही प्रज्ञा की कुंठा पूरी तरह बह गई. उसका एक्स-रे करने वाली निगाहें अब झुकने लगीं. शायद वे रंगे हाथों पकड़ी गई थीं. पति के बराबर, बल्कि ज्यादा कमाने के रौब में वे पति और बच्चों को कितना तवज्जो देती हैं? क्या उनके पति कभी नितिन की तरह सरेआम उनकी प्रशंसा कर सकते हैं? शायद कभी नहीं.

नितिन ने प्रज्ञा को कितना ऊंचा उठा दिया था, यह मेहमानों की नजरों में प्रज्ञा के प्रति उभर आए सम्मान से साफ पता चल रहा था.

मैं तो यही जानता हूं कि यह ग्रंथ मैं प्रज्ञा की बदौलत ही पूरा कर सका हूं. इसलिए इस पुरस्कार की असली हकदार मेरी पत्नी प्रज्ञा है. आय एम प्राउड ऑफ माई लवली वाइफ.

तालियों की गूंज के बीच प्रज्ञा स्टेज पर पहुंची. कुलपति महोदय ने नितिन को मेडल पहनाया तो नितिन ने उसे प्रज्ञा के गले में डाल दिया. प्रज्ञा का चेहरा अलौकिक तेज से चमक उठा. अपने पति के एक वाक्य 'आय एम प्राउड ऑफ माई वाइफ ' ने एक हाउसवाइफ को अपने हाउसवाइफ होने के गर्व से अभिभूत कर दिया।

तरकीब

वह दो साल से पैंतीस हजार का कर्ज लेने के लिए बैंक के रोज चक्कर काट रहा था। उस गरीब का सपना बस एक परचून की दुकान थी,पर बैंक वाले रोज कोई न कोई कहानी सुनाकर उसे टरका देते। एक दिन किसी ने उसे एक तरकीब सुझाई। अगले दिन वह बैंक गया। बैंक मैनेजर से एकांत में मिला। फिर उसे कुछ दिनों बाद बैंक ने तीस लाख कर्ज दे दिया। उसने उन रुपयों से व्यापार शुरू किया। कम समय में जिले के व्यापारियों में उसका नाम बढ़ने लगा।

समय बीतता गया। वह कई बैंकों से कई करोड़ रुपया निकालते हुए अपने व्यापार को देश की सीमाओं के बाहर तक फैलाता गया।अचानक एक दिन किसी बैंक ने फर्जी दस्तावेजों के सहारे करोड़ों रुपये निकालने का उस पर केस दर्ज किया। लेकिन अब वह परदेश की सैर कर रहा था। देश की मीडिया और अदालतें अब रोज उसके लिए हाय -तौबा मचाने लगी। फिर कई और बैंक घपले - घोटाले का केस उस पर दर्ज करते गये। उसे देश वापस कौन लायेगा? बैंकों ने क्यों चूक की ? अब यह अल्लाह ही जाने।

-सुरेश सौरभ

<u>लघु कथा</u>

जैसी करो और वैसी भरो

एक बार राधे श्याम की घर की बिजली खराब हो गई , उसने अपने दोस्त बलदेव के बेटे राहुल को बिजली ठीक करवाने के बुलाया ! राधे श्याम और बलदेव बचपन के दोस्त थे, इसलिए राधे श्याम के एक बार बुलाने पर बलदेव अपने बेटे राहुल को लेकर राधे श्याम के घर आ गया ! क्योंकि राहुल बिजली का ही काम करता था, राहुल ने काम करना शुरू किया , तारो में आग लग चुकी थी , इसलिए काफी समय लगा राहुल को बिजली ठीक करने में लाग रहा था , तब तक राधे श्याम और बलदेव बैठ कर चाय पी रहे थे , और राहुल अपना काम कर रहा था !

राहुल को काम करते -करते दोपहर हो गयी थी ! राहुल सुबह से ही तारो को बदलने में लगा हुआ था ! काम खत्म होते ही वह राधे श्याम के पास गया और कहा-

अंकल जी देख लीजिये , मैंने सारी तारो को बदल दिया है , अब आपको तकलीफ नहीं होगी

राधे श्याम- अच्छा किया बेटा , शुक्रिया। अच्छा कितने पैसे हुए

राहुल-अंकल जी 1500 रुपए हुये है।

राधे श्याम-इतने ....यह तो बहुत ज्यादा है

राहुल-अंकल जी काम भी तो बहुत था , सारी तारो को बदलना पड़ा, सुबह से दोपहर हो गई है।

राधे श्याम- अरे बेटा , क्या बात करते हो 1000 ले लो , घर की ही तो बात है , हम कोई बाहर के कोई है !

राहुल थोड़ा उदास हो गया, लेकिन पिता के सामने क्या बोलता , आखिर उसके पिता और राधेश्याम की दोस्ती बहुत पुरानी थी , इसलिए राहुल चुप रह गया और घर से बाहर निकल आया !

वही बाहर आकर राहुल देखता है, कि उसकी बाइक की गर्मी के बजह से हवा निकल गई थी , अब राहुल सोचने लगा कि अब इतनी गर्मी में वह अपने पिता जी को घर कैसे लेकर जायेगा ! तभी उसने राधेश्याम की कार देखी , और उसने राधे श्याम से उसकी कार की चाबी मांगी, तभी राहुल के पिता जी ने उससे कहा बेटा तुम्हें अंकल की कार की चाबी क्यों चाहिए ? कुछ नहीं पिता जी, बाइक खराब है , तो घर कैसे जायेंगे , आखिर अंकल की कार भी तो हमारी ही है !

-चांदनी सेठी कोचर

मनोविज्ञान

रुपेश कुमार

परिचय-चैनपुर जिला सीवान (बिहार) निवासी रुपेश कुमार भौतिकी में स्नाकोतर हैं। आप डिप्लोमा सहित एडीसीए में प्रतियोगी छात्र एव युवा लेखक के तौर पर सक्रिय हैं। 1991 में जन्मे रुपेश कुमार पढ़ाई के साथ सहित्य और विज्ञान सम्बन्धी पत्र-पत्रिकाओं में लेखन करते हैं। कुछ संस्थाओं द्वारा आपको सम्मानित भी किया गया है।

मनोविज्ञान का अर्थ होता है मन का विज्ञान ! इसके अंतर्गत मानव मन को समझने और उसके अनुसार कार्य करने की सलाह दी जाती हैं ! बच्चों के मनोविज्ञान का अध्ययन बाल मनोविज्ञान के अंतर्गत किया जाता है सभी चाहते हैं कि उनके बच्चों का भविष्य उज्जवल हो !

इस बारे में मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि जब बच्चों का मन खेलने का हो तो उनको पढ़ने के लिए मजबूर करना ठीक नहीं बल्कि इससे ज्यादा बच्चों के मनोविज्ञान को समझना जरूरी हैं ! बच्चों को पढ़ाने के लिए जब भी कहे तो उन पर गुप्त रूप से नजर अवश्य रखें कि वह पढ़ रहे हैं या यूं ही समय व्यतीत कर रहे हैं ! बच्चों पर दबाव डालने के बजाय यह ध्यान रखें कि जब उनका मन खेल की तरफ है तो उसे खेलने दो जब वे खेल ले तो फिर पढ़ने के लिए कहें इस मामले में बच्चों के साथ ही नहीं बड़ों के साथ भी ऐसा ही हैं बड़े भी मूंड नहीं होने पर काम नहीं करते हैं और किसी दबाव में आकर काम भी करते हैं तो मन नहीं लगता है काम अधूरा रह जाता है या उनमें गलतियां रह जाती हैं ! जब बड़ों के साथ ऐसा होता है तो बच्चों के साथ ऐसी जोर-जबर्दस्ती क्यों ?

बच्चों को पढ़ने के लिए तब कहे जब पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हो मूंड होने पर भी कम समय में बेहतर ढंग से पढ़ाई कर लेते हैं जबकि मूंड ना होने पर भी दिन भर में भी एक अक्षर तक भी नहीं पढ़ पाते हैं अधिकांश अभिभावक बच्चों के साथ मनमानी करते हैं और हम पर हमेशा ही पढ़ाई का दबाव बनाए रखते हैं इसका नतीजा यह होता है कि उनका पढ़ाई से सदा के लिए मन उचट जाता है और वह बाद में चाह कर भी पढ़ाई से जुड़ नहीं पाते हैं यानी पढ़ना लिखना उन्हें अच्छा नहीं लगता हैं !

कहने का तात्पर्य है कि बच्चा जो काम करना चाहता है उसे पहले वही काम करने दीजिए और खेलना चाहता है तो चलने दो आराम करना चाहता है या कार्टून देखना चाहता है तो आप मना ना करें मन दस बीस नहीं एक ही होता है ! बच्चा एक समय में एक ही काम कर सकता है हां वह खेल के प्रति इतनी रुचि क्यों लगता है और पढ़ाई से क्यों जी चुराता है ! इसका कारण जरुर ही ढूंढे पढ़ाई से लगभग सभी बच्चे कतराते हैं और जी भी चुराते हैं !

पढ़ाई जीवन के लिए कितना जरूरी है उन्हें इसका बोध समय-समय पर कराते रहने से वह पढ़ाई से दिल से जुड़ते हैं ! बच्चा कभी आपके पास बैठना चाहता है या कहानी सुनने की जिद कर रहा है तो आप भूलकर भी ना कहें कि जाकर अपनी पढ़ाई करो इससे बच्चा जाने अनजाने में आप के प्रति कठोर हो जाता है ! कठोरता बच्चों के भविष्य के लिए कताई ठीक नहीं है वह कहानी सुनना चाहता हो तो बाल कहानी उसे सुनाइए वह आपसे बात करना चाहता है तो उससे खुलकर बात कीजिये ! इससे बच्चों के साथ आपकी मित्रता हो जाएगी फिर वह आपकी हर बात मानने लगेगा और आप पढ़ने के लिए कहते हैं तो झट से पढ़ने बैठ जाता है ! पढ़ाई बच्चों के लिए एक ऊबाऊ हैं ! आप उन पर इसके लिए दबाव बनाने का प्रयास करेंगे तो हो सकता है पढ़ाई बोझ लगने लगे पढ़ाई के लिए उन्हें सीढी दर सीढी तैयार करें और मैं जैसे तैसे समझ आती जाएगी तो वैसे वैसे पढ़ाई से भी जुड़ते जाएंगे ! अगर आप बच्चों के मन को समझने में कामयाब हो गए तो यकीन मानिए बच्चा खुद-ब-खुद आपकी हर बात मान लेगा और आपको अपनी हर बात बच्चे से मनवाने के लिए डांट डपट का सहारा भी नहीं लेना पड़ेगा !

प्रिये.....

फसल लहलहाती तुम अफीम की
मैं सूखा पीड़ित ईख खेत प्रिये
हो मिट्टी तुम चिकनी और मुल्तानी
ज्येष्ठ धूप में तपती मैं गर्म रेत प्रिये
हो छड़ी जादुई बालपरी की तुम
जंगली टेढ़े बांस का मैं बेंत प्रिये
तुम लोकतंत्र की राजनीति प्यारी
मैं मतदाताओं का मत रेट प्रिये
हो बसंत माह सी आप सुहावन
तपता प्यासा मैं माह ज्येष्ठ प्रिये
पतली पतंग लौकी तुम जीरो साइ
मैं टेढ़े मेढ़े कद्दू कटहल का वेट प्रिये
पाक बलिदानी तुम राष्ट्रीय महरानी
हूँ दुर्घटनाग्रस्त मै विमान जेट प्रिये
हो तुम कांग्रेसी पवित्र कफन घोटाले
मैं टुटपुंजिया सा गली का सेठ प्रिये
हो मुकदमें तुम कपिल सिब्बल के
मैं श्री राम मन्दिर की डेट प्रिये

-आशुतोष मिश्र
तीरथ सकतपुर

पुस्तक पर प्रतिक्रिया/ समीक्षा

पुस्तक - कम्मो मटियारिन
लेखक - मुकेश दुबे।
प्रकाशक - शिवना पेपरबैक्स
कीमत - 330 रूपए।

लेखक बिरादरी के लोग मानें या न मानें ,आज की व्यस्त जिंदगी में लंबी- लंबी कहानियां और उपन्यास पढ़ने के लिए समय निकालना वाकई एक मुश्किल काम है। ऐसे में पढ़ने के शौकीन लोग ऐसी किताबें ढूंढ़ते हैं, जिन्हें वे चलते फिरते, यात्रा करते हुए, रात को सोने से पहले कुछ देर पढ़ सकें। अगर आप भी कोई ऐसी स्वस्थ मनोरंजन और सार्थक संदेश देने वाली पुस्तक ढूंढ़ रहे हैं तो **कम्मो मटियारिन** एक अच्छी च्वाइस साबित होगी। इसमें लगभग 87 छोटी-छोटी कहानियां हैं। मुकेश दुबे जी की ये कहानियां पढ़कर आपको बिल्कुल ऐसा लगेगा मानो आप किसी व्यस्त शहर या कस्बे में निकले हुए हैं और लगातार बदलते अलग अलग घटनाक्रमों को अपनी आंखों में देख रहे हैं और पात्रों की बातों को अपने कानों से सुन रहे हैं। भाषाशैली बेहद सरल, सहज और आकर्षक है। कहानियों पर शुरूआत से ही लेखक की मजबूत पकड़ बनी हुई है, जो अंत तक न बिखरती है न भटकती है। ओपनिंग लाइन्स की कुछ बानगी देखिए- बरामदे से धूप किसी शरारती बच्चे सी दबे पांव सरक रही है, यानी शाम होने को है (शब्दों में सिमटी यादें), 'बोझ है मेरे दिल, मेरी आत्मा और शैक्षिक दायित्व पर'। एक शिक्षक होकर ऐसा करना सच में गुनाह है। मैं कल ही बस्ती जाकर बंजारा टोला में मैं अपने गुनाह कबूल कर लूंगा (आत्मस्वीकोरोक्ति)। संग्रह की अधिकतर कहानियां दिलचस्प, पठनीय और किसी सामाजिक समस्या को उभारने वाली या रिश्तों की बारीकियां अथवा पेचीदगियां उकेरने में सक्षम हैं। शीर्ष कथा बेहद दिलचस्प और मर्मस्पर्शी है। आवरण आकर्षक है।

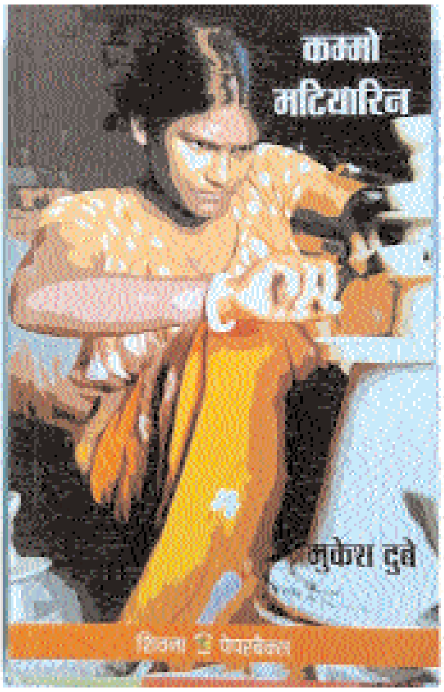

डॉ. जियाउर रहमान जाफरी

पुस्तक समीक्षा

विनय मिश्र की कृति तेरा होना तलाश़ से गुज़रते हुये

इन दिनों हिन्दी कविता में सबसे अधिक चर्चा हिन्दी ग़ज़ल की है.आज हिन्दी ग़ज़ल को जिन लोगों ने इस मुकाम पर लाया है उसमें एक महत्वपूर्ण नाम विनय मिश्र का भी है.विनय मिश्र हिन्दी के समर्पित ग़ज़लगो हैं जिनके पास ग़ज़ल वाला लहजा भी है.वो ग़ज़ल में उन विषयों को उठाते हैं जिसका सम्बन्ध रोजमर्रा की जिंदगी से है.उनके अधिकतर शेर छोटी बहर में लिखे गये हैं लेकिन उसमें शेरीयत में कोई कमी नहीं आई है.

तेरा होना तलाश़ उनकी ग़ज़ल की दूसरी किताब है इस बीच उन्होंने दोहा और ग़ज़ल की आलोचना पर भी बेहतर काम किया है.

लगभग एक सौ पांच ग़ज़लों की ये किताब हिन्दी ग़ज़ल की दावेदार को बेहतर तरीके से रखती है.जब शायर अपने पहले ही शेर में कहता है

वो रंजिश में नहीं अब प्यार में है
मेरा दुश्मन नये किरदार में है

तो वो समाज के नब्ज़ को बेहतर तरीके से पकड़ता है.उसे पता है कि हमारे साथ बड़ी मोहब्बत से पेश आने वाला आदमी अंदर से क्या इरादा रखता है.कभी अहमद फ़राज़ ने कहा था- जब देखना किसी को कई बार देखना..

आदमी आज भीड़ रहते हुये भी अकेलापन का शिकार है.जिंदगी की तेज रफ्तार में किसी के पास किसी के लिये फ़ुरसत नहीं है.विनय साहब कहते हैं..

अकेले जिंदगी जीनी पड़ी है
यहाँ इस बात की चर्चा बड़ी है

विनय मिश्र हिन्दी ग़ज़ल के शायर हैं.लेकिन वो उस खेमे के नहीं हैं जिन्होंने हिन्दीपन में अपनी गजलें बिगाड़ कर रख दी.वो ईमानदारी से उन सब शब्दों का प्रयोग करते हैं जो उनके शेर में बोलता है.

कहना न होगा कि अपनी ग़ज़लों की खूबसूरती के साथ संकलन का आवरण और छपाई भी बेहद आकर्षक है.

इस अनमोल कृति से हिन्दी ग़ज़ल और भी मजबूत हुई है.

कृति -तेरा होना तलाश़

परिचय- *डॉ.जियाउर रहमान जाफरी की शिक्षा एम.ए. (हिन्दी),बी.एड. सहित पीएचडी(हिन्दी) है। आप शायर और आलोचक हैं तथा हिन्दी,उर्दू और मैथिली भाषा के कई पत्र- पत्रिकाओं में नियमित लेखन जारी है।*

प्रश्नावली

1 काव्य के तत्व माने गए है -

दो

2 महाकाव्य के उदाहरण है -

रामचरित मानस, रामायण, साकेत, महाभारत, पदमावत, कामायनी, उर्वशी, लोकायतन, एकलव्य आदि

3 मुक्तक काव्य के उदाहरण है-

मीरा के पद, रुबैयां, सतशति

4 काव्य कहते है -

दोष रहित, सगुण एवं रमणियार्थ प्रतिपादक युगल रचना को

5 काव्य के तत्व है -

भाषा तत्व, बुध्दि या विचार तत्व, कल्पना तत्व और शैली तत्व

6 काव्य के भेद है -

प्रबंध (महाकाव्य और खण्ड काव्य), मुक्तक काव्य

7 वामन ने काव्य प्रयोजन माना -

दृष्ट प्रयोजन (प्रीति आनंद की प्राप्ति) अदृष्ट प्राप्ति (कीर्ति प्राप्ति)

8 भामह की काव्य परिभाषा है -

शब्दार्थों सहित काव्यम

9 प्रबंध काव्य का शाब्दिक अर्थ है -

प्रकृष्ठ या विशिष्ट रूप से बंधा हुआ।

10 रसात्मक वाक्यम काव्यम परिभाषा है -

पंडित जगन्नाथ का

11 काव्य के कला पक्ष में निहित होती है -

भाषा

12 काव्य में आत्मा की तरह माना गया है-

रस

13 तद्दोषों शब्दार्थी सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि, परिभाषा है -

मम्मट की

14 काव्य के तत्व विभक्त किए गए है-

चार वर्गो में प्रमुखतया रस, शब्द

15 कवि दण्डी ने काव्य के भेद माने है-

तीन

16 रमणियार्थ प्रतिपादक शब्द काव्यम की परिभाषा दी है -

आचार्य जगन्नाथ ने

17 काव्य रूपों में दृश्य काव्य है -

नाटक

18 काव्य प्रयोजन की दृष्टि से मत सर्वमान्य है -

मम्मटाचार्य का

19 काव्य प्रयोजनों में प्रमुख माना जाता है।

आनंदानुभूति का

20 काव्य रचना का प्रमुख कारण (हेतु) है -

प्रतिभा का

21 महाकाव्य और खण्ड काव्य में समान लक्षण है -

कथानक उपास्थापन एक जैसा होता है।

22 काव्य रचना के सहायक तत्व है -

वर्ण्य विषय(भाव), अभिव्यक्ति पक्ष (कला), आत्म पक्ष

23 मम्मट के काव्य प्रयोजन है -

यश, अर्थ, व्यवहार ज्ञान, शिवेतरक्षति, संघ पर निवृति, कांता सम्मलित

24 मम्मट के शिवेतर का अभिप्राय है ङ्क अनिष्ट

25 सगुणालंकरण सहित दोष सहित जो होई... परिभाषा है -

चिंतामणि की

26 भारतीय काव्य शास्त्र के अनुसार काव्य के तत्व है -

1 शब्द और अर्थ, 2 रस, 3 गुण, 4 अलंकार, 5 दोष, रीतिय

27 आधुनिक कवियों ने काव्य के प्रयोजन में क्या विचार दिए -

ज्ञान विस्तार, मनोरंजन, लोक मंगल, उपदेश

28 खण्ड काव्य में सर्गखण्ड होते है -

सात से कम

29 शैली के आधार पर काव्य भेद है -

गद्य, पद्य, चम्पू

30 दृश्य काव्य के भेद है -

रूपक और उप रूपक

31 महाकाव्य का प्रधान रस होता है -

वीर, शृंगार या शांत रस

32 महाकाव्य के प्रारंभ में होता है -

मंगलाचरण या इष्टदेव की पूजा

33 रूपक के भेद है -

नाटक, प्रकरण, भाण, प्रहसन, व्यायोग, समवकार, वीथि, ईहामृग, अंक

34 महाकाव्य में खण्ड या सर्ग होते है -

आठ और अधिक

35 महाकाव्य के एक सर्ग में एक छंद का प्रयोग होता है। इसका परिवर्तन किया जा सकता है -

सर्ग के अंत में।

36 मुक्तक काव्य है - एकांकी सदृश्यों को चमत्कृत करने में समर्थ पद्य

37 प्रबंध काव्य वनस्थली है तो मुक्तक काव्य गुलदस्ता है। यह उक्ति किसने कही -

आचार्य रामचंद्र शुल्क ने

38 मुक्तककार के लक्षण होते है -

मार्मिकता, कल्पना प्रवण, व्यंग्य प्रयोग, कोमलता, सरलता, नाद सौंदर्य

39 मुक्तक के भेद है -

रस मुक्तक, सुक्ति मुक्तक

40 काव्य के गुण है -

काव्य के रचनात्मक स्वरूप का उन्नयन कर रस को उत्कर्ष प्रदान करने की क्षमता

41 भरत और दण्डी के अनुसार काव्य के गुण के भेद है

- श्लेष, प्रसाद, समता, समाधि, माधुर्य, ओज, पदसुमारता, अर्थव्यक्ति, उदारता व कांति

42 आचार्य मम्मट ने काव्य गुण बताए -

माधुर्य, ओज और प्रसाद

43 माधुर्य गुण में वर्जन है - ट, ठ, ड, ढ एवं समासयुक्त रचना

44 काव्य दोष वह तत्व है जो रस की हानि करता है। परिभाषा है -

आचार्य विश्वनाथ की।

45 मम्मट ने काव्य दोष को वर्गीकृत किया-

शब्द, अर्थ व रस दोष में

46 श्रुति कटुत्व दोष है -

जहां परूश वर्णों का प्रयोग होता है।

47 परूष वर्णों का प्रयोग कहां वर्जित है -

शृंगार, करूण तथा कोमल भाव की अभिव्यंजना में

48 परूष वर्ग किस अलंकार में वर्जित नहीं है - यमक आदि में

49 परूष वर्ण कब गुण बन जाते है -

वीर, रोद्र और कठोर भाव में

50 श्रुतिकटुत्व दोष किस वर्ग में आता है -

शब्द दोष में

51 काव्य में लोक व्यवहार में प्रयुक्त शब्दों का प्रयोग दोष है -

ग्राम्यत्व

52 अप्रीतत्व दोष कहलाता है -

अप्रचलित पारिभाषिक शब्द का प्रयोग। यह एक शास्त्र में प्रसिध्द होता है, लोक में अप्रसिध्द होता है।

53 शब्द का अर्थ बड़ी खींचतान करने पर समझ में आता है उस दोष को कहा जाता है -

क्लिष्टत्व

54 वेद नखत ग्रह जोरी अरघ करि सोई बनत अब खात...। में दोष है -

क्लिष्टत्व

55 वाक्य में यथा स्थान क्रम पूर्वक पदो का न होना दोष है -

अक्रमत्व

56 अक्रमत्व का उदाहरण है -

सीता जू रघुनाथ को अमल कमल की माल, पहरायी जनु सबन की हृदयावली भूपाल

57 दुष्कमत्व दोष होता है - जहां लोक और शास्त्र के विरूध्द क्रम से वस्तु का वर्णन हो।

58 आली पास पौढी भले मोहि किन पौढन देत- में काव्य दोष है -

ग्रामयत्व

59 काव्य में पद दोष कितने है -

16

60 अर्थ दोष कहते है -

जहां शब्द दोष का निराकरण हो जाए, फिर भी दोष बना रहे वहां अर्थ दोष होता है।

61 वाक्य दोष होते है -

21 इक्कीस

62 अलंकार के भेद होते है -

शब्दालंकार, अर्थालंकार, उभयालंकार

63 अलंकार कहते है -

काव्य की शोभा बढाने वाले को।

64 काव्य में अर्थ द्वारा चमत्कार उत्पन्न करते है उसे कहते है -

अर्थालंकार

65 मानवीकरण अलंकार किसे कहते है -

अचेतन अथवा मानवेतर जड़ प्रकृति पर मानव के गुणों एवं कार्य कलापों का आरोप कर उसे मानव सदृश्य सप्राण चित्रित किया जाता है। अमूर्त पदार्थ एवं भावों को मूर्त रूप दिया जाता है।

66 मुनि तापस जिनते दुख लहही, ते नरेश बिनु पावक दहही- में अलंकार है -

विभावना

67 जहां वास्तव में विरोध न होने पर भी किंचित विरोध का आभास हो वहां अलंकार होता है -

विरोधाभास

68 प्रकृति पर मानव व्यवहार का आरोप किया जाता है वहां अलंकार है -

मानवीकरण

69 %मेघमय आसमान से उतर रही वह संध्या सुंदरी परी सी% में अलंकार है -

मानवीकरण

70 जहां बिना करण या विपरित कारण के रहते कार्य होने का वर्णन हो वहां अलंकार है - विभावना

71 लोचन नीरज से यह देखो, अश्रु नदी बह आई में अलंकार है- विभावना

72 अलंकारों की निश्चित परिभाषा दी है -

दण्डी ने काव्यादर्श में

73 शब्दालंकार के भेद है - आठ

74 यमक अलंकार है-

जहां एक शब्द एक से अधिक बार आए और हर बार उसका अर्थ भिन्न हो।

75 अपूर्व थी श्यामल पत्रराशि में कदम्ब के पुष्प कदम्ब की छटा- इस यमक अलंकार में कदम्ब का अर्थ प्रयुक्त हुआ है -

वृक्ष और समूह के लिए

76 यमक अलंकार का उदाहरण है -

- फिर झट गुल कर दिया दिया को दोनों आंखे मीची

- भजन कह्यो ताते भयो, भयो न एको बार

- भयेऊ विदेह विदेह विसेखी

- तीन बेर खाती ते वें तीन बेर खाती है

- बसन देहु, ब्रज में हमें बसन देहु ब्रजराज

- सारंग ले सारंग चली, सारंग पूगो आय

77 अनेक अर्थो का बोध कराने वाला एक शब्द कविता में होता है उसे कौनसा अलंकार कहते है - श्लेष

78 श्लेष अलंकार के उदाहरण है -

(रेखांकित)

- जो घनीभूत पीड़ा थी, मस्तक में स्मृति छाई

- दुर्दिन में आंसू बनकर वह आज बरसने आई

- चली रघुवीर सिलीमुख धारी

- पानी गये न उबरे मोती मानुष चून

- नवजीवन दो घनश्याम हमें

- सुबरन को ढूंढत फिरें कवि, कामी अरू चोर

79 सौंदर्यमलंकार उक्ति किसकी है -

आचार्य वामन की

80 किसी प्रस्तुत वस्तु की उसके किसी विशेष गुण, क्रिया, स्वभाव आदि की समानता के आधार पर अन्य अप्रस्तुत से समानता स्थापित की जाए तो अलंकार होगा - उपमा अलंकार

81 उपमा के अंग है - उपमेय (प्रस्तुत), उपमान (अप्रस्तुत), वाचक, साधारण धर्म

82 पूर्णापमा कहते है - जिसमें उपमा के चारों अंगों का उल्लेख हो।

83 लुप्तोपमा कहते है -

उपमा में चारों अंगों में से एक या एक से अधिक अंग लुप्त हो

84 पूर्णापमा के उदाहरण है -

मुख कमल जैसा सुंदर है

- कोमल कुसुम समान देह हो। हुई तप्त अंगारमयी

85 लुप्तोपमा के उदाहरण है -

मुख कमल जैसा

- उन कर जिसके है सोहती मुक्तमाला वह नव नलिनी से नेत्रवाला कहा है

86 जब उपमा में एक उपमेय के अनेक उपमान हो तो अलंकार होगा -

मालोपमा

87 मालोपमा के उदाहरण है -

- मुख चंद्र और कमल समान है

- नील सरोरूह, नील मनी, नील नीरधर श्याम

- आशा मेरे हृदय मरू की मंजु मंदाकिनी

88 उपमेय में उपमान की संभावना को अलंकार कहते है - उत्प्रेक्षा

89 उपमेय में संभावना की अभिव्यक्ति के शब्द है - मानो, मनो, जानो

90 उत्प्रेक्षा, रूपक व उपमा से किस कारण अलग होता है - संभावना

91 उत्प्रेक्षा अलंकार के उदाहरण है -

- मानो दो तारे क्षितिज जाल से निकले

- शरद इंदिरा के मंदिर की मानो कोई गैल रही

- देख कर किसी की मृदु मुस्कयान, मानो हंसी हिमालय की है

- विधु के वियोग से विकल मूक, नभ जला रहा था अपना उर

जलती थी तवा सदृश्य पथ की रज भी बनी भऊर

92 उत्प्रेक्षा अलंकार के भेद है -

वस्तुत्प्रेक्षा, हेतुत्प्रेक्षा, फलोत्प्रेक्षा

93 एक वस्तु में दूसरी वस्तु की संभावना की जाती है (एक वस्तु को दूसरी वस्तु मान लिया जाता है) उसमें अलंकार होगा -

वस्तुत्प्रेक्षा

94 वस्तुत्प्रेक्षा अलंकार के उदाहरण है -

- लखत मंजु मुनि मण्डली मध्य सीय रघुचंद, ज्ञानसभा जनु तनु धरे भगति सच्चिदानंद

- जनु ग्रह दशा दूसह दुखदायी

- हरि मुख मानो मधुर मयंक

95 हेतुत्प्रेक्षा अलंकार कहा जाता है - इसमें अहेतु में हेतु की संभावना की जाती है, जो हेतु नहीं है उसे हेतु मान लिया जाता है।

96 हेतुत्प्रेक्षा अलंकार का उदाहरण है -

- अरुण भाये कोमल चरण भुवि चलिबे तें मानु

- मुख सम नहि, याते मनों चंदहि छाया छाय

- मुख सम नहि याते कमल मनु जल रहो छिपाई

- सोवत सीता नाथ के भृगु मुनि दीनी लात

- वह मुख देख पाण्डु सा पडकर, गया चंद्र पश्चिम की ओर

97 फलोत्प्रेक्षा अलंकार कहते है - अफल में फल (उद्देश्य) की संभावना की जाती है।

98 फलोत्प्रेक्षा के उदाहरण है -

- तव मुख समता लहन को जल सेवत जलजात

- तव पद समता को कमल जल सेवत इक पांय

- बढ़त ताड को पेड यह मनु चूमन आकाश

99 रूपक अलंकार कहते है - जब एक वस्तु पर दूसरी वस्तु का आरोप किया जाए यथा मुख कमल है। (उपमेय में उपमान का आरोप किया जाए)

100 रूपक अलंकार के भेद है -

सांग रूपक, निरंग रूपक, परंपरित रूपक

101 सांग रूपक कहते है -

जब उपमेय पर उपमान का आरोप किया जाए साथ ही उपमान के अंगों का भी उपमेय के अंगों पर आरोप किया जाए।

102 सांग रूपक के उदाहरण है -

- उद्यो ! मेरी हृदयतल था एक उद्यान न्यारा, शोभा देती अमिल उसमें कल्पना क्यारियां थी

- न्यारे- न्यारे कुसुम कितने भाव के थे अनेको, उत्साह के विपुल विटपी मुग्धकारी महा थे

103 जब केवल उपमान का आरोप उपमेय पर किया जाए तो रूपक होगा - निरंग रूपक

104 निरंग रूपक के उदाहरण है -

- चरन- कमल मृदु मंजु तुम्हारे

- हरि मुख मृदुल मयंक

105 परम्परित रूपक है - परम्परित में दो रूपक होते है। एक रूपक दूसरे से परम्पराबध्द होता है।

106 परम्परित रूपक के उदाहरण है -

- आशा मेरे हृदय मरू की मंजु मंदाकिनी है

- रवि कुल- कैरव विधु रघुनायक

- उदयो ब्रज नभ आई यह हरि मुख मधुर मयंक

107 जब सादृश्य के कारण उपमेय में उपमान का भ्रम हो तो अलंकार होगा - भ्रांतिमान अलंकार

108 भ्रांतिमान अलंकार के उदाहरण है -

- जानि श्याम को स्याम घन नाचि उठे वन मोर

- ओस बिंदु चुग रही हंसिनी मोती उनको जान

- मनि- मुख मेली ढारि कपि देही

- पट पोंछति चूनो समुझि नारी निपट अयानि

109 संदेह अलंकार की परिभाषा है - जब सादृश्य के कारण एक वस्तु में अनेकन्य वस्तु के होने की संभावना पडे और निश्चय न हो पाए तब संदेह अलंकार होता है।

110 संदेह अलंकार की पहचान के वाचक शब्द है - कि, किंधो, या, अथवा आदि

111 संदेह अलंकार के उदाहरण है -

- हे सखी ! यह हरि का मुख है या चंद्रमा उगा है

- कहहि सप्रेम एक- एक पाही, राम लखन सखी हो हिं कि नाहीं

112 असंगति अलंकार है - जब साथ रहने वाली वस्तुओं को अलग- अलग स्थानों में रखा जाए।

113 असंगति अलंकार के उदाहरण है -

- पायन की सुधि भूल गयी, अकुलाय महावर आंखिन दीनो

- आये जीवन देन घन, लागे जीवन लेन

114 विभावना अलंकार के उदाहरण है -

- बिनु पद चले, सुने बिनु काना

- प्यास मिटी पानी बिना, मोहन को मुख देखि

- सहस सवार जिते सवा लेकर सौ असवार

- तेज छत्र धारिन हूं, असहन ताप करंत

115 सीतहहि लै दसकंध गयो, पै गयो है विचारो समुंदर बांध्यो में अलंकार है - असंगति

116 लागत लाज लगाम नहिं, नैक न गहत

मरो, होत तोहि लखि बाल के दृग तुरंग मुंह जोर में अलंकार है - रूपक

117 घिर रहे थे घुंघराले बाल, अंस अवलम्बित मुख के पास नील घन शावक से सुकुमार सुधा भरने को विधु के पास में अलंकार होगा - उत्प्रेक्षा

118 जब उपमेय और उपमान में भिन्नता होने पर भी समानता स्थापित की जाए तब अलंकार होगा - उपमा

119 उपमेय पर उपमान का निषेध रहित आरोप होने पर अलंकार होगा - रूपक

120 लता भवन तें प्रकट भे, तेहि औसर दोउ भाई, निकले जनु जुग विमल विधु, जलद पटल बिलगाए में अलंकार है - उत्प्रेक्षा

121 सादृश्यस के कारण उपमेय में उपमान का संशय हो वहां अलंकार होगा - संदेह

122 उत्प्रेक्षा अलंकार का लक्षण है - उपमेय में उपमान की कल्पना

123 अलंकार व लक्षणों को सुमेलित कीजिए -

- यमक - भिन्न अर्थ वाले वर्ण समुदाय की क्रमशः आवृति

- श्लेष - एक ही शब्द में अनेक अर्थों का अभिधान

- असंगति - कारण व कार्य के निरंतर सम्बन्ध के परित्याग के साथ विरोध का आभास

- विभावना - प्रसिध्द कारण के अभाव में कार्योत्पति का चमत्कारपूर्ण वर्णन

124 सादृश्य के कारण उपमेय को निश्चयपूर्वक उपमान समझ लिया जाए तब कौनसा अलंकार होगा - भ्रांतिमान

125 जड़ प्रकृति के सजीव चित्रण के लिए छायावादी कवियों ने किस अलंकार का बहुतायत में प्रयोग किया - मानवीकरण

126 बीती विभावरी जाग री, अम्बर पनघट में डूबो रही तारा घट उषा नागरी में अलंकार है - रूपक और मानवीकरण

127 ऊंचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी, ऊंचे घोर मंदर के अंदर रहाती है में अलंकार है - यमक

128 यों- यों बुडे स्याम रंग, त्यों- त्यों उज्वल होय में अलंकार है - विरोधाभास

129 वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा सी, वह दीपशिख सी शांत भाव में लीन में अलंकार है - उपमा

130 भ्रांतिमान, विरोधाभास, विभावना व श्लेष में अर्थालंकार नहीं है - श्लेष

131 जहां काव्य में चमत्कार अर्थ पर आश्रित होता है, वहां अलंकार होगा - अर्थालंकार

132 सोहत ओढे पीत पट, स्याम सलोने गात, मनो नीलमनि सैल पर आतपपरयो प्रभात में अलंकार है - उत्प्रेक्षा

133 पानी केरा बुदबुदा अस मानुस की जात में अलंकार है- उपमा

134 धीरे- धीरे हिम आच्छादन हटने लगा धरातल से, जगी वनस्पतियां अलसाइ, मुख धोती शीतल जल से में अलंकार होगा - मानवीकरण

135 बढत- बढत सम्पति सलिल, मन सरोज बढ जाए, घटत- घटत फिर ना घटे बरू समूल कुम्हिलाय में अलंकार है - रूपक

136 इस काल मारे क्रोध के तनु कांपने उनका लगा, मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा में अलंकार है - उत्प्रेक्षा

137 जानि स्याम घनश्याम को नाचि उठे वन मोर में अलंकार है - भ्रांतिमान

138 मुनि तापस जिनते दुख लहही ते नरेश बिनु पावक दहही में अलंकार होगा - विभावना

139 सारी बिच नारी है कि नारी बीच सारी है, सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है में अलंकार है - संदेह

140 उन्नत हिमालय से धवल यह सुरसरी यों टूटती मानो पयोधर से धरा के दुग्ध धारा छुटती में अलंकार होगा - उत्प्रेक्षा

141 जय- जय जय गिरिराज किशोरी, जय महेश मुख चंद्र चकोरी में अलंकार है - रूपक

142 सरद सरोरूह नैन, तुलसी भरे सनेह जल में अलंकार है- रूपक

143 है बिखेर देती वसुंधरा, मोती सबके सोने पर, रवि बटोर लेता है उनको सदा सवेरा होने पर में अलंकार है - मानवीकरण

144 बिनु पद चलै, सुने बिनु काना, कर बिनु कर्म करै विधि नाना में अलंकार है - विभावना

145 सरद सरोरूह नैन, तुलसी भरे सनेह जल में अलंकार है - रूपक

146 पीपरपात- सरिस मन डोला में अलंकार है - उपमा

147 रहिमन जो गति दीप की कुल कपूत गति सोय, बारे उजियारे लगे बढे अंधेरो होय में अलंकार होगा - श्लेष

148 मेखलाकार पर्वत अपार, अपने सहस्त्र दृग सुमन फाड, अवलोक रहा था बार- बार नीचे जल में निज महाकार में अलंकार दृष्टिगत होता है - रूपक

149 नील परिधान बीच सुकुमार, खुल रहा मृदुल अधखुला अंग, खिला हो यों बिजली का फूल, मेघ वन बीच गुलाबी रंग में अलंकार है - उत्प्रेक्षा व रूपक

150 निदंक नियरे राखिये, आंगन कुटी छवाय, बिनु पानी साबुन बिना, निरमल करत सुभाय में अलंकार है - विभावना

151 या मुरली मुरलीधर की, अधरानधरी अधरा न धरोंगी में अलंकार है - यमक

152 तुलसी सुरेश- चाप, कैधों दामिनी कलाप, कैधो चली मेरु ते कृसानु सरि भारी है में अलंकार है - संदेह

153 धनि सूखे भरे भादो मांह, अबहु न आये सींचन नाहा में अलंकार है - विरोधाभास

154 कपि करि हृदय विचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब जानि असोक अंगार सीय हरिष उठि कर गह्यो में अलंकार है - भ्रांतिमान

155 कहते हुए यो पार्थ के दो बूंद, आंसू गिर पडे, मानो हुए दो सीपियों से व्यक्त दो मोती बडे में अलंकार है - उत्प्रेक्षा

156 भजन कह्यो तासो भयो, भयो न एको बार, दूरि भजन जासों कह्यो, सौ तै भयों गंवार में अलंकार है - यमक

157 लोचन सारथ करत है, तिल उपजावत नेह में अलंकार है - श्लेष

158 धीरे- धीरे संशय से उठ, बढ अपयश से शीघ्र अछोर, नभ के उर में उमड मोह से फैल लालसा से निशि भोर में अलंकार है - उपमा

159 उपमा के वाचक शब्द है - समान, सम, सा, से सी आदि

160 उत्प्रेक्षा के वाचक शब्द है - मनु, मानो, जनु, जनहु, जानो, मनहु आदि

161 रूपक के वाचक शब्द है - कोई भी नहीं इसमें उपमेय और उपमान होते है।

162 जहां कारण एक स्थान पर तथा कार्य अन्य स्थान पर वर्णित किया जाए वहां अलंकार होता है- असंगति

163 संदेह अलंकार के वाचक शब्द है - किधों, कैधों, या, अथवा

छन्द विधान -

164 गणों की संख्या होती है - आठ (य मा ता रा ज भा न स ल ग म)

165 गण में कितने वर्ण होते है - तीन गुरु (ऽऽऽ)

166 रोला और उल्लाला के संयोग से बनने वाला छंद है - छप्पय

167 वर्ण, मात्रा, गति, यति के नियमों से नियंत्रित रचना कहलाती है - छंद

168 तीन वर्णों का समूह कहलाता है - गण

169 किस गण में तीनों वर्ण गुरु होते है - मगण

170 किस गण में तीनों वर्ण लघु होते है - नगण

171 पात भरी सहरी सकल सुत बारे-बारे। किस छंद का उदाहरण है - कवित्त का

172 मात्रिक छंद कहते है - मात्रिक छंद में एक मात्रा, दो मात्रा या संयुक्ताक्षर के आधार पर चरणों में मात्रा की गणना की जाती है। मात्रा संख्या का विधान होने से इन्हें मात्रिक छंद कहते है।

173 वर्णिक छंद की परिभाषा है - वर्णिक छंद में वर्णो की गणना होती है इसके लिए गण विधान रहता है। चरण में गणों के अनुसार वर्ण रखे जाते है उसी के अनुसार यति- गति रखी जाती है।

174 मात्रिक सम छंद है - तोमर, चौपई, चौपाई, शृंगार, रोला, रूपमाला, गीतिका, हरिगीतिका, सोरठा, उल्लाला

175 मात्रिक विषम छंद है- कुण्डलिया, दोहा, रोला, छप्पय

176 वर्णिक सम छंद है- इंद्रवज्रा, उपेन्द्र वज्रा, उपजाति, वंशस्थ, भुजंग प्रयात, तोटक, द्रुतविलम्बित, बसंततिलका, शिखरणी, मंदाक्रांता, मतगयंद, मालती

177 किसको पुकारे, यहां रोकर अरण्य बीच, चाहे जो करो शरण्य शरण तिहारे है- में छंद है - कवित्त

178 दिवस का अवसान समीप था। यह किस चरण का छंद है - द्रुत विलम्बित

179 कवित्त छंद के प्रत्येक चरण में वर्णो की संख्या होती है - 31

180 हरिगीतिका छंद के प्रत्येक चरण में मात्राएं होती है - 28 तथा अंत में एक लघु एक गुरु

181 दिवस एक प्रभंजन का हुआ। अति प्रकोप घटा नभ में घिरी। किस वर्णिक छंद से समबन्धित है - द्रुतविलम्बित

182 पदकमल धोई चढाई नाव न नाथ उतराई चहौं। किस छंद से सम्बन्धित है - सवैया

183 दोहा छंद के विषम चरणों की मात्राएं होती है- 13- 13

184 छंद शास्त्र में यति कहते है - लय का अनुगमन करने वाले विरामों को

185 छंद शास्त्र में गति कहते है- लय के अनुसार प्रवाह का निर्वाह करना

186 छंद शास्त्र में गति क्यों आवश्यक है- मात्रिक छंदों में चरण की मात्राओं की सही गणना का ध्यान रखने के लिए।

187 किस छंद के प्रत्येक चरण में क्रमशः एक नगण, दो भगण और एक रगण होता है और प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते है- द्रुतविलम्बित छंद में (न भा भ रा एवं 12 वर्ण)

188 द्रुतविलम्बित छंद के उदाहरण है -

- प्रबल जो तुम्हे में पुरुषार्थ हो, सुलभ कौन तुम्हे न पदार्थ हो

प्रगति के पथ में विचरो उठो। भुवन में सुख-शांति भरो उठो

- दिवस का अवसान समीप था, गगन कुछ लोहित हो चला

189 हरिगीतिका छंद का परिचय है - यह मात्रिक छंद है। प्रत्येक चरण में कुल 28 मात्रा। 16- 12 पर यति। चरणांत में एक लघु तथा एक गुरु वर्ण होना आवश्यक

190 हरिगीतिका के उदाहरण है -

- जो चाहता संसार में कुछ मान औ सम्मान है, उसके लिए इस मंत्र से बढ कर न और विधान है

- जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है, वह नर नहीं नर पशु निरा है और मृतक समान है।

191 कवित्त छंद की परिभाषा हे - यह वर्णिक मुक्तक छंद है। इसमें केवल वर्णो की संख्या निश्चित रहती है। प्रत्येक चरण में 31 वर्ण होते है तथा 16 व 15 वर्णो पर यति होती है। इसे मनहरण कवित्त छंद भी कहते है।

192 मनहरण कवित्त या धनाक्षरी के उदाहरण है -

- पात भरी सहरी, सकल सुत बोर- बोर, केवट की जाति, कुछु बेद ना पढाइहों

193 सवैया छंद का उदाहरण है -

- पदकमल धोई चढाई नाव न नाथ उतराई चहौं।

194 दोहा छंद के लक्षण है - यह मात्रिक छंद है। इसमें विषम चरणों में 13- 13 मात्राएं तथा सम चरण में 11- 11 मात्राएं होती है। विषम चरण के अंत में जगण (ह्र स्र ह्र) न रहे। सम चरण के अंत में लघु होता है।

195 दोहा छंद का उदाहरण है - नहीं पराग नहिं मधुर मधु,नहि विकास इही काल

- मानस मंदिर में सती, पति की प्रतिमा थाप

जलती सी उस विरह में, बनी आरती आप

196 बत्तीस से अधिक मात्राओं के और छब्बीस से अधिक वर्णो के छंद कहलाते है - दण्डक

197 छंद की प्रत्येक पंक्ति कहलाती है - चरण

198 चारों चरणों में समान मात्राओं वाले छंद को कहते है - मात्रिक सम छंद

199 छंद में पंक्ति का पहला व तीसरा चरण कहलाता है - विषम

200 छंद में पंक्ति का दूसरा और चौथा चरण कहलाता है - सम

एक अल्हड़ दीवाना कवि-राजकुमार कुम्भज

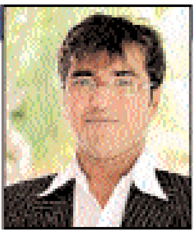

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

सहज, सौम्य और सरल जिनका मिजाज है, सबकुछ होते हुए भी फकीराना ठाठ, आजाद पंछी की तरह गगन को नापना, मजाक और मस्ती की दुनिया से कविता खोजने वाले, अल्हड़ और मनमौजीपन में जिन्दादिली से जीने वाला, कविता लिखने के लिए केवल मुट्ठी उठा कर नभ को पात्र भेजने का कहने वाला, जो बिना अलंकार के सरलता से कविता कह जाए, यदि अहिल्या की नगरी इंदौर में ऐसा कोई शख्स आपको मिलेगा तो वह जरूर अपना नाम राजकुमार कुम्भज ही बताएगा।

जी हाँ, 12 फरवरी 1941 को इंदौर (मध्य प्रदेश) में जन्में और कविता जितने सरल, पानी जितने सहज और निर्लोभी, जिसे लेश मात्र भी यह घमंड नहीं हो कि वो ही है जिसकी कविता के सौन्दर्य के कारण सन 1919 में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित 'चौथा सप्तक' में शामिल अग्र कवियों में उनका नाम लिया जाता हो, जिनकी 20 से ज्यादा पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हो वही राजकुमार कुम्भज हैं।यह तो तय है कि मालवा की धीर वीर गंभीर रत्नगर्भा धरती ने राजकुमार कुम्भज जैसे रत्नों को जन्म देकर जरूर अभिमान किया होगा।

हजारों किस्से, सैकड़ो बातें, बीसियों विषय जिन पर कुम्भज जी बहुत कुछ सिखाते हैं, इस पहचान का नाम ही राजकुमार हो। 'मिनी पोएट्री' या कहें लघु कविता जैसा नवाचार कर साहित्य जगत में नई कविता को स्थान दिलाने वाले लोगों में अग्रणी कवि कुम्भज कविता का कुंभ है। वह न केवल साहित्य जगत में अपितु जीवन में भी राजकुमार ही रहे।

कुम्भज जी के जीवन के यथार्थ के प्रति विचार इतने आधुनिक है कि 1911 में पारम्परिक मान्यताओं एवं रूढ़ियों को तोड़ते हुए प्रेमविवाह किया, जो लिखा वही जीया भी। जवानी के दिनों में जींस-शर्ट और बड़े बक्कल वाला चौड़ा बेल्ट पहन बुलेट पर सवारी करने वाले बुलटराजा कुम्भज जिसका ठिकाना या कहें अनाधिकृत पता इंडियन कॉफ़ी हाउस हुआ करता था, जिसने प्रेम को लिखा है, जो प्रेम को जीया भी है और सत्य इतना कि जो किया बेझिझक बेबाक तरीके से बोल दिया, न लाग लपेट न डर।

साहित्य से लेकर राजनैतिक परिपेक्ष तक, देश से लेकर विदेश तक हर मुद्दे पर गहरी और मजबूत पकड़ रखकर अपने लेखन से बेबाक़ टिप्पणी देने वाले का नाम कुम्भज है।राजकुमार कुंभज समकालीन हिन्दी कविता के सबसे बड़े हस्ताक्षर है।

जो, जितना, हँसता हूँ मैं
उतना, उतना, उतना ही रोता हूँ
एक दिन एकांत में
एक दिन सूख जाता है भरा पूरा तालाब
कुबेर का खजाना भी चूक जाता है एक दिन
स्त्रियाँ भी कर देती हैं इनकार प्रेम करने से
उमंगों की उड़ान भरने वाले तमाम कबूतर भी
उड़ ही जाते हैं एक न एक दिन अनंत में
फिर रह जाता है एक दिन सिर्फ वह सच जो चहुंसन
माना कि पहाड़ भी उड़ते थे कभी फूँक से
मगर अब उड़ता नहीं है पत्ता कोई शक नहीं कि बहती हैं हवाएँ...
बहती हवाओं की तरफ ही पूर्ववत शक नहीं कि पकती हैं फसलें...
पकती फसलों की तरह ही पूर्ववत शक नहीं कि झरती हैं पत्तियाँ..
झरती पत्तियों की तरह ही पूर्ववत मैंने सोचा मुझे हँसना चाहिए
मैं हँसा और निरंतर-निरंतर जोर-जोर से भी
फिर उतना, उतना, उतना ही रोया एक दिन एकांत में भी
जितना, जितना, जितना हँसा मैं
सार्वजनिक सभा में जितना, जितना, जितना भी हँसता हूँ मैं
रोता हूँ उससे कहीं ज्यादा।

ऐसी कविताओं के माध्यम से समाज को चिन्तन देने वाले जिन्दादिल, अल्हड़ और मस्ताने जो सुफियाना मिजाज से निज हृदयासन पर बैठाने वाले कवि है। फक्कड़ मिजाज और नई कविता में गहनता के साथ कम शब्दों में यथार्थ को बयाँ करने वाले राजकुमार कुम्भज जी की काव्य साधना प्रणम्य है।

वागेश्वरी की कृपा उन पर सदा बनी रहे और हम नौजवानों को सदैव यह दिवाकर अपनी काव्य रश्मियों से प्रकाश बाँटता रहे यही कामना करते हैं।

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

पत्रकार एवं स्तंभकार

[लेखक डॉ. अर्पण जैन 'अविचल' मातृभाषा उन्नयन संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं तथा देश में हिन्दी भाषा के प्रचार हेतु हस्ताक्षर बदलो अभियान, भाषा समन्वय आदि का संचालन कर रहे हैं।]

संघर्षों का सुकुमार डॉ. वासिफ काजी

एक नाम जो शिक्षण से लेकर साहित्य साधना में लग कर हिन्दी सेवा में जुड़ गया, और अपनी कविताओं के माध्यम से समाज को एक चिंतन देने में कामयाब हो रहा है। हम बात कर रहे हैं डॉ वासिफ क़ाज़ी की, जिनका मध्यप्रदेश के बड़वानी जिले में हुआ। बचपन धार जिले के कुक्षी नगर में व्यतीत कर नगर के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों से शिक्षा प्राप्त कर स्नातक एवं स्नातकोत्तर श्रेणी की शिक्षा बड़वानी एवं इंदौर में प्राप्त की ।

5 अगस्त,1981 को श्रीमती शमा क़ाज़ी और स्व.बदरूद्दीन क़ाज़ी जी के घर हिन्दी के एक सेवक वासिफ ने जन्म लिया जिनके एक छोटे भाई डॉ. अमन काजी हैं। आपकी शैक्षणिक योग्यता एम.ए. (हिंदी साहित्य, अंग्रेज़ी साहित्य),एम.एस-सी. (रसायन), हिंदी काव्य एवं कहानी की, वर्तमान सिनेमा में प्रासंगिकता विषय पर शोध-प्रबंध पूर्ण है। आपका विवाह श्रीमती शबाना क़ाज़ी से हुआ। आपका कार्यक्षेत्र अध्यापन, शैक्षणिक कार्य एवं स्वतंत्र लेखन हैं । मूलतः आप काव्य, ग़ज़ल, आलेख एवं समीक्षा लिखते है।

कुक्षी नगर में सात वर्ष तक हाईस्कूल एवं हायर सेकंडरी कक्षाओं में अध्यापन का कार्य भी कराया । सन् 2007 से इंदौर शहर की कई ख्यातनाम कोचिंग क्लासेस में एवं इस्लामिया करीमिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अनवरत कुशलता पूर्वक अध्यापन कराते हुए ज्ञान दायिनी मां सरस्वती की पुण्य आराधना कर रहे हैं ।

प्रारंभ से ही साहित्यिक गतिविधियों में अभिरुचि रखने वाले वासिफ क़ाज़ी के कई लेख दैनिक नवभारत,नईदुनिया ,खबर हलचल और अनेकानेक साहित्य पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके है । डॉ. क़ाज़ी मातृभाषा.कॉम के नियमित रचनाकार हैं जिसके लिए उन्हें हिन्दी ग्राम तथा मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा भाषा सारथी सम्मान से भी विभूषित किया गया । आज उनका साक्षात्कार लेकर हम अभिभूत हैं। आइए जानते हैं उनसे ही उनके बारे में-

प्रश्न- डॉ काजी आपके जीवन का मुख्य ध्येय क्या हैं ?

उत्तर- मैं हिंदी के प्रति पाठकों, नागरिकों और साहित्य रसिकों के मन-मस्तिष्क में रुचि और सम्मान की भावना उत्पन्न कर सका तभी तो यही मेरे लेखन की सार्थकता होगी । यही मेरे जीवन का उद्देश्य है। चाह नहीं सुरबाला के गहनों में गुथा जाऊं, परन्तु इच्छा यही है कि मेरा जीवन राष्ट्र के, हिन्दी भाषा के काम आ सके।

प्रश्न- आपका व्यक्तित्व या आपकी कार्य प्रणाली क्या हैं?

उत्तर- वासिफ क़ाज़ी से डॉ वासिफ क़ाज़ी तक की यात्रा तय करने में कठिन परिश्रम और समय नियोजन की महती भूमिका रही । मैं धैर्य और संयम से कार्य करने में विश्वास रखता हूं । अतिआत्मविश्वास, सफलता के लिए घातक है । मेरी कार्य करने की एक ओर विशेषता यह है कि मैं अडिग हूं ,जो सोचा उसको मूर्त रूप देने में अपना सौ प्रतिशत लगा देता हूं ।

प्रश्न- आपके जीवन का संघर्ष काल कौन सा रहा और कैसे उन संघर्षों से पार आएं ?

उत्तर- 1996 में कक्षा 11 वीं में अध्ययनरत था , पिता जी के अकस्मात निधन ने वज्रपात-सा कर दिया परिवार पर, इसके बाद मुझ पर और मेरी माँ पर घर की जिम्मेदारी आगई , मेरी मम्मी ने मुझे पढ़ाया और आज इस काबिल बनाया कि मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता हूं । आर्थिक अक्षमताओं के विपरित उच्च शिक्षा ग्रहण की और शोध प्रबंध पूर्ण किया ।साहित्य के प्रति दीवानगी ने लेखन की ओर आकर्षित किया ।

प्रश्न-आपके सबसे बड़ी उपलब्धि क्या हैं ?

उत्तर- मुझे नहीं लगता कि इस जीवन में कोई विशिष्ट उपलब्धि हासिल नहीं की । पर फिर भी पी-एच.डी. और मेरे दो काव्य संग्रह संकल्पना तथा आग़ोश का विमोचन ही अब तक के जीवन के स्वर्णिम क्षण है। आज मेरे लेख, कविताएं ,विभिन्न समाचार पत्रों, पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं । इंदौर के डॉ. अर्पण जैन साहब के सहयोग को भूलाना, सांसों के रथ को भूलाने जैसा है । अपने दो काव्य संग्रह संकल्पना और आग़ोश के सफल प्रकाशन और सफलता ने मेरा विश्वास बढ़ाया ।

प्रश्न- आपकी सफलता का राज क्या हैं ?

उत्तर- मेरे मतानुसार सफलता का कोई शार्टकट नहीं होता , मेहनत और लगन ज़रूरी है ।

प्रश्न- आपकी भविष्य की योजनाएं क्या हैं ?

उत्तर- जीवन में जो पाया, सन्तुष्ट हूं, परंतु भविष्य में बालीवुड की फिल्म के लिए गीत और पटकथा लिखना चाहता हूं, अपने जीवन में अच्छा और सधा हुआ लेखन करना मेरा सपना है। अपनी किताबों की रायल्टी से निर्धन और सर्वहारा वर्ग की सहायता करना चाहता हूं ।अपने पापा के नाम से ट्रस्ट बनाना चाहता हूं।

प्रश्न- समाज को क्या सन्देश देना चाहेंगे डॉ. काजी ?

उत्तर- मेहनत करें , बड़ों को सम्मान दें । मनोज मुंतशिर की दो पंक्तियां हैं -

आज मुझे राख समझ कर मेरी हंसी उड़ा लोगे ।
जिस दिन छुओगे ख़्वाब मेरे, अपने हाथ जला लोगे ।।

लोग कहते हैं इतनी पढ़ाई के बाद आपकी शासकीय नौकरी नहीं है तो मैं यही कहता हूं शायद मेरा भाग्य कहीं ओर लिखा है । मुझे लगता जिस कार्य में आप मन और कर्म से प्रतिबद्ध हों, वही आपके जीवन की उपलब्धि है। शिक्षा प्राप्त करना , सबका अधिकार है।

साभार- टीम Scofffeed.com

हिन्दी के लिए जनसमर्थन मांगेंगे डॉ. जैन

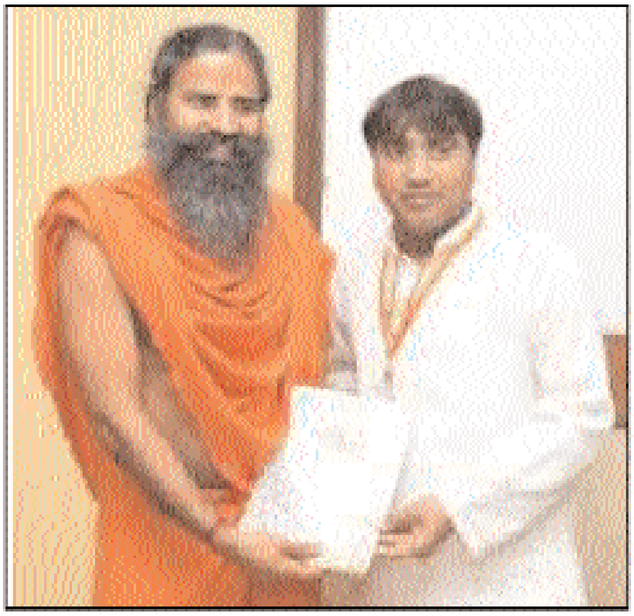

देशभर में भ्रमण कर मातृभाषा उन्नयन संस्थान लोगों को करेगा हिन्दीभाषा के लिए जागरुक

इंदौर।हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के समर्थन के लिए मातृभाषा उन्नयन संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ अर्पण जैन 'अविचल' ने जनसमर्थन अभियान की शुरुआत की।

देश की 100 बड़ी साहित्यिक, राजनैतिक, सामाजिक हस्तियों के साथ लगभग हर राज्यों के मुख्यमंत्रियों से डॉ. अर्पण जैन व उनका दल मिलेगा।

बता दें कि हस्ताक्षर बदलो अभियान को एक साल पूरे होने पर संस्थान के अध्यक्ष डॉ. अर्पण जैन 'अविचल' व महासचिव डॉ. प्रीति सुराना ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए जनसमर्थन अभियान की शुरुआत की है।

इस अभियान के तहत संस्थान के अध्यक्ष देश की 100 बड़ी हस्तियों से मिलेंगे और उनका सम्मान भी करेंगे इसके अलावा संस्थान के पदाधिकारी, प्रदेश अध्यक्षों समेत संस्थान के 1000 वरिष्ठ भाषासारथी, हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए 10 हजार से ज्यादा प्रसिद्ध व्यक्तियों से मुलाकात करेंगे। और उनका समर्थन हासिल कर जनमानस में हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम जगाएंगे और हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने हेतु आंदोलन का सूत्रपात करेंगे।

इन हस्तियों से मिल चुके हैं डॉ. जैन

गौरतलब है कि सबसे पहले डॉ.अर्पण जैन अविचल ने हरिद्वार जाकर स्वामी रामदेव जी से मुलाकात की थी, फिर वरिष्ठ पत्रकार डॉ.वेद प्रताप वैदिक से मिले, अग्रज कवि राजकुमार कुम्भज का भी समर्थन प्राप्त किया और फिर पूर्व राष्ट्रपति श्रीमति प्रतिभा देवीसिंह पाटील, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, केन्द्रीय मंत्री उमा भारती, रामदास आठवले, मध्यप्रदेश सरकार के मंत्री नरोत्तम मिश्रा, राज्यमंत्री दर्जा प्राप्त महामंडलेश्वर कम्प्यूटर बाबा, राज्यमंत्री दर्जा प्राप्त योगेंद्र महंत, बालाघाट-सिवनी से सांसद बोधसिंह भगत, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के महाप्रबंधक शमीम खान से मिलकर भी हिन्दी के लिए समर्थन मांगा और उनको हिन्दीग्राम व मातृभाषा उन्नयन संस्थान की उपलब्धियों के बारे में बताया था। इसी दौरान संस्थान की महासचिव डॉ. प्रीति सुराना भी साथ रही व लगातार साहित्यकारों और अन्य का समर्थन प्राप्त कर रही है। उनके साथ संस्थान का एक दल सक्रिय है।

'हिन्दी के लिए जनसमर्थन' अभियान के अंतर्गत संस्थान के 100 चुने हुए लोग देश के विभिन्न बुद्धिजीवियों, कला व विभिन्न क्षेत्र के 10 हजार दिग्गजों से संपर्क करेंगे और करीब 1 करोड़ से अधिक हिन्दीप्रेमीयों तक हिन्दी भाषा का महत्व बताकर हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए तैयार करेंगे।

इस जनसमर्थन अभियान का मूल उद्देश्य है इस प्रसिद्ध व्यक्तियों से मिलकर उनका हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए समर्थन तो प्राप्त करना ही है, साथ में इनके माध्यम से ज्यादा से ज्यादा लोगों को हिन्दी भाषा से जोड़कर उनका भी समर्थन हिन्दी भाषा को दिलाना है।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के महाअभियान की सफलता को देखते हुए डॉ. जैन व डॉ सुराना सहित राष्ट्रीय उपाध्यक्ष संजय कोचर, राष्ट्रीय सचिव कैलाश बिहारी सिंघल, कोषाध्यक्ष समकित सुराना, कार्यकारिणी सदस्य कीर्ती वर्मा, बृजेश शर्मा विफल, पिंकी परुथी, शिखा जैन, अदिति रुसिया,

मृदुल जोशी के साथ म.प्र. के प्रदेश अध्यक्ष कमलेश कमल, राजस्थान से रिखबचंद राँका, कश्मीर से नसरीन अली 'निधी', नीना जोशी आदि ने युद्धस्तर पर सक्रिय होकर देश की तमाम बड़ी बड़ी साहित्यिक व राजनैतिक हस्तियों से मुलाकात करने का अभियान चलाया है।आने वाले दिनों में डॉ.जैन व दल कुछ प्रमुख लोगों से मुलाकात का सिलसिला जारी रखेंगे। उक्त जानकारी संवाद सेतु रोहित त्रिवेदी ने दी ।

विश्व पर्यावरण दिवस पर कुछ सवाल अपने आप से

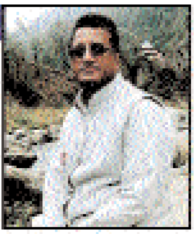
डॉ. स्वयंभू शलभ

परिचय- डॉ. स्वयंभू शलभ का निवास बिहार राज्य के रक्सौल शहर में हैद्य आपकी जन्मतिथि-2 नवम्बर 1963 तथा जन्म स्थान-रक्सौल (बिहार)है द्य शिक्षा एमएससी(फिजिक्स) तथा पीएच-डी. है।

विश्व पर्यावरण दिवस पर आइये अपने आप से कुछ सवाल करें- कि आने वाली पीढ़ी के लिए हम कैसी धरती और कैसा पर्यावरण देने जा रहे है-

यह प्रश्न हमारे सामने यक्ष प्रश्न बनकर खड़ा है और जब तक हम साथ मिलकर इसका जवाब ढूंढ नहीं लेते तब तक यह दिवस केवल एक जागरूकता दिवस के रूप में सीमित रहेगाद्य हम इसे उत्सव की तरह नहीं मना पाएंगे

गंगा समेत देश की विभिन्न नदियों में तमाम उद्योगों और कल कारखानों द्वारा अनेक प्रकार के जहरीले रसायन बेरोकटोक डाले जा रहे हैं। शहरों में नालों का निकास नदियों में कर देना सबसे आसान काम है। महानगरों का सीवर सिस्टम और ड्रेनेज सिस्टम भी आसपास की नदियों को बुरी तरह प्रदूषित कर रहा है। शहर का सारा कूड़ा कचरा भी नदियों के किनारे डम्प कर दिया जाता है। नगर निकायों को भी कचरे के निष्पादन के लिए नदियों का तटवर्ती क्षेत्र सबसे सुरक्षित स्थान नजर आता है।

कई नदियों का जीवन समाप्त होने के कगार पर है। कमोबेश देश के हर छोटे बड़े शहरों में यही तस्वीर दिखाई देती है। लेकिन इसी के साथ साथ नदियों को प्रदूषण से मुक्त किये जाने के लिए गैर सरकारी संगठनों और समाजसेवियों द्वारा आंदोलन भी चलते हैं। देश की कई बड़ी नदियों को स्वच्छ बनाने के लिए सरकार द्वारा कई योजनाएं भी चल रही हैं। 'नमामि गंगे' जैसी महत्वाकांक्षी योजनाएं भी है। देश में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय है। प्रदूषण को रोकने के लिए केंद्र के साथ राज्यों में भी बाकायदा प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए देश में कानून है जिसका उल्लंघन किये जाने पर दंड का भी प्रावधान है। इन सब के साथ पर्यावरण संरक्षण के लिए वैश्विक कानून भी है। साथ साथ देश में केंद्र और राज्य सरकार द्वारा व्यापक रूप से स्वच्छता अभियान भी चल रहा है।

बगैर ट्रीटमेंट प्लांट लगाये उद्योगों को संचालित करना कानूनन जुर्म है। बावजूद इसके अनेक उद्योग धंधे बगैर ट्रीटमेंट प्लांट के चल रहे हैं।

ऐसे में इन सवालों का जवाब ढूंढना जरूरी है।

क्या हमने इस प्रदूषण के विरोध में कभी कोई कदम उठाया है? क्या हमारा स्वच्छता अभियान केवल हमारे घर तक सीमित है? क्या पर्यावरण से जुड़ी इस समस्या के लिए केवल सरकार या व्यवस्था दोषी है? क्या केवल आज के दिन पौधरोपण के नाम पर या हाथ में झाड़ू उठाकर गली मोहल्ले की सफाई के नाम पर या बैनर और नारों के साथ रैली के नाम पर अपना फोटो सोशल मीडिया में डाल देने से या खबरों में सुर्खियां बटोर लेने से समस्या का हल निकल आएगा? क्या आज आयोजित होने वाली जागरूकता दौड़ में शामिल होकर हमारी सोच बदल जायेगी? सरकार या प्रशासन कोई कदम उठाये, न उठाये, हमारा अपना कोई नैतिक दायित्व बनता है या नहीं?

कब तक ये बड़े बड़े उद्योग जन जीवन को संकट में डालकर अपने निजी फायदे के लिए पर्यावरण और प्राकृतिक संपदाओं का दोहन करते रहेंगे?

आने वाली पीढ़ी कभी हमें माफ नहीं करेगी

विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर आइए इन बिन्दुओं पर सोचें, अपनी मानसिकता को बदलें और अपनी छटपटाहट और अपनी पीड़ा को एक दूसरे के साथ साझा करते हुए अपने संकल्प को और मजबूत बनायें।

मातृभाषा.com
केवल आपके लिए
मातृभाषा. कॉम के भाषासारथीयों के लिए सेंस टेक्नोलॉजिस के सहयोग से हम लाएँ है, किफायती दाम में पोर्टल ।
यदि आप मातृभाषा. कॉम के रचनाकार है और स्वयं का ब्लाग आधारित पोर्टल बनवाना चाहते है तो आज ही संपर्क करें ।
मात्र ५००० रुपये में
स्वयं का वेब पोर्टल बनवाइए
SANS
Being Your Solution Partner
info@enewsportals.com +91-7067455455
www.eNewsPortals.com

हिन्दी भाषा रोजगार की भाषा बनें- प्रणीता सिंह

42 सृजन समीक्षा व 4 अन्य पुस्तक सहित कुल 46 किताबों का विमोचन

भोपाल। भारत में हिन्दी के लिए सैकड़ों अवसर उपलब्ध है, इन्ही अवसरों से हिन्दी को रोजगार देने वाली भाषा के रुप में स्थापित करने से ही हिन्दी की प्रगति संभव है, उक्त उदगार पुलिस विभाग में पदस्थ राजभाषा अनुवादक प्रणीता सिंह ने अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन के 46 पुस्तकों के विमोचन समारो में कही।

भोपाल में हिन्दी भवन के महादेवी वर्मा कक्ष में रविवार शाम आयोजित पुस्ताक विमोचन व काव्य संध्या कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें मुख्य अतिथि सुश्री प्रणीता सिंह रही व अध्यक्षता देहरादून से आई साहित्यकार डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई ने की? विशेष आतिथ्य भोपाल के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सुशील गुरु, विनोद जैन ने की।

आयोजन का आरंभ कवयत्रि कीर्ती वर्मा द्वारा शारदा वंदना से किया तत्पश्चात दीप प्रज्वलन किया गया। अतिथि स्वागत के पश्चात 42 सृजन समीक्षा सहित डॉ. अर्पण जैन द्वारा लिखित नव त्रिभाषा सूत्र, जयपुर के रचनाकार रिखब रॉका की काव्यवातायन, डॉ वासीफ काजी की आगोश व आरती तिवारी की संवेदना पुस्तक का विमोचन हुआ।

विमोचन के बाद उपस्थित कवियों ने काव्यपाठ किया। इसी बीच भोपाल के वरिष्ठ पत्रकार व साहित्यकार नीतिश मिश्र व इंदौर समाचार के भोपाल संवाददाता किशोर सिंह को भाषासारथी सम्मान दिया गया कार्यक्रम। का संचालन संस्था के राष्ट्रीय सचिव कैलाश बिहारी सिंघल नें किया। मातृभाषा उन्नयन संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ अर्पण जैन 'अविचल' ने हिन्दी आन्दोलन की भूमिका बताई व हिन्दी के लिए समर्पित, नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष व आईटीबीपी में उप सैनानी कमलेश कमल जी की नियुक्ति पर प्रकाश डालते हुए बधाई दी।

प्रदेश अध्यक्ष अपरिहार्य कारणों से शामिल न हो सकने पर पत्र के माध्यम से सभी रचनाकारों को शुभकामनाएं दी। अन्तरा शब्दशक्ति की संस्थापिका व संस्था की राष्ट्रीय महासचिव डॉ. प्रीति सुराना ने सृजन समीक्षा के बारे में बताया। आयोजन में संस्था के केन्द्रीय कार्यकारिणी सदस्य बृजेश शर्मा विफल जी सहित मध्यप्रदेश के रचनाकारों सहित दिल्ली, नोयडा, उत्तरप्रदेश, राजस्थान आदि राज्यों के कई रचनाकार शामिल हुए।

हिन्दी के प्रचार के साथ संस्था हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने हेतु प्रतिबद्ध है व देशभर में हस्ताक्षर बदलो अभियान का संचालन कर रही है। उक्त जानकारी संस्थान के संवाद सेतु रोहित त्रिवेदी ने दी।

हिंदी भाषा का सिनेमा पर प्रभाव

-डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

सिनेमा मनोरंजन का क्षेत्र है और एक बहुत बड़ी संख्या मनोरंजन से जुड़ी रहती है। सिनेमा बनाने वाले भी दर्शकों के हिसाब से भाषा, संवाद आदि का चयन करते हैं। दर्शकों में दर्शकों की पसंद-नापसंद का भी ध्यान रखा जाता है। अनेक बार फिल्मी भाषा, फिल्मी संवाद समाज में प्रचलित हो प्रयोग में आने लगते हैं। दोनों ही परस्पर एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। मैं इस पर विचार करने का प्रयास करूँगी कि हिंदी ने सिनेमा को किस तरह प्रभावित किया।

चलचित्रों का चलन 19वीं शताब्दी में हुआ। पहले अमेरिका, अप्रूटेड होते हुए भारत पहुँचा।

हिंदी भाषा का सिनेमा पर पहला प्रभाव यह था कि इसका अधिक संख्या बल निर्माताओं को एक बड़े बाजार के रूप में दिखाई दिया। उत्तर भारत के अधिकांश शहर खड़ी बोली से प्रभावित थे न कि कोई स्थानीय बोली से। संचार साधन भी इन्हीं स्थानों तक पहुँचते थे। अत: हिंदी सिनेमा में शहरी भाषा को अपना माध्यम बनाया। प्रारंभ में फिल्में मूक होती थी। उनमें संवाद देवनागरी लिपि में लिखे जाते थे। हम कह सकते हैं की यह हिंदी भाषा का सिनेमा पर पहला प्रभाव था।

फिर बोलने वाली फिल्में आईं। हिंदी जगत के थियेटर, नौटंकी, नाटक, लोकगीत, लोकनृत्य एवं कथानक हेतु लोकजीवन ने हिंदी सिनेमा पर गहरा प्रभाव डाला और हिंदी सिनेमा उद्योग को स्थापित होने में सहायक बने।

जैसे-जैसे भाषा का विकास होता गया वैसे-वैसे सिनेमा की भाषा भी बदलती गई। पहले उर्दू मिश्रित जोड़ी थी, संवाद में अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग सामान्य था जो आज भी है। तो जैसे-जैसे हिंदी भाषा आत्मनिर्भर होती गई वही सिनेमा में अपनाई जाने लगी।

आज हिंदी सिनेमा पर स्वतंत्र हिंदी, सामान्य हिंदी, बोलचाल की भाषा में प्रचलित हिंदी दिखाई देती है। किसी अन्य भाषा के माध्यम से उसे प्रभावशाली बनाने का प्रयास अब नहीं करना पड़ता है। इस प्रकार हिंदी के समृद्ध होने के साथ-साथ हिंदी सिनेमा भी मौलिकता को प्राप्त कर रहा है। अब सफलतापूर्वक हिंदी में प्रयोगधर्मी सिनेमा, वैज्ञानिक, सैनिक, इतिहास आदि पर आधारित फिल्में भी सफलतापूर्वक बनी हैं और लोकप्रिय भी हुई है।

हिंदी भाषा के विकास ने पिछले सौ वर्षों में जिस प्रकार शिक्षा, साहित्य, कानून, विज्ञान, दर्शन, राजनीति, संस्कृति, कलाएँ आदि जीवन के हर क्षेत्र को समृद्ध बनाने में सहायता की है ठीक उसी प्रकार हिंदी भाषा ने सिनेमा को आत्मनिर्भर, मौलिक और समृद्ध बना, विश्व में एक पहचान दिलवाई है। इसी कारण आज हिंदी फिल्में ऑस्कर अवार्ड के लिए भी नामित होती हैं।

हिंदी सिनेमा से प्रेरित होकर क्षेत्रीय भाषाओं में भी फिल्में बननी आरंभ हुई। हिंदी भाषा के विशाल आकार ने उन सुविधाओं और साधनों के जुटने को संभव बना दिया जो एक फिल्म बनाने के लिए अति आवश्यक होते हैं। फिल्म उद्योग का विकास, अच्छे स्टूडियो का विकास, तकनीकी साजोसामान की उपलब्धता हिंदी सिनेमा के कारण संभव हुई और उसका लाभ स्थानीय भाषाओं ने भी उठाया।

तो इस तरह हिंदी भाषा ने केवल हिंदी सिनेमा को ही नहीं, बल्कि क्षेत्रीय भाषाओं के सिनेमा को भी प्रभावित कर उन्हें विकसित किया है।

माँ

ब्रम्हांड है माँ !
अनुभूति प्रथम !
संपूर्ति है माँ !

नि:स्वार्थ भाव !
संघर्ष झेलती वो !
है निर्मात्री माँ !

पुनीत भाव !
पवित्र परिभाषा !
पावन है माँ !

-अलका गुप्ता 'भारती'

परिचय-श्रीमती अलका गुप्ता 'भारती' मेरठ (उ.प्र.) में रहती हैं। काव्यरस-सब रस या मिश्रण आपकी खूबी है।आप गृहिणी हैं और रुचि अच्छा साहित्य पढ़ने की है। शौकिया तौर पर या कहें स्वांत सुखाय हेतु कुछ लिखते रहने का प्रयास हमेशा बना रहता है। आपके पिता राजेश्वर प्रसाद गुप्ता शाहजहाँपुर में एक प्रतिष्ठित एडवोकेट थे तो माता श्रीमति लक्ष्मी गुप्ता समाजसेविका एवं आर्य समाजी विचारक प्रवक्ता हैं।

जनता बेहाल, सरकार मालामाल

फिरदौस खान

केंद्र की भारतीय जनता पार्टी सरकार ने 26 मई को चार साल पूरे कर लिए हैं. इन चार सालों को लेकर भारतीय जनता पार्टी के नेता और सरकार अपनी कामयाबी के कितने ही दावे कर लें, लेकिन हकीकत यही है कि हर मोर्चे पर केंद्र सरकार नाकारा ही साबित हुई है. हालत यह है कि आम आदमी को इंसाफ मिलने की बात तो दूर, खुद सर्वोच्च न्यायालय के चार जजों को इंसाफ के लिए जनता के बीच आना पड़ा. अपनी नाकामियों को छुपाने के लिए सरकार ने हमेशा गैर जरूरी मुद्दों को हवा दी है. अवाम ने शिक्षा की बात की, तो शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने की बजाय जेएनयू और अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में विवाद पैदा किए गए. अवाम ने रोजगार मांगा, तो नोटबंदी कर उन्हें बैंक के सामने कतारों में दिन-रात खड़ा रहने पर मजबूर कर दिया गया. स्वास्थ्य सेवाओं की बात करें, तो गोरखपुर के मृत बच्चों की लाशें सामने आ जाती हैं. ऑक्सीजन की कमी से किस तरह वे तड़प-तड़प कर मौत की आगोश में चले गए. दरअसल, मुट्ठीभर अमीरों को छोड़कर देश की अवाम का बुरा हाल है. आलम ये है कि तीज-त्यौहारों के दिनों में भी लोगों के पास काम नहीं हैं. बाजार में भी मंदी छाई हुई है. दुकानदार दिन भर ग्राहकों का इंतजार करते है, लेकिन जब लोगों के पैसे होंगे, तभी तो वे कुछ खरीद पाएंगे. बड़े उद्योगपतियों को छोड़कर बाकी छोटे काम-धंधे करने वालों के काम ठप्प होकर रह गए हैं. बेरोजगारी कम होने की बजाय दिनोंदिन बढ़ रही है.

देश की अवाम त्राहिमाम-त्राहिमाम कर रही है और ऐसे में केंद्र सरकार और भारतीय जनता पार्टी के नेता अपने चार साल के शासनकाल की उपलब्धियां गिनाते नहीं थक रहे हैं. बेशक इन चार सालों में केंद्र सरकार का काफी भला हुआ है. उसके खजाने लगातार भर रहे हैं. पेट्रोल पर भारी एक्साइज ड्यूटी से केंद्र को भारी मुनाफा हुआ है. पिछले चार साल के दौरान इससे सरकार को 150 गुना ज्यादा राजस्व मिला है. गौरतलब है कि पिछली कांग्रेस नेतृत्व वाली संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) सरकार की एक्साइज ड्यूटी में मोदी सरकार 126 फीसद बढ़ोतरी कर चुकी है. पेट्रोल पर जहां केंद्र और राज्य सरकारें मालामाल होती हैं, वहीं उपभोक्ताओं को भारी नुकसान होता है. केंद्र सरकार पेट्रोल पर एक्साइज ड्यूटी लगाती है और राज्य सरकार अपने स्तर से वैट और बिक्री कर लगाती हैं, जिससे इसकी कीमत बहुत ज्यादा बढ़ जाती है. पिछले साल मार्च में पेट्रोलियम मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने लोकसभा में बताया था कि एक अप्रैल 2014 को मोदी सरकार से पहले पेट्रोल पर एक्साइज ड्यूटी 9.48 रुपये और डीजल पर 3.56 रुपये थी. महज दो साल में एनडीए सरकार ने एक्साइज टैक्स में 126 फीसद का इजाफा किया, जिससे एक्साइज ड्यूटी बढ़कर 21.48 रुपये हो गई. डीजल पर भी एक्साइज टैक्स की दर ज्यादा रही. मार्च 2016 तक डीजल पर चार बार एक्साइज ड्यूटी में बढ़ोतरी की गई, जिससे 3.56 से बढ़कर टैक्स 17.33 रुपये हो गया. इस दौरान मोदी सरकार ने 144 फीसद ज्यादा कमाई की. मोदी सरकार ने वित्तीय वर्ष 2014-5 में सेंट्रल एक्साइज ड्यूटी से 99.184 लाख करोड़, स्टेट वैट और सेल्स टैक्स से 137.157 लाख करोड़, साल 2015-16 में 178.591 और 142.848 और साल 2016-17 में 242.691 और 166.378 लाख करोड़ रुपये वसूले. यानी इससे सरकार जितना ज्यादा फायदा हुआ, जनता को उतना ही नुकसान उठाना पड़ा.

कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री मोदी सरकार को तेल के दाम कम करने का चैलेंज देते हुए कहा था कि तेल की कीमते कम कीजिए, वरना हम आपको मजबूर कर देंगे. इसके बाद केंद्र सरकार ने डीजल और पेट्रोल की कीमत में एक पैसे की कमी कर दी. इस पर राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री पर तंज करते हुए कहा है कि आपने पेट्रोल और डीज़ल की कीमतों में एक पैसे की कटौती की है. एक पैसा!! अगर ये आपका मज़ाक करने का तरीका है, तो ये बचकाना और बेहद घटिया है. एक पैसे की कटौती मेरे द्वारा दिया गए फ्युएल चैलेंज का वाजिब जवाब नहीं है.

भारतीय जनता पार्टी सरकार के शासनकाल में घोटाले भी खूब हुए हैं. सूचना के अधिकार के तहत भारतीय रिजर्व बैंक से मांगी गई एक जानकारी के मुताबिक साल 2014-2015 से 2017-2018 के बीच देश के अलग-अलग बैंकों से 19000 से ज्यादा धोखाधड़ी के मामले सामने आए हैं, जिनमें 90 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा का घोटाला हुआ है. अप्रैल, 2017 से मार्च, 2018 के बीच बैंक धोखाधड़ी के 5152 मामले दर्ज किए गए, जिनमें 28,459 करोड़ रुपये शामिल हैं. इससे पहले साल 2016-17 में 5076 बैंक घोटाले हुए, जिनमें 23,933 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी हुई. गौरतलब है कि केंद्रीय जांच ब्यूरो और प्रवर्तन निदेशालय जैसी कई केंद्रीय जांच एजेंसियां उद्योगपतियों द्वारा किए गए धोखाधड़ी के मामलों की तफ्तीश कर रही हैं. इनमें नीरव मोदी और मेहुल चोकसी द्वारा किया गया 12 सौ करोड़ से ज्यादा का पंजाब नेशनल बैंक घोटाला भी शामिल है.

भले ही भारतीय जनता पार्टी जश्न मना रही है, लेकिन विपक्षी दल इसे विश्वासघात के तौर पर देख रहे हैं, वहीं अवाम भी सरकार से हिसाब मांगने लगी है. मोदी सरकार के चार साल पूरे होने पर कांग्रेस ने एक पोस्टर जारी किया है. कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव अशोक गहलोत का कहना है कि मोदी सरकार के चार साल जनता से विश्वासघात जैसा है. उन्होंने कहा कि आम आदमी का भरोसा सरकार से उठ चुका है. वामदलों ने भी सरकार पर जनता से विश्वासघात करने का आरोप लगाते हुए कहा है कि देश के सभी तबके सरकार से परेशान हैं.

काबिले-गौर है कि पिछले चार सालों में देश की हालत बद से बदतर हुई है. देश में मजहब और जाति के नाम पर वैमनस्य बढ़ा है, लोगों में अविश्वास बढ़ा है. उनका चैन-अमन प्रभावित हुआ है. उनकी रोजमर्रा की जिन्दगी मुतासिर हुई है. दादरी के अखलाक हत्याकांड से समाज में कटुता बढ़ी, जबकि आरक्षण को लेकर चले आंदोलन की वजह से जातिगत वैमनस्य बढ़ोतरी हुई है. बढ़ती महंगाई ने लोगों का जीना दुश्वार कर दिया है. तीज-त्यौहारों के रंग फीके पड़ गए हैं, क्योंकि बेरोजगारी और महंगाई की वजह से लोग जरूरत का पूरा सामान तक खरीद नहीं पा रहे हैं.

अब जब इस सरकार को चार साल पूरे हो गए हैं, तो ऐसे में लोग उन वादों के बारे में सवाल करने लगे हैं, जो भारतीय जनता पार्टी ने सत्ता में आने से पहले जनता से किए थे. तब लोगों को लगा था कि देश में ऐसा शासन आएगा, जिसमें सब मालामाल हो जाएंगे, मगर जब केंद्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बन गई और महंगाई ने अपना रंग दिखाना शुरू किया, तो लोगों को लगा कि इससे तो पहले ही वे सुख से जिन्दगी गुजार रहे थे. ऐसा नहीं है कि अच्छे दिन नहीं आए हैं, अच्छे दिन आए हैं, लेकिन मुट्ठी भर अमीरों के लिए. बहरहाल, प्रधानमंत्री ने उन चुनावी वादों को चुनावी जुमले कहकर टाल चुके हैं, लेकिन जनता टालने के मूड में बिल्कुल नहीं है.

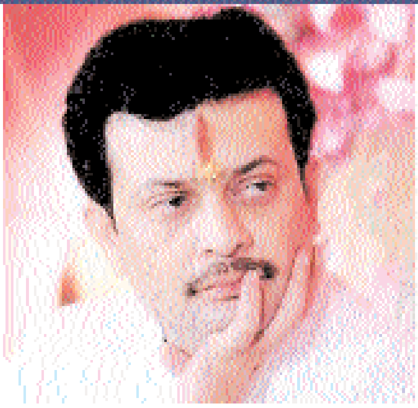

शायद हमें एक संत ना खोना पड़ता!

ये हमारी परम्परा सी बन गई है कि हम मरने के बाद सब को 'स्वर्गीय' मान लेते हैं। इसके लिए अपने तर्क हो सकते हैं। **'मरे बाद महान'** की परपंरा भी हमारे समाज में है, जो जिंदा महान थे उनके मरने के बाद तो भगवान बन जाने का डर रहता है!

ये हमारी भावनात्मक कमजोरी है जिसे हम आस्था का नाम दे कर खुद से ज्यादा समाज को धोके में डालते हैं। हम विज्ञान के इस आधुनिकतम युग में भी घनघोर अवैज्ञानिक हैं, इसीलिए शायद कार्ल मार्क्स ने धर्म को अफीम कहा है। हम किसी को भी कसौटी पर कसते ही नहीं हैं, जो भी कुछ अलग दिखा उसको पहले सन्त फिर भगवान बना डालते हैं और नतीजा ये होता है कि ठगे जाते हैं। अब क्या वो लोग खुद को ठगा महसूस नहीं कर रहे होंगे जो शन्ति, तनाव से मुक्ति के लिए कतार में लगे रहते थे। बेशक उनके दिमाग में ये सवाल कौंधा होगा लेकिन -मरने बाद महान- की परंपरा ने उनकी जुबान बन्द कर रखी होगी। सवाल तो बहुत सारे हैं। मिसाल के तौर पर क्या संत भी परेशान होते है। हमनें तो पढ़ा है कि बड़े -बड़े ऋषि -मुनि झोपड़ीनुमा आश्रम में रहते, जो भिक्षा मिलती उसी में गुजर करते और मस्त रहते, ना आटे की चिंता ना दाल की फिक्र! इसलिए कभी नहीं सुना कि किसी ऋषि-मुनि को कभी आर्थिक परेशानी आई हो, उन्हें तो ना राजा की चिंता ना परवाह रंक की। इसलिए जैसा हैं उसी में मस्त , बस वो और उसका ईश्वर बाकी की परवाह नहीं कोई बुलाये तो खुश नहीं ना बुलाय तो दुखी नहीं। जब ये भाव तो चिंता नहीं, जिसे इन सब की चिंता वो सन्त नहीं। जब सन्त नहीं तो बीवी-बच्चों की चिंता, धन कमाने की फिक्र, स्टेटस मेंटेन करने का तनाव। जब ये फिक्र तो परिवार में खटपट। परिवार में खटपट तो तनाव। तनाव तो खुदकुशी !लेकिन हममें ये सोचने की हिम्मत नहीं क्योंकि हम कार्लमार्क्स की अफीम के नशे में अपनी इन्द्रियों पर काबू खो चुके हैं, हम उसके आगे सज्दा करते हैं जो खुद परेशानियों के आगे सर झुका देता हैं। जिसमें इतनी ताकत नहीं कि अपने घर के झगड़े सुलझा ले और हम उसके पास अपनी जिंदगी के मसले सुलझाने चले जाते हैं, अब हमारी समस्या भले सुलझे ना सुलझे लेकिन हम एक सामाजिक समस्या तो पैदा कर ही देते हैं, आत्महत्या भी एक सामाजिक समस्या ही है। आत्महत्या के लिए भी हम ही जिम्मेदार हैं। हम कमजोर लोगों से उम्मीद पाल लेते हैं वो उम्मीद पर खरा नहीं उतरता और दबाव में खुद जान दे देता है। हमने ये नजरिया बना रखा है कि जो सन्त होगा वो सेक्स नहीं करेगा, शादी नहीं करेगा, उसके बच्चे नहीं होंगे इस दबाव में कई सन्त शादी नहीं करते लेकिन सेक्स करते हुए पकड़े जाते हैं। हम ये मान लेते कि भले ही सन्त है लेकिन हैं तो इंसान उनकी भी वो सब इच्छा है जो हमारी है, बात ही खत्म हो जाती सारे बाबा घर-बार वाले होते और कई कुंवारी लड़कियों के घर बसते वो इनके चक्कर में बर्बाद ना होती! खैर, वापस लौटते हैं अगर हमारा ये मानस होता कि सन्त भी मेहनत-मशक्कत की रोटी कमा कर, जिंदगी के उतार-चढ़ाव झेल कर सन्त हो सकता है तो शायद आज हमें एक राष्ट्रसंत नहीं खोना पड़ता।

–आदिल सईद

चुपचाप! चुपचाप!

चुपचाप ! चुपचाप !
बिना आहट के सजाते जीवन
महकाते घर की बगिया..
मन-उपवन !
बचपने में हम..
थामकर उंगलियाँ..
चलते, गिरते, उठते
सीखते बोलियाँ,
कितने शान्त रह जाते
आप..
चुपचाप ! चुपचाप !

गूँजती किलकारियाँ
सुनकर हँसते..
खुश होते.. आँसू भरकर
जीवन का पाठ
गोदी में ले..
समझाते, पढ़ाते
नहीं पड़ने देते कमजोर.
सम्हालते हैं आप !
चुपचाप ! चुपचाप !

दुनिया पुजती माँ. को.
करती यशगान !
पर, आपका कितना
उपकार.. बिना शर्त
कितना महान !
पिता का होना ही.
आधी परेशानियाँ..
कर देता है खत्म,
आपके अस्तित्व से
कहलाते हैं हम !
बनायें हम अपनी पहिचान !
देते हमें..नाम..
वापस नहीं लेते..
और न करते पश्चाताप !
क्योंकि हमारे अस्तित्व होते हैं
आप..
चुप चाप ! चुपचाप !

ओजस्वी, आगरा

अतिक्रमण

डॉ निधि अग्रवाल
झांसी

आज भी यह और दिनों जैसी ही एक बेरौनक सुबह थी।आफिस में भी सब प्रतिदिन की भांति यंत्रवत होता रहा।भौतिकी और गणित के नियमों पर ही संसार चले तो जीवन कितना सरल हो जाता लेकिन रसायन और मनोविज्ञान मिलकर कितना दुरूह कर देते हैं।

घर आकर डोरबेल प्रेस कर मैं गेट खुलने की प्रतीक्षा कर रही थी। अजीब सी झुंझलाहट और उकताहट थी ! यूँ भी यह आजकल मेरे व्यक्तित्व का ही हिस्सा बन गयी है।सूरज भी आज आग उगल रहा था और गर्म हवाएं जैसे सब जला डालना चाहती हों......मेरी ही तरह !

मैंने सफेद दुप्पटे से मुह पोंछा, एक बार फिर डोरबेल दबाई। जितनी मेरी सहनशीलता कम होती जाती है उतनी ही मां की पूजा बढ़ती जाती है। न मेरा आने का समय निश्चित, न मां की पूजा का...और यह प्रायः जाने कैसे एक हो जाया करता है। पाठ अधूरा छोड़ उठना मां को अपशकुन प्रतीत होता है।

मैंने निस्पृह भाव से घर की बाहर की सफेद दीवार को देखा। 4 साल से रंग रोगन के अभाव में जगह जगह आड़ी तिरछी रेखाएं, कुछ बड़े बदनुमा दाग बन गए है। बदनुमा दाग सबसे खूबसूरत यादों का भंडार कैसे हो सकते है।एक तेज टीस मन में उठी और मैंने नजर फेर ली।

यह कैसे संभव है? मैंने सोचा।

मुझे अपनी आंखों पर भरोसा नही हुआ। उसी स्थान पर एक नन्हा कोंपल अपने दो नव कोमल पत्तों के साथ मुस्कुरा रहा था।उस अप्रत्याशित हादसे के बाद मैंने न कभी इस क्यारी में पानी दिया न खाद... और जून के तपते सूरज को ललकारता यह नन्हा पौधा अटल जिजीविषा का प्रतीक बन गया था।

चार साल पहले यूँ ही एक नन्हा कोंपल स्वयं ही प्रस्फुटित हुआ था। गुलाब की इस सुवासित क्यारी में उस कोंपल का अस्तित्व आरम्भ में गौण ही रहा लेकिन वह भी कब हार मानने वाला था। चंपा के पेड़ के सहारे ऊंचा उठता वह पूरी दीवार, छत की रेलिंग और गेट के ऊपर भी तोरण बना फैलता गया और कब निर्जीव दीवारों को छोड़ मन पर भी छा धड़कनों पर भी छा गया, पता ही न चल पाया। अब हर सुबह उसी बेल के नीचे शीतल हवा के अहसास के साथ चाय की भाप मन में घुलती जाती। घर लौटने पर उसी की शीतल छाया प्रतीक्षा के पलों को बोझिल न होने देती। शाम के समय बेल के पत्तों को पानी की निर्मल धारा से धोने में मन उज्ज्वल होता जाता। सुन्दर पुष्पगुच्छों पर मंडराती तितलियां और भँवरों के गुंजन से जीवन का हर मौन मुखरित हो उठता। जीवन की व्यस्तता में भागते-दौड़ते कभी उसकी कोई टहनी मेरी अलकों या दुप्टे को थाम, कुछ देर ठहर, जीवन के सौंदर्य को निहारने, महसूस करने को बाध्य कर देती और कभी कोई किताब पढ़ते या यूं ही उसकी छाँव तले अलसाते, चंचल हवा संग उड़ता उसका कोई पत्ता या फूल मेरी हथेलियों या गोदी में आ बैठ मानो प्रणय निवेदन करता !

यह वह समय था जब मुझे संसार प्रेम में डूबा लगता और प्रेम के ढाई आखरों में ही सिमटा समस्त संसार प्रतीत होता।

समय मन्थर गति से बढ़ा जा रहा था। मैं उस तरह एक निश्चिन्त नींद के आगोश में थी जैसे एक अबोध शिशु मां की लोरी के स्वरों के साथ अपने पालने में हिलता हुआ आश्वस्त हो जाता है। अचानक लोरी के स्वर मूक हो गए... पालना स्थिर हुआ....आंखें खुली। कुछ तो था जो असहज कर रहा था। उस बरस बेल पर बौर नहीं आया.... पुष्प नहीं खिले परन्तु मेरा अनुराग अभी भी वैसा ही दृढ़ था। प्रेम कब कारकों की सीमा में बंधा वाणिज्य का विषय है। कुछ बोझिलता अवश्य थी। बेल खुद को समेट रही थी। मैं जितना अधिक पोषित करती वह उतनी ही अधिक जर्जर दिखती।

चार दिन के वायरल ने तोड़ कर रख दिया था। बुखार जाने पर भी कमजोरी बनी हुई थी। कमरे में बंद रहते हुए कैद का अहसास हो रहा था। माँ ने चाय की ट्रे ले कमरे में प्रवेश किया तो मैं अपने बालों को जूड़े में समेट उठ खड़ी हुई,

बाहर बैठेंगे मां !

बाहर आई तो लगा जैसे अस्तित्व में से आधा हिस्सा कहीं छूट गया हो। मैं हतप्रभ थी। कुछ समझ पाने में असमर्थ।

बेल बिल्कुल सूख गयी थी

कल माली ने उखाड़ फेंकी। माँ ने मेरे चेहरे के आश्चर्य को पढ़ते हुए कहा।

आंखें डबडबा गयी,

एक बार पूछ तो लेती मां, मैंने भरे गले से कहा।

बेल का जाना कितना बड़ा अपशगुन था। माँ कब समझ पायी। गुलाब मर गए।चंपा भी दम तोड़ गया और तब से यह क्यारी किसी बंजर कोख की तरह यूँ ही उपेक्षित पड़ी थी, लेकिन आज यह नन्हा पौधा अपने अदम्य साहस के साथ, जीवन की जटिलताओं को चुनौती देता मेरे सम्मुख खड़ा मुस्कुरा रहा था। अचानक मेरी मुखमुद्रा कठोर हो गयी। आंखें लाल।

तुम भी उस जैसा ही छलोगे। मन भर जाने पर चलते बनोगे। मैंने दुपट्टा कमर पर बांधा, पर्स किनारे रखा और उस नवपल्लव को पकड़ जड़ से खींचते हुए कहा, नहीं, बार-बार उजड़ जाने से ऊसरभूमि का बंजर होना ही बेहतर है।

अचानक एक दबाव अपने हाथ पर महसूस हुआ। मां ने आँखों के इशारे से मना किया। वह पुनः कोंपल को रोप उसमें पानी डाल रही है।

मां तुम समझ क्यों नहीं पाती। इसका यहां होना पहली बेल की यादों पर अतिक्रमण है।

माँ उसी तल्लीनता से लगी रही और मैं बोझिल आँखों से मां को यंत्रवत देखती रही।

श्मशान घाट

जितेंद्र शिवहरे

संसद भवन में नेताजी पर विपक्ष जोरदार प्रहार कर रहा था।

गांव के विकास और उन्नति के लिए नेताजी ने आज तक कुछ नहीं किया। जबकी वर्षों से गांव के लोग नेताजी को वोट देकर जिताते आये है। विपक्ष ने तंज कसा।

नेताजी बोले- आदरणीय सभापति जी महोदय। ये सत्य है की संबंधित गांव से हमेशा मुझे प्यार और सम्मान मिला है। वहां से पिछले पंद्रह वर्षों से मैं चुनाव में विजयी होता आया हूं। मगर विपक्ष का यह आरोप निराधार है कि मैंने संबंधित गांव मे कुछ नहीं किया। मैं आपको एक-एक कर गिनाता हूं की मैंने उक्त गांव में कितने विकास कार्य करवाये।

आदरणीय सभापति जी, गांव में पिछले कई वर्षों से कोई भी पक्का श्मशान घाट नहीं था। इससे ग्रामीणों को बहुत परेशानी उठानी पड़ती है। शव जलाने पड़ोस के गांव जाना पड़ता था। लेकिन कई बार तो वो पड़ोसी गांव के लोग संबंधित गांव के मरे हुये शवों को जलाने की अनुमति नहीं देते थे। कई मर्तबा मुर्दो को या तो जमीन में दफनाना पड़ता था या नदी-नालों में बहा दिया जाना पड़ता था। जब से हम चुनाव जीत कर आये है, हमने गांव की इस घोर समस्या पर गंभीरता से विचार किया। अधिकारियों को बैठकें ली और उन्हें खूब दौड़ाया। दिल्ली से श्मशान घाट निर्माण का पैसा जारी करवाया तब जाकर आज उस गांव में एक बहुत ही अच्छा और बड़ा श्मशान घाट तैयार खड़ा है। हमने गांववासियों से साफ-साफ कह दिया अब खूब मरो और शान से जलो।

इतना ही नहीं इसी गांव में एक भी शराब की दुकान नहीं थी। बेचारे गांव के लोगों को अपनी मेहनत मजदूरी का पैसा शराब में खर्च करने दूर हाइवे रोड़ पर जाना पड़ता था। हमने इसका भी हल निकाला। हमारी सरकार ने गांव में ही एक शराब की दुकान खुलवा दी जिससे की दिन भर के काम से थके-मादे घर आये ग्रामीणों को गांव में ही अच्छी और सस्ती शराब का सेवन का करने सुख मिल सके और गांव वालों की मेहनत का पैसा गांव में ही रहे।

और सुनिये सभापति महोदय, गावं वाले मेरे पास आये और निवेदन किया कि गांव में कोई स्कूल नहीं है। अत: मैं उनके बच्चों के लिए स्कूल भवन बनवा कर दूं। शिक्षा पाना सबका अधिकार है। हमारी सरकार ने गांव में 10 लाख रुपए की लागत से एक विशाल स्कूल भवन का निर्माण करवाया। मैं खुद शाला भवन का उद्घाटन करके आया हूं।

हां लेकिन हम ये कोशिश कर रहे है की स्कूल में जल्द ही कोई शिक्षक पढ़ाने के लिए नियुक्त हो जाए!

हमने गांव में एक वृहद पुस्तकालय खुलवाया है। और आपको बता दूं अगले आम चुनाव तक उसमें देश-विदेश की पुस्तकें आम आदमी को पढ़ने के लिए उपलब्ध हो भी जायेंगी।

हमने गांव में व्यायामशाला बनवायी है। जिसमें गांव के युवा अखाड़े के दांव पेंच सीखेंगे। साथ ही शारीरिक हृष्ट-पुष्ट भी बनेंगे। बहुत जल्दी ही उस व्यायामशाला में वर्जिश करने का सांजों सामान हम उपलब्ध कराने का प्रयास करेंगे।

गांव की आंगनबाड़ी में बच्चों को खाना नहीं मिलने की शिकायतें हमारे पास आयी है। कोई बात नहीं। आंगनबाड़ी खुल रही है ये बड़ी बात है। उसमें बच्चों को खाना भी मिलने लगेगा। ऐसी हम कोशिश करेंगे।

गांव के स्वास्थ्य केन्द्र के ताले भी खुलेंगे और बहुत जल्दी डाक्टर भी वहां आकर गावं वालों का मुफ्त इलाज करेंगे। हमारी सरकार इस दिशा में ठोस कदम उठा रही है। गांव वालों से आग्रह है की जरा चुनाव आने तक सब्र रखे।

नेताजी की बातों की उपलब्धियों से सदन तालियों से गुंजायमान हो उठा।

क्या आप को लिखने का शौक है ?

क्या आप अपनी कोई रचना छपवाना चाहते हैं और कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा है । तो लीजिये ! हम आपके इस सपने को साकार करने में आपके सामने उपस्थित हैं ....

तुरंत हमें अपनी रचना के बारे में निम्नलिखित जानकारी भेजें। हमारा ईमेल है antrashabdshakti@gmail.com

आपकी रचना हस्तलिखित है या टाइप्ड ?

पृष्ठ संख्या, छपाई एक रंगी या चार रंगी, क्या कोई तस्वीर आदि तो नहीं है ?, आपकी पाण्डुलिपि में किसी प्रकार के संशोधन की आवश्यकता है ?, कितनी प्रतियों की आपको आवश्यकता है ?, पुस्तक सजिल्द चाहिये या पेपरबैक ?

आपसे प्राप्त जानकारी के आधार पर हम प्रकाशन लागत खर्च आपको बताएँगे व आपकी स्वीकृति व पूर्ण लागत खर्च मिलने पर पुस्तक प्रकाशित की जा सकेगी।पुस्तक प्रकाशित होने के बाद हम अपनी आवश्यकतानुसार कुछ प्रतियां बिक्री हेतु आपसे ले लेंगे व उनका भुगतान आपको करेंगे। बिक्री हेतु कितनी प्रतियां हम लेंगे इसका किसी भी प्रकार का आश्वासन दे पाना संभव नहीं होगा लेकिन हमारी पूरी कोशिश रहेगी कि पुस्तक की बिक्री में मदद करें।

बस अब जल्द से उपयुक्त जानकारी भेजें।

पुलिस की सेवा से हिन्दी का योद्धा बनें कमलेश कमल

जिस दिन हर हिंदुस्तानी की जुबान पर हिंदी होगी, मैं उस दिन अपने आप को सफल मानूँगा।

-कमलेश कमल

आपका व्यक्तित्व (स्वभाव) कार्य करने का तरीका- मैं परिश्रम की पराकाष्ठा में विश्वास करता हूँ - श्रेष्ठता की ओर ले जाने वाले किसी और रास्ते से मेरा परिचय नहीं है ।

स्वर्गीय राजेंद्र यादव जी ने एक दुनिया समानांतर की भूमिका में लिखा है , प्रतिभा अपने विस्फोट से नहीं ,अपने नैरन्तर्य से अपने आप को प्रमाणित करती है। - मैं इससे सहमत हूँ ।

इसके अतिरिक्त मेरे लिए तीन दिशानिर्देशक सिद्धांत हैं-

1. 'व्यक्ति नहीं विचारधारा'

2.'सतत विकास' और

3. 'कौन सही है -महत्वपूर्ण नहीं है; महत्वपूर्ण है कि क्या सही है।'

आपकी सफलता का राज- मैं अपने आप को सफल नहीं मानता । जिस दिन हर हिंदुस्तानी की जुबान पर हिंदी होगी, उस दिन मैं अपने आपको सफल मानूँगा ।।

मुझे गर्व है कि श्री वेद प्रताप वैदिक और राज कुमार कुंभज जी सरीखे युगपुरुषों का मुझे आशीर्वाद मिल रहा है तथा डॉक्टर अर्पण जैन जैसे समर्पित हिंदीसेवी अहर्निश मेरे साथ हैं।

इसके अतिरिक्त 2 सूत्र वाक्यों में शिद्दत से यकीन करता हूँ -

इस पथ का उद्देश्य नहीं है श्रांत भवन में टिके रहना ।

पर चलना है उस सीमा तक, जिसके आगे राह नहीं ।।

2. लगे रहना ही सफलता का 95% हिस्सा है ।

साहित्य से कब और कैसे जुड़े?

वस्तुतः साहित्य का चस्का गीतांजलि पढ़ कर लगा नहीं तो पहला प्यार गणित ही रहा है ! 12 वीं तक की पढ़ाई जवाहर नवोदय विद्यालय पूर्णियाँ से विज्ञान विषयों के साथ की । आगे , गणित के गुर सुपर 30 के आनंद कुमार से सीखा (तब यह रामानुजन स्कूल ऑफ मैथमेटिक्स था।)

आज भले ही लोग मुझे 'कमल की कलम' नाम से जानते हैं पर कभी पूर्णियाँ, बिहार में 'कमल्स टीचिंग सेंटर' नाम से इंजीनियरिंग के दो संस्थानों का संचालन करता था जिनके 100 से अधिक छात्र आज देश-विदेश में कुशल अभियंता हैं ।

लेकिन एक बार जब साहित्य की लगन लगी तो फिर भाषा और साहित्य का ही होकर रह गया और सच कहूँ तो व्याकरण को समझने-समझाने में मुझे गणित की पृष्ठभूमि से बड़ा लाभ हुआ ।

आपके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि- 15 वर्षों के लेखकीय जीवन में मेरे लिए यह मानसिक परितोष देने वाला क्षण है जब 500 से अधिक साहित्यकर्मी और हजारों सुधी पाठक हिंदी से जुड़े किसी प्रश्न के उत्तर या संशय के शोधन के लिए मुझ पर भरोसा करते हैं ।

'कमल की कलम' की आशातीत सफलता ने जहाँ इसे प्रमाणित किया है ,वहीं मेरी जिम्मेदारी को बढ़ा भी दिया है। आप सबको प्रणाम करता हूँ और विश्वास दिलाता हूँ कि पूरी कोशिश करूँगा कि भाषा और व्याकरण की दुरूहतम चीजों को सरलतम तरीके से आपके समक्ष प्रस्तुत करूँ ।

भविष्य के लिए योजना- 'हस्ताक्षर बदलो अभियान' तो बस शुरुआत है ; बदलना तो उस सोच को है जो हिंदी को अंग्रेजी से कमतर समझती है ।

संस्थान का उद्घोष है- हिंदी के सम्मान में, हर भारतीय मैदान में।-

आपका समाज को कोई संदेश- सभी हिंदी प्रेमियों से मैं हाथ जोड़कर विनती करता हूँ कि माँ हिंदी अपने अतुल्य गौरव को प्राप्त करे, इसके लिए हमें भी अपना योगदान देना चाहिए ।

हमारा किसी भाषा से कोई बैर नहीं है .. खुद मेरा ही एक अंग्रेजी उपन्यास शीघ्र प्रकाश्य है । इसके अलावा संस्कृत भाषा का अल्प ज्ञान भी हिंदी शब्दों की व्युत्पत्ति को समझने-समझाने में सहायक प्रतीत होता है। लेकिन, इतना तय है कि हिंदी हम सबके जीवन की एक महत्वपूर्ण कड़ी है और इसलिए इसके प्रति हमारा दायित्व भी है ।

हर राष्ट्र की एक राष्ट्रभाषा होती है ,भारत की भी होनी चाहिए ।आखिर भारत देश भर नहीं ,एक राष्ट्र भी है ।

हिंदी हमारे हँसने, बोलने , दुःख- सुख, स्वप्न देखने की भाषा है , तो क्यों ना इसे रोजगारोन्मुख बनाया जाए ?

इसका प्रयोग करने में क्यों न हम सबको गर्व की अनुभूति हो ?

जहाँ तक संस्थान के उत्तरदायित्व का प्रश्न है तो हम कोशिश करेंगे कि हिंदी से जुड़ी हर समस्या का समाधान लेकर समाज के सामने आएँ!

संजू

इदरिस खत्री

_परिचय_-इदरीस खत्री इंदौर के अभिनय जगत में 1993 से सतत रंगकर्म में सक्रिय हैं इसलिए किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। इनका परिचय यही है कि,इन्होंने लगभग 130 नाटक और 1000 से ज्यादा शो में काम किया है।

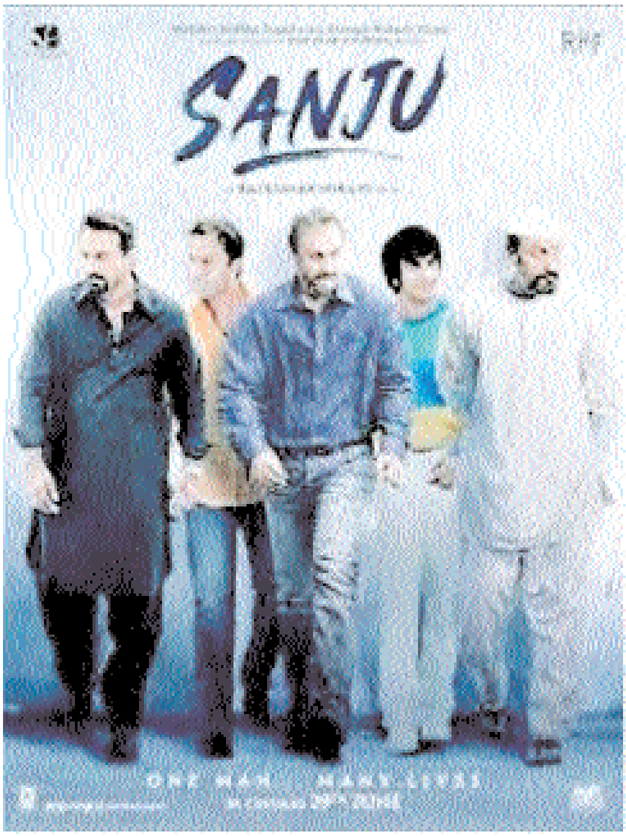

दोस्तो संजय दत्त की जिंदगी

किसी फिल्मी कथा से कम नही रही है

राजकुमार ने बायोपिक बना कर निश्चित ही कोई सट्टा नही खेला

संजय की जिंदगी नामा हर भारतीय जानना चाहता है

नाम, शोहरत, पैसा अगर आता है तो

नशा, सेक्स, पीछे से दबे पांव आना लाजमी है।

जैसे गाड़ी खरीदी तो पेट्रोल लाजमी होगा

वैसे ही नाम, शोहरत, पैसा जब पैरों तले आता है तो

नशा,लडकिया आना लाजमी होगा।

नही तो वह शख्स सन्त ही होगा

जो बच निकले इस से

खैर

संजू पर कुछ तथ्य पता चले है जो कि फिल्म में होंगे या नही इसका इंतजार रहेगा

संजू की जिंदगी मे रोमांस, ड्रग्स, जेल, हथियार, मिलना बिछुड़ना, त्रासदी, योग सन्योग, बम ब्लास्ट, दंगे, फिल्मी उतार चढ़ाव, जेल, कोर्ट कचहरी, पोलिस,सजा,

का ऐसा मिश्रण है जो कि फिल्म के लिए वाजिब मसाला हैं

IMG-20180608-0104

पिता देश मे शासित पार्टी के सांसद होने के साथ सफल कलाकार

माता भी आले दर्जे की स्टार

देश के सबसे बड़े गांधी घराने में आना जाना रसूख

तो पैदा करता ही है

नरगिस जब सुनील दत्त से शादी करना चाहती तो राज कपूर राजी नही थे तो

इंदिरा गांधी ने राजकपूर को फोन पर समझा कर (या कहे धमका कर चुप किया था तो गलत न होगा शायद)

सुनील दत्त ने मदर इंडिया में शूट में लगी आग में से जान जोखिम में डालकर नरगिस को बचाया था तब से नरगिस सुनील पर मोहित हो गई थी,

लेकिन राज कपूर-नरगिस के प्रेम प्रसंग देश भर की फिल्मी किताबो अखबारों की रौनक थे

राज कपूर नरगिस को खोना नही चाहते थे लेकिन नरगिस ने राज की मनमानी इंदिरा गांधी को बताई तो इंदिरा ने दोस्ती के नाते हस्तक्षेप किया और इंदिरा का कद उस वक्त इतना बड़ा था कि राजकपूर बात नही मानते तो शायद देश छोड़ना पड़ जाता

खैर

यह सुनील नरगिस की भूमिका जिनके आंगन में संजू खिला

नरगिस का असली नाम फातिमा रशीद था,

1959 को संजू ने दत्त परिवार में जन्म लिया

सुनील दत्त- नरगिस फातिमा सफल कलाकारों में शुमार थे

संजू के पैदा होने से पहले

नरगिस सुनील ने एक पत्रिका में विज्ञापन दिया कि लड़का-लड़की का नाम तजवीज(सजेस्ट) करो

उसमे एक नाम आया संजय

नरगिस को यह नाम इतना पसन्द आया कि उन्होंने कहा कि लड़का हुवा तो नाम संजय रखेंगे

और संजय की शुरुआत हुई

संजय जब 9 साल के थे तब पहली बार पिता के एशट्रे में पड़ी आधी सिगरेट जला कर पी थी

लेकिन यह हरकते बढ़ती चली गई

सुनील ने अपनी राजनीतिक गुरु इंदिरा गांधी से विचार किया

तो संजू को बोर्डिंग स्कूल भेजने की सलाह दी

फिर उस पर अमल कर लिया गया तो संजू 9 साल बाद वहां से वापस आए

संजू आगे पढ़ना नही चाहते थे लेकिन सुनील ग्रेजुएशन पर अड़े रहे और उनका दाखिला मुम्बई के एलबेन्स्ट कॉलेज में करवाया गया

लेकिन संजू पहले साल में मात्र या 2 दिन ही कालेज गए, यही वह वक्त था जब संजू को हेवी ड्रग्स की आदत पड़ गई थी ,,

कालेज के दिनों में उन्हें एक्टर बनाने का मन मे आया

उन्होंने यह बात सुनील दत्त से सांझा की

सुनील ने कहा आसान नही है,

पहले 2 साल अभिनय की ट्रेनिंग लो फिर बात करेंगे, संजू फौरन तैयार हो गए,

संजय की पहली फिल्म के रिलीज के दौरान नरगिस का कैंसर अंतिम पड़ाव में था फिल्म रिलीज हुई 8 मई को ओर 3 मई को नरगिस दुनिया से रुखसत हो गई

तो संजय ने थियेटर में एक सीट खाली छोड़ी अपनी माँ की याद में,,

टिना मुनीम ओर संजय रॉकी के सेट पर मिले थे और संजय उन्हें अपना दिल दे बैठे, दोनो का 2 साल तक अफेयर भी चला लेकिन ड्रग्स के चलते ओर चिड़चिड़े व्यवहार के कारण यह ब्रेकअप हो गया।

रॉकी के आउटडोर शूट के दौरान एक आदमी टीना को छेड़ रहा था तो संजू ने उस आदमी को खूब मारा था

संजू ने खुद यह बात कुबूल की थी एक साक्षात्कार के दौरान,,

अलग होने के बावजूद संजय टीना के लिए समर्पित थे

टीना ऋषि कपूर की एक फिल्म शूट में उठे गॉसिप पर संजू अपने दोस्त गुलशन ग्रोवर के साथ ऋषि कपूर को उनके घर मारने पहुच गए थे

तो नीतू सिंह ने मामला हैंडल किया और निपटाया था

उसी दौर में संजू बोल्ड अदाकारा किमी काटकर के अफेयर में पड़ गए लेकिन ड्रग्स के चलते यह अफेयर भी रायेगा(खत्म)हो गया

ड्रग्स के चलते एक दिन संजू सो कर उठे तो उनके नोकर उनकी हालत देख कर रोने लगे थे

क्योंकि संजू 2 दिन बाद सो कर उठे थे

लेकिन संजू ने खुद को ड्रग्स से अलग करने का मन बना लिया और अपने पिता से नशा मुक्त केंद्र (रिहेब)जाने की बात की

सुनील ने उन्हें अमेरिका के एक रिहेब(नशा मुक्ति केंद्र) भिजवा दिया जहां वह एक शख्स से मिले जिसने संजू को अमेरिका में खेतीबाड़ी का कामकाज का न्योता दिया और संजू ने मन बना लिया वही रुक कर काम करने का

लेकिन सुनील दत्त ने कहा कि एक बार फिल्मो में फिर कोशिश कर लो

संजू ने अनमने मन से फिर फिल्मो का रुख किया।

संजू अमेरिका के रिहेब सेंटर में अर्नाल्ड स्वाजरेगर की फिल्मे देख कर प्रेरित हो गए थे।

इंडिया आते ही उन्होंने शरीर सोष्ठव (बॉडी बिल्डिंग)पर काम शुरू कर दिया।

इसके बाद संजू ने 2 फिल्मे की लेकिन दोनों पूरी तरह से फ्लॉप साबित हुई जिसमे एक थी जान की बाजी।

अब संजू को एक अदद हिट फिल्म की जरूरत थी और महेश भट्ट से फिल्म नाम मिली

यही से शुरू हुई संजू की दूसरी पारी फिल्मो में...

नाम की कामयाबी ने संजू को फिर से स्थापित कर दिया ओर समीक्षकों ने संजू के अभिनय का लोहा माना।

नाम के साथ संजू को फिल्मे मिलने लगी।

सन 1996 संजू के लिए बढ़िया जा रहा था ड्रग्स को समस्या खत्म हो गई थी।

तभी उनकी मुलाकात ऋचा शर्मा से हुई, दोनो की मुलाकात ओर एक साल में शादी कर ली 1998 में संजू के घर मे बेटी त्रिशा का जन्म हुवा, 6 महीने बाद ही ऋचा को ब्रेन ट्यूमर की बीमारी ने घेर लिया।

ओर ऋचा को अमेरिका, न्यूयार्क के उसी अस्पताल में दाखिल किया जहां नरगिस का इलाज हुवा था।

संजू के लिए वह वक्त बेहद मुशक्कत भरा था।

क्योंकि एक तरफ केरियर दूसरी तरफ अमेरिका में भर्ती पत्नी।

इसी दौर में संजू माधुरी दीक्षित पर मोहित हो गए और दोनो का अफेयर भी रहा।

ऋचा ने कई साक्षात्कार में खुला कहा है कि माधुरी के कारण उनकी शादीशुदा जिंदगी खराब हुई है।

सूत्रों की माने तो संजय के जेल जाने के कारण माधुरी ने खुद को अलग कर लिया और कभी जेल में मिलने भी नही गई।

इसी कारण बाद में दोनो ने साथ मे कभी कोई फिल्म नही की।

ऋचा ओर संजय की तलाक की प्रक्रिया शुरू हुई तो बेटी त्रिशा की कस्टडी संजू ने मांगी लेकिन संजू के परिवार ने कहा वह बच्ची अमरीका में पली है उसे वही बड़ा होने दिया जाए ऋचा के परिवार के साथ ही।

जब ट्रिशना 10 साल की हुई तो संजू को कस्टडी मिली।

लेकिन संजू के परिवार ने बच्ची को अमेरिका में ही रहने की सलाह दी।

लेकिन अपने घर आने जाने की कोई पाबंदी भी नही रखी।

आज भी संजू ट्रिशना से जुड़े हुए है।

फिल्म साजन के लिए आमिर खान को अप्रोच किया गया था लेकिन आमिर किसी नए निर्देशक के साथ काम नहीं करना चाहते थे।

तो यह किरदार संजय को मिला यही वह फिल्म थी जिसके लिए संजू पहली बार फिल्म फेयर के लिये नामित हुवे।

1992 की फिल्म यलगार वेसे तो फ्लॉप फिल्मो में शुमार होती है लेकिन फिल्म के निर्माता, निर्देशक फिरोज खान ने संजय की मुलाकात दुबई में दाऊद से करवाई थी।

ऐसा माना जाता है।

ओर यही से शुरू हुआ था अंडरवर्ल्ड कनेक्शन।

फिल्म सनम के निर्माता समीर हिंगोरा ओर हनीफ जिनके साथ संजय फिल्म कर रहे थे उन्होंने संजय को कुछ हेंड ग्रेनेट ओर 3 बंदूके उपलब्ध करवाई थी जैसा मुम्बई पोलिस ने बताया।

संजय ने एक बंदूक रख ली और पोलिस को बयान दिया कि खुद

की ओर परिवार की सुरक्षा के लिए बंदूक रख ली थी

लेकिन न्यायालय ने नही माना और तर्क दिया कि आपके पास 3 लायसेंस हथियार जब है तो अवैध हथियार क्यो

मुम्बई बम धमाके के बाद समीर ओर हनीफ गिरफ्तार हुवे ओर पता चला अंडरवर्ल्ड अबू सलेम के लिए काम करते है दोनो, इसी कनेक्शन में संजय भी गिरफ्तार हुवे

संजू

दोस्तो संजय दत्त की जिंदगी

किसी फिल्मी कथा से कम नही रही है

राजकुमार ने बायोपिक बना कर निश्चित ही कोई सट्टा नही खेला

संजय की जिंदगी नामा हर भारतीय जानना चाहता है

खैर इसी में रख कोशिश हमारी भी ,,,

संजू पर कुछ तथ्य पता चले है जो कि फिल्म में होंगे या नही इसका इंतजार रहेगा

पिता देश मे शासित पार्टी के सांसद होने के साथ सफल कलाकार

माता भी आले दर्जे की स्टार

देश के सबसे बड़े गांधी घराने में आना जाना रसूख तो पैदा करता ही है

नरगिस जब सुनील दत्त से शादी करना चाहती तो राज कपूर राजी नही थे तो

इंदिरा गांधी ने राजकपूर को फोन पर समझा कर (धमका कर चुप किया था)

सुनील दत्त ने मदर इंडिया में शूट में लगी आग में से जान जोखिम में डालकर नरगिस को बचाया था तब से नरगिस सुनील पर मोहित हो गई थी

लेकिन राज कपूर-नरगिस के प्रेम प्रसंग देश भर की फिल्मी किताबो अखबारों की रोनक थे।

राज कपूर नरगिस को खोना नही चाहते थे लेकिन नरगिस ने राज की मनमानी इंदिरा गांधी को बताई तो इंदिरा ने दोस्ती के नाते हस्तक्षेप किया और इंदिरा का कद उस वक्त इतना बड़ा था कि राजकपूर बात नही मानते तो शायद देश छोड़ना पड़ जाता

खैर

यह सुनील नरगिस की भूमिका जिनके आंगन में संजू खिला

नरगिस का असली नाम फातिमा रशीद था

1959 को संजू ने दत्त परिवार में जन्म लिया

सुनील दत्त- नरगिस फातिमा सफल कलाकारों में शुमार थे

संजू के पैदा होने से पहले नरगिस सुनील ने एक पत्रिका में विज्ञापन दिया कि लड़का-लड़की का नाम तजवीज(सजेस्ट) करो

उसमे एक नाम आया संजय।

नरगिस को यह नाम इतना पसन्द आया कि उन्होंने कहा कि लड़का हुवा तो नाम संजय रखेंगे।

ओर संजय की शुरूआत हुई।

संजय जब 9 साल के थे तब पहली बार पिता के एशट्रे में पड़ी आधी सिगरेट जला कर पी थी।

लेकिन यह हरकते बढ़ती चली गई

सुनील ने अपनी राजनीतिक गुरु इंदिरा गांधी से विचार किया

तो संजू को बोर्डिंग स्कूल भेजने की सलाह दी

फिर उस पर अमल कर लिया गया तो संजू 9 साल बाद वहां से वापस आए

संजू आगे पढ़ना नही चाहते थे लेकिन सुनील ग्रेजुएशन पर अड़े रहे और उनका दाखिला मुम्बई के एलबेन्स्ट कॉलेज में करवाया गया

लेकिन संजू पहले साल में मात्र 1 या 2 दिन ही कालेज गए, यही वह वक्त था जब संजू को हेवी ड्रग्स की आदत पड़ गई थी ,,

कालेज के दिनों में उन्हें एक्टर बनाने का मन मे आया

उन्होंने यह बात सुनील दत्त से सांझा की

सुनील ने कहा आसान नही है,

पहले 2 साल अभिनय की ट्रेनिंग लो फिर बात करेंगे, संजू फौरन तैयार हो गए,

संजय की पहली फिल्म के रिलीज के दौरान नरगिस का कैंसर अंतिम पड़ाव में था फिल्म रिलीज हुई 8 मई को ओर 3 मई को नरगिस दुनिया से रुखसत हो गई

तो संजय ने थियेटर में एक सीट खाली छोड़ी अपनी माँ की याद में

टिना मुनीम ओर संजय रॉकी के सेट पर मिले थे और संजय उन्हें अपना दिल दे बैठे, दोनो का 2 साल तक अफेयर भी चला लेकिन ड्रग्स के चलते ओर चिड़चिड़े व्यवहार के कारण यह ब्रेकअप हो गया।

रॉकी के आउटडोर शूट के दौरान एक आदमी टीना को छेड रहा था तो संजू ने उस आदमी को खूब मारा था

संजू ने खुद यह बात कुबूल की थी एक साक्षात्कार के दौरान,,

अलग होने के बावजूद संजय टीना के लिए समर्पित थे

टीना ऋषि कपूर की एक फिल्म शूट में उठे गॉसिप पर संजू अपने दोस्त गुलशन ग्रोवर के साथ ऋषि कपूर को उनके घर मारने पहुच गए थे

तो नीतू सिंह ने मामला हैंडल किया और निपटाया था

उसी दौर में संजू बोल्ड अदाकारा किमी काटकर के अफेयर में पड़ गए लेकिन ड्रग्स के चलते यह अफेयर भी रायेगा(खत्म)हो गया

ड्रग्स के चलते एक दिन संजू सो कर उठे तो उनके नोकर उनकी हालत देख कर रोने लगे थे

क्योंकि संजू 2 दिन बाद सो कर उठे थे

लेकिन संजू ने खुद को ड्रग्स से अलग करने का मन बना लिया और अपने पिता से नशा मुक्त केंद्र जाने की बात की

सुनील ने उन्हें अमेरिका के एक रिहेब(नशा मुक्ति केंद्र) भिजवा दिया जहां वह एक शख्स से मिले जिसने संजू को अमेरिका में खेतीबाड़ी का कामकाज का न्योता दिया और संजू ने मन बना लिया वही रूक कर काम करने का

लेकिन सुनील दत्त ने कहा कि एक बार फिल्मो में कोशिश कर लो

संजू ने अनमने मन से फिर फिल्मो का रूख किया

संजू अमेरिका के रिहैब सेंटर में अर्नाल्ड स्वाजरेगर की फिल्मे देख कर प्रेरित हो गए थे

इंडिया आते ही उन्होंने शरीर सोष्ठव (बॉडी बिल्डिंग)पर काम शुरू कर दिया

इसके बाद संजू ने 2 फिल्मे की लेकिन दोनों पूरी तरह से फ्लॉप साबित हुई जिसमे एक थी जान की बाजी,

अब संजू को एक अदद हिट फिल्म की जरूरत थी और महेश भट्ट से फिल्म नाम मिली

यही से शुरू हुई संजू की दूसरी पारी फिल्मो में,,,

नाम की कामयाबी ने संजू को फिर से स्थापित कर दिया ओर समीक्षकों ने संजू के अभिनय का लोहा माना,

नाम के साथ संजू को फिल्मे मिलने लगी

सन 1996 संजू के लिए बढ़िया जा रहा था ड्रग्स को समस्या खत्म हो गई थी

तभी उनकी मुलाकात ऋचा शर्मा से हुई, दोनो की मुलाकात ओर एक साल में शादी कर ली 1998 में संजू के घर मे बेटी त्रिशा का जन्म हुवा, 6 महीने बाद ही त्रिशा को ब्रेन ट्यूमर की बीमारी ने घेर लिया

ओर ऋचा को अमेरिका, न्यूयार्क के उसी अस्पताल में दाखिल किया जहां नरगिस का इलाज हुवा था

संजू के लिए वह वक्त बेहद मुशकत भरा था

क्योंकि एक तरफ केरियर दूसरी तरफ अमेरिका में भर्ती पत्नी

इसी दौर में संजू माधुरी दीक्षित पर मोहित हो गए और दोनो का अफेयर भी रहा

ऋचा ने कई साक्षात्कार में खुला कहा है कि माधुरी के कारण उनकी शादीशुदा जिंदगी खराब हुई है

सूत्रों की माने तो संजय के जेल जाने के कारण माधुरी ने खुद को अलग कर लिया और कभी जेल में मिलने भी नही गई

इसी कारण दोनो ने फाई कभी कोई फिल्म नही की

ऋचा ओर संजय की तलाक की प्रक्रिया शुरू हुई तो बेटी त्रिशा की कस्टडी संजू ने मांगी लेकिन संजू के परिवार ने कहा वह बच्ची अमरीका में पली है उसे वही बड़ा होने दिया जाए ऋचा के परिवाई के साथ ही

जब ट्रिशना 10 साल की हुई तो संजू को कस्टडी मिली

लेकिन संजू के परिवार ने बच्ची को अमेरिका में ही रहने की सलाह दी

लेकिन अपने घर आने जाने की कोई पाबंदी भी नही रखी

आज भी संजू ट्रिशना से जुड़े हुए है

फिल्म साजन के लिए आमिर खान को अप्रोच किया गया था लेकिन आमिर किसी नए निर्देशक के साथ काम नहीं करना चाहते थे

तो यह किरदार संजय को मिला यही वह फिल्म थी जिसके लिए संजू पहली बार फिल्म फेयर के लिये नामित हुवे।

1992 की फिल्म यलगार वेसे तो फ्लॉप फिल्मो में शुमार होती है

न्यूज पोर्टल बनवाएं

e NEWS PORTALS

कम खर्च में अधिक आय पायें

वेब पोर्टल की प्राथमिक लागत मूल्य डोमेन , होस्टिंग और डेवलपमेंट को मिला लिया जाए तो 6000 रुपयों से 25 हजार रुपयों के बीच आती है, सालाना खर्च 3000 रुपये से 6000 रुपयों तक आता है। इसी में गूगल द्वारा प्राप्त एड सैंस आदि की कमाई जोड़ी जाए तो इस खर्च की तुलना में कही अधिक है। इसी लिए वेब पत्रकारिता को भारत में पत्रकारिता के स्वर्णिम भविष्य के रूप में भी देखा जा रहा है। आय के साथ साथ प्रचलन और तत्परता जैसे वांछनीय गुणों के रहते वेब पत्रकारिता भविष्य के गर्भ में उन्नति का पुष्ट दस्तावेज़ साबित होगी।

उपरोक्त तरीकों के अलावा अन्य तरीकों के बारे में विस्तृत से जानने के लिए

www.enewsportals.com

के कांटेक्ट में जा कर फार्म भरिए। उक्त सन्दर्भ में कोई भी प्रश्न हो तो आप इसी वेबसाइट के कांटेक्ट मेन्यू में जा कर प्रश्न पूछ सकते है। हमारी टीम आपके सवालों का जल्दी ही जवाब देगी।

यदि आप न्यूज पोर्टल बनवाना चाहते है तो आज ही संपर्क करें-

eNewsPortals.com

संपर्क सूत्र-+917067455455 मेल- info@enewsportals.com, enewsportals.com@gmail.com-

लेकिन फिल्म के निर्माता, निर्देशक फिरोज खान ने संजय की मुलाकात दुबई में दाऊद से करवाई थी

ऐसा माना जाता है

ओर यही से शुरू हुआ था अंडरवर्ल्ड कनेक्शन,

फिल्म सनम के निर्माता समीर हिंगोरा ओर हनीफ जिनके साथ संजय फिल्म कर रहे थे उन्होंने संजय को कुछ हेंड ग्रेनेट ओर 3बंदूके उपलब्ध करवाई थी जैसा मुम्बई पोलिस ने बताया

संजय ने एक बंदूक रख ली और पोलिस को बयान दिया कि खुद की ओर परिवार की सुरक्षा के लिए बंदूक रख ली थी

लेकिन न्यायालय ने नही माना और तर्क दिया कि आपके पास 3 लायसेंस हथियार जब है तो अवैध हथियार क्यो

मुम्बई बम धमाके के बाद समीर ओर हनीफ गिरफ्तार हुवे ओर पता चला अंडरवर्ल्ड अबू सलेम के लिए काम करते है दोनो, इसी कनेक्शन में संजय भी गिरफ्तार हुवे

मुन्ना भाई के लिए राजकुमार हिरानी ओर विदू विनोद की पहली पसंद शाहरुख खान थे लेकिन शाहरुख ने मना कर दिया तो यह किरदार संजय की झोली में आया फिर शुरू हुई संजय की तीसरी फिल्मी पारी जिसमे संजय को अपार सफलता दी साथ ही मुन्ना भाई का खिताब भी संजय को मिला

इसी फिल्म में संजय सुनील दत्त ने पर्दा सांझा किया

इससे पहले रॉकी, क्षत्रीय फिल्मो में भी दोनो ने काम किया लेकिन स्क्रीन शेयर पहली बार इसी फिल्म में की

इस फिल्म के अंत मे

सुनील संजय से बोलते है

तेरी मा को तो बहुत झप्पी दी है तूने आज जादू की झप्पी मुझे भी दे दे

यह सीन इतना ज्यादा भावनात्मक था कि दोनो बाप बेटे गले लगते है और सीन कट के बाद भी दोनो बहुत देर तक अलग नही होते।

फिल्म ब्लफ मास्टर में जो किरदार अभिषेक बच्चन ने किया वह किरदार संजय को ऑफर हुवा था और रितेश देशमुख वाला किरदार अभिषेक को लेकिन संजय की डेट्स प्रॉब्लम के चलते बात नही जमी, तो फिल्म अभिषेक की झोली में चली गई

जब रिया ओर संजय का रिश्ता असहज था तभी उनकी जिंदगी मे मान्यता आई।

जो कि एक संघर्षरत अभिनेत्री थी ओर संजय ने ही उन्हें फिल्म गंगाजल में एक आइटम सॉन्ग के लिये रीकमेन्ट किया था।

उन्ही दिनों

मान्यता ने एक फिल्म की थी

'लवर्स लाइक अस' जो बेहद बोल्ड सीन से भरपूर थी, बाद में संजय ने इस फिल्म के तमाम अधिकार खरीद लिए ओर मार्केट से सीडी, डीवीडी तक उठवा ली थी।

फिर 2008 में मान्यता से विवाह कर लिया।

2009 में संजय ने समाजवादी पार्टी के साथ राजनीति में प्रवेश किया

लेकिन उच्चतम न्यायालय ने मामला विचाराधीन होने के कारण उनका चुनाव नामांकन रद्द कर दिया जो कि नियमानुसार था।

फिल्म अग्निपथ 2012, के किरदार कांचा चीना के लिए नाना पाटेकर पहली पसंद थे, नाना के मना करने पर फिर संजू ने नकारात्मक भूमिका मिली, भूमिका निभाई ओर एक नया रूप प्रस्तुत किया।

इस किरदार के लिए संजू को खूब तारीफे मिली।

संजय रॉक म्यूजिक बहुत पसंद करते है उनके पसंदीदा बेंड है गन्स, रोसेस,पिंक फ्लोईड

जब 2012 में गन्स × रोसेस का कन्सर्ट मुम्बई इंडिया में हुवा था तो संजू ने अपनी निजी वैनिटी वैन मोहिया करवाई थी।

2013 में जब वह वक्त आया कि उच्चतम न्यायालय ने संजू को 5 साल की सजा पर मुहर लगाई जिसमे संजू 18 महीने की सजा काट चुके थे तो बाकी सजा के लिए संजू जेल गए

जेल से पैरोल पर संजू बार बार बाहर आ रहे थे पैरोल कुल मिलाकर 6 महीने की थी, जेल में संजू पेपर बैग के अलावा जेल के कैदियों के लिए ऋछ का काम भी करते थे

पेपर बैग से हुई कूल कमाई 30 हजार रुपये संजू ने जेल की कैंटीन मे खर्च कर दिये थे कूल 450 रुपये बचे थे जो कि उन्होने अपनी पत्नी मान्यता को दे दिए थे

संजू के अच्छे चाल चलन को देखते हुवे 60 दिन पहले ही रिहा कर दिया गया,

जेल से निकलते वक्त संजू ने जेल में लगे राष्ट्रध्वज को सलामी दी और धोक देकर

सम्मान जताया, ओर खुद के बफलाव बयान किये

इसके बाद संजू की पहली फिल्म आई

भूमि

संजू चाहते थे यह फिल्म उनकी बेटी त्रिशला के जन्म दिन पर प्रदर्शित हो फिल्म फिल्म की प्रदर्शन तारीख को 12 अगस्त किया गया जो कि संजय की बेटी की जन्म दिन भी है

फिल्म संजू के लिए सुनील दत्त का किरदार संजय खुद करना चाहते थे लेकिन फिर आमिर को ऑफर किया लेकिन अमीर दंगल के बाद बूढ़ा किरदार नहीं करना चाहते थे, तो परेश रावल को अंतिम किया गया

यह कुछ तथ्य थे हमारे पास संजय दत्त से जुड़े हुवे

अब अगले महीने देखेगे

इसमे से कितने तथ्य संजू में देखने को मिलेंगे

श्रेष्ठ मजदूर

मोनिका अग्रवाल

मैंने कभी नही सुना कि,अमेरिका में बोर्ड परीक्षा के परिणाम आ रहे हैं,या यूके में लड़कियों ने बाजी मार ली है या आस्ट्रेलिया में 99.5 प्रतिशत आए हैं किसी छात्र के।

मई-जून के महीने में हिन्दुस्तान में मानसून के साथ-साथ हर घर में दस्तक देती है एक उत्तेजना,एक जिज्ञासा,एक भय,एक मानसिक विकृतिज्वर माँ-बाप,हर बोर्ड की परीक्षा में बैठा बच्चा हर बीतते हुए पल को एक तनाव, एक असुरक्षा में काट रहा होता है कि,क्या होगा ?

मानसून दुनिया में सिर्फ भारतीय उपमहाद्वीप की निशानी है..पर असुरक्षा और मानसिक अवसाद का प्राविण्य सूची वाला ये नया मानसून देश के हर हिस्से में तनाव और अवसाद की बारिश करने में काफी असरदार हो चुका है।

माँ-बाप फसल की तरह बच्चों को पाल रहे हैं कि,कब फसल पके,कब उनकी अधूरी रह चुकी अकांक्षाएं पूरी होंगी,कब वे फसल काटेंगे..।!

वे या उनके सपने बच्चों की जिंदगी को सिखा नहीं रहेज्हमारे पुंजीवादी निवेशकों को क्या उत्पाद चाहिए, इस हिसाब से शिक्षा और उसके उद्देश्य तय हो रहे है। एक परिवार का सुख-चैन,त्याग..दिन-रात खल के संघर्षों और परिश्रम में गुजर जाता है। उस परिवार का अपना अस्तित्व और सुख-चैन तथा मानवीय भावनाएं इसलिए भेंट चढ़ जाती है,क्योंकि टीसीएस को एक बेहतरीन सॉफ्टवेयर डेवलपर चाहिए..या मेकेन्से को श्रेष्ठ दिमाग चाहिए या रिलायन्स को बेहतरीन गेम डिजाइनर चाहिए।

हमारी शिक्षा व्यवस्था व उसके आदर्श कहाँ रह गए ?

हमारे स्कूल देश के श्रेष्ठ नागरिक नहीं,देश के श्रेष्ठ मजदूर बनाने में दिन-रात एक करके जुटे हुए हैं। और साथ में माँ-बाप भी जो,जो बच्चों को बच्चा नहीं,एक यांत्रिक उपकरण बनाने को प्रतिज्ञाबद्ध हो जाते हैं।

बच्चों को जीने दो,दुनिया खत्म नहीं होने जा रही है।

उन्हें श्रेष्ठ कर्मचारी नहीं,श्रेष्ठ नागरिक बनाने में यकीन रखें तो बेहतर है,पर इस भेड़ चाल में सब कूद पड़े हैं।

बचपन की भी खुद से कुछ अपेक्षाऐं होती हैं। अपने निस्वार्थ स्वप्न होते हैं। बच्चों के लिए वो जन्नत से कम नहीं,इसलिए कृपया बच्चों की दुनिया मत उजाड़ो कृपया,उन्हें मनोरोगी मत बनाओ। उनका बचपन मत छीनो।

क्या ..ये एक मानसिक रुग्णता नहीं? उच्चता की खबरें,उन्हें मिठाई खिलाते माँ-बाप की तस्वीरें..क्या ये एक आम सामान्य स्तर के बच्चों को मानसिक हीनता की अनुभूति नहीं देंगे? अरे उच्च क्रम पर तो दो-चार होंगे, बाकी देश का बोझ तो ९९ प्रतिशत इन्हीं फूल से कोमल सामान्य बच्चों ने ही उठाना है।

भले ही हम टाटा,रिलायंस एल एण्ड टी,मारुति ,मेकेन्से आदि के लिए मजदूर तैयार कर रहे हों.पर जो बचपन की रिक्तता हमने आरोपित कर दी है,वो उन्हे जीवनभर खलेगी और मानवीय विकृतियों के रुप में फलेगी।आपको बढ़िया मुख्य कार्यपालन अधिकारी तो मिल ही जाएंगे,जिनकी प्राथमिकता उनकी कंपनी होगी ,देश नहीं। एक बार सोचकर अवश्य देखिए।

तेजी से काम करता है आयुर्वेद

हमेशा से ही मेरी कोशिश रही है कि, आयुर्वेद के मूलभूत को जन-जन तक पहुँचाऊँ और आयुर्वेद के इस प्रभाव को जनमानस से दूर करुं,जिस कारण वह आयुर्वेद को 10-20 जड़ी-बूटी वाली चिकित्सा पद्धति समझते हैं। इसी कारण से मैं कभी ऐसे अनर्गल योग नहीं लिखता,जिनमें व्यक्ति को स्वयं बनाकर प्रयोग करने की हिदायत दी जाती हो और नीचे लिखा जाता हो कि 'न बना पाएं तो हमसे मंगवा लें',सही मायने में ऐसे लेखों का क्या आशय होता है,बहुत ही कम लोग समझ पाते हैं। वे सभी ध्यान से पढ़ लें इस लेख को,जो कहते हैं कि,आयुर्वेद धीरे-धीरे काम करता है। जहाँ एलोपैथी में खाने की दवाएं व इंजेक्शन नाकारगर होने के बाद प्लेटलेट ट्रांसफ्यूजन की तैयारी थी,वहीं आयुर्वेद की मात्र पहली 3 खुराक ने कमाल दिखाना शुरु कर दिया।

यह चिकित्सा अनुभव उस रोगी पर आधारित है जिसकी रक्त चक्रिका (प्लेटलेट)संख्या बेतहाशा घट जाने के बाद प्लेटलेट ट्रांसफ्यूजन (प्लेटलेट चढ़ाना)की व्यवस्था समय पर न होने के कारण,इनका रिश्तेदार (आयुर्वेद समर्थक) रोगी को मेरे पास लेकर आया।

यह रोगी अचानक बेहोश हो गया था। बुखारी मौसम का वहम व लक्षण होने के कारण जब इनका एमपी टेस्ट कराया तो वह पॉजिटिव पाया गया। शरीर में प्लेटलेट काउंट मात्र चालीस हजार पाई (सामान्य हालत में कम-से-कम डेढ़-दो लाख होने चाहिए)गई।

मैंने अपने अनुभवानुसार एक दिन में तीन खुराक के हिसाब से उसे चिकित्सा व्यवस्था दी। पहली तीन खुराक पूरी होने पर पुनः परीक्षण कराने पर प्लेटलेट 60 हजार पर आ गई तथा तीन दिन की नौ खुराक पूरी होने पर प्लेटलेट डेढ़ लाख पर आ गई। इस प्रकार शरीर में चौथे ही दिन से पूर्ववत्त बल आ गया व दलिया, पतली खिचड़ी,चीकू,मुनक्का आदि के आहार पर इसे रखा गया। यहाँ ध्यान रखने योग्य दो बातें हैं-पहली यह कि जहाँ ऐसे मामलों में एलोपैथी चिकित्सा फ्रूटी आदि पिलाकर प्लेटलेट बढ़ाने की पैरवी करती आई है,वहीं दूसरी ओर ऐसे ज्वर में आयुर्वेदिक चिकित्सा में फलों का रस हानिकारक मानकर ऐसे रोगी को फलों के रस से परहेज कराता रहा।

दूसरा सबसे मुख्य बिंदु कि ऐसे रोगों में जहाँ पाँच सितारा होटल नुमा अस्पतालों की चकाचौंध से आकर्षित होकर जब रोगी का तीमारदार रोज 10-20 हजार खर्चने को तैयार हो जाता है,वहीं रोज कुछ सौ-दो सौ रुपए का खर्च आने पर आयुर्वेदिक चिकित्सक को 'आयुर्वेदिक दवाएं भी इतनी महँगी होती हैं क्या' सुनने को मिलता है।

डॉ. निशान्त गुप्ता आयुष

हस्ताक्षर बदलो अभियान

प्रतिज्ञा पत्र

मैं,..प्रतिज्ञा लेता/लेती हूँ कि आज से राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए,राष्ट्र की एकता और अखंडता के हित में स्वयं को समर्पित करते हुए भारतीय संस्कृति और सभ्यता के सम्मान और सुरक्षा हेतु जीवनपर्यन्त तत्पर रहूंगा/रहूंगी । भारत माता और मातृभाषा हिन्दी के सम्मान को सर्वोपरि रखकर अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करुँगा/करुँगी।

मैं हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाने हेतु आरम्भ किये गए महायज्ञ 'हस्ताक्षर बदलो अभियान' में सतत सहभागी रहूंगा/रहूंगी।

भवदीय,

हस्ताक्षर- ....

भवदीय,

हस्ताक्षर- ....

नाम-..

पिता का नाम-..

पता-..

....

संपर्क-..

व्हाट्सअप-..

अणुडाक (ईमेल)-..

एस-207, नवीन परिसर, इंदौर प्रेस क्लब, एम. जी. रोड इंदौर

क्या आप बनना चाहते हैं भाषा सारथी

क्योंकि

- ▲ आज हिन्दी को विश्वस्तर पर पहचान दिलाने के लिए हमें जुटकर हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना होगा,
- ▲ हस्ताक्षर बदलो अभियान को अपने क्षेत्र में संचालित एवं प्रचारित करना होगा,
- ▲ हिन्दी लेखन करने वाले साथियों को आय दिलवाने में मदद करनी होगी,
- ▲ हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए उसे बाजार मूलक भाषा बनानी होगी,
- ▲ हिन्दी साहित्य को आमजन तक पहुँचाना होगा,
- ▲ हिन्दी भाषीयों की मदद करना होगी,
- ▲ हिन्दी के प्रचार हेतु अपने क्षेत्र में हिन्दी प्रेमियों का समुच्चय बनाकर प्रतियोगीताएं, कार्यक्रम आदि का संचालन करना होग
- ▲ हिन्दी ग्राम सभा का आयोजन करना।
- ▲ हिन्दी रथ का अपने क्षेत्र में संयोजन करना,कार्ययोजना बनाकर लोगो को हस्ताक्षर बदलनें के लिए प्रेरित करना ।

और भी बहुत सी गतिविधियाँ जो हिन्दी के लिए करनी होगी,

यदि आप जुड़कर हिन्दी को आगे लाना चाहते है तो आज ही जुड़िए,

मातृभाषा उन्नयन संस्थान *हिन्दी ग्राम* व *अंतरा-शब्दशक्ति* से

सम्पर्क करें

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'
राष्ट्रीय अध्यक्ष
मातृभाषा उन्नयन संस्थान
संस्थापक- *हिन्दी ग्राम*
सह संस्थापक- *मातृभाषा.कॉम*
प्रधान सम्पादक- *खबर हलचल न्यूज*

डॉ.प्रीति समकित सुराना
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
मातृभाषा उन्नयन संस्थान
संस्थापक- *अन्तरा शब्दशक्ति*
सह संस्थापक- *मातृभाषा.कॉम*
निदेशक- *खबर हलचल न्यूज*

जानिए, कब नकद संव्यवहार (लेन-देन) को
ना
कहना है!
न करें...
एक दिन में किसी एक व्यक्ति से अथवा एक आयोजन या अवसर से संबंधित एक या अधिक संव्यवहार के लिए कुल ₹2,00,000 या इससे अधिक की नकदी स्वीकार न करें
अचल संपत्ति के हस्तान्तरण के लिए ₹20,000 या इससे अधिक नकद न प्राप्त करें / न चुकाएं
कारोबार/व्यवसाय के व्यय से संबंधित ₹10,000 से अधिक का नकद भुगतान न करें
किसी पंजीकृत ट्रस्ट/राजनीतिक दल को ₹2,000 से अधिक का नकद दान/चन्दा न दें
इसका उल्लंघन करने पर कर/शास्ति लगाई जा सकती है
काले धन के बारे में कोई भी सूचना जिसमें अघोषित आय/संपत्ति (भारत और विदेश दोनों में) और बेनामी संव्यवहार के बारे में जानकारी शामिल है, क्षेत्राधिकारिक महानिदेशक/प्रधान आयकर निदेशक (अन्वेषण) को दी जा सकती है।
गो कैशलेस. गो क्लीन.
www.incometaxindia.gov.in
www.cleanmoney.gov.in
पर जाएं
@IncomeTaxIndia
"आयकर सेतु"
आयकर विभाग
केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

धन्यवाद
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन की उपलब्धि
अन्तरा शब्दशक्ति
४६ पुस्तकों का एक साथ विमोचन
सृजन-समीक्षा
आगोश
www.antrashabdshakti.com | antrashabdshakti@gmail.com
(+91) 94247 65259
(+91) 90094 65259